दिन बुनता सूरज

माधुरी शास्त्री

राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक -- साहित्यागार चौडा रास्ता जयपुर-3

सस्करण -- 1998

कृति -- दिन बुनता सूरज

कृतिकार -- माधुरी शास्त्री

मूल्य -- एक सौ पच्चीस रूपये मात्र

आवरण -- अनिल कुमार

मुद्रक -- प्रिन्ट ओ लैण्ड

भूमिका

मनुष्य के भीतर जो अनुभवा की विपुल सपदा धीरे धीरे अपना एक आकार-आधार बना लेती ह वही जब टुकड़ा-टुकड़ो म बाहर झरने लगती ह तो शब्दा के साथ बहुआयामी रूप लेकर कथा बनने लगती है। छोटी-बड़ी अनेक कथाए-

कहानिया जीवन के भीतरी-बाहरी दृष्या का प्रतिबिंब ही होती ह जिनम सृजनकता की वचारिक स्वतत्रता भी होती ह। अपन समकालीन वक्त की चुनौतिया की कसाटी पर कसन के बाद ही लेखक अपनी खास शैली स इनका रूप-आकार उकरता ह। युग क प्रत्येक कोने को क्षेत्र को, स्थिति परिस्थिति को देखने के लिये उसे चौकन्नी दृष्टि रखनी होती ह जहा ईमानदारी आर सस्कारा की सीमाआ से जुड़े रहना पड़ता ह।

जीवन के रास्ता म युग क अनुसार मोड़, पगडण्डिया रास्ते बढते बदलत रहते ह। पचास -साठ साल की बात तो बहुत दूर ह लेकिन बीस तीस वर्ष पहले की कहानी की बुनावट म आर आज की कहानी की रचना मे बहुत ज्यादा फर्क नजर आता है क्योकि युग का बदलाव बनते बिगड़ते जीवन मूल्य आर बढ़ती चिंताए तथा अन्तद्वन्द्वा से घिरा चिंतन कहानी के कलेवर को एक नया माड़ दे चुका है — मानव शक्ति राष्ट्र भक्ति चारित्रिक-महिमा व्यवहारशीलता विकासशील समाज की सरचना राष्ट्रीय ऊर्जा कर्त्तव्यपरायणता नतिकता आर नारी-सम्मान की सार्थकता जहा विलुप्त हो गई हो- रह गई हो कामनाए, लालसाय चारित्रिक-पतन युवा कदमा का भटकाव लोभ लिप्सा मे उलझी राष्ट्रीय चेतना आर्थिक होड़ की दाड़, सीमाए तोड़कर रिश्तो के बीच फला स्वार्थ छल-कपट और असत्य-अन्याय का चारो ओर दार.... तब लेखक के लिये सृजन करना तेजधार वाली तेग पर चलने के समान है। वाद - विवादा के घेरो से निकलकर अपनी लेखनी की अस्मिता की रक्षा भी करनी होती ह ओर कथ्य शली की सस्कृति का भी पूरा निर्वाह करना होता ह आर अपने कथानक से जुड़े सभी प्रसगो की सार्थक जीवतता को भी बचाये रखना होता ह। समस्त

अमान्य, विपरीत परिस्थितिया दृष्टिगत होने पर भी शील शिष्टाचार, प्यार स्नेह सहयोग करुणा-ममता नारी अस्मिता का सम्मान और घर बाहर फैले रिश्तो के बीच सौहार्द-बन्धुत्व की भावना को भी अपने कथानक चरित्र म समाधान की बारीक व्याख्या से पिरोना पड़ता है। तभी रचनाकार और रचना का सार्थक महत्व होता है --

माधुरी शास्त्री का तीसरा कहानी सग्रह 'दिन बुनता सूरज' ऐसी ही कसौटियो पर कसे गये कथानको के साथ सामने आया है। आज के वक्त के समस्त मीठे कसैले सदर्भो का इनकी कहानियो मे किसी न किसी रूप आकार के साथ पाया जा सकता है।

अधिकतर कहानिया घरेलू त्रासदियो के बीच से रास्ता निकालती हुई चलती है। कुछ कहानियो म बनते बिगड़ते रिश्तो के सबधो के दृश्य बिम्ब है। कुछ म नारी-शोषण है मन की अव्यक्त पीड़ाए है -- आकण्ठ वेदनाए है उस दर्द की जो बचपन से लेकर उम्र के अतिम द्वार तक प्रिय द्वारा पुरुष अह द्वारा सतान द्वारा उपेक्षित होकर उसे मिलता रहता है। कुछ म नौकरो के सताप है। असुरक्षा के भय है। आर्थिक दबाव है। शारीरिक मानसिक रुग्णताए है-- पारिवारिक विघटन है। ईर्ष्याए है। कु-सस्कारो का दद है। स्वार्थी व्यवहारो की दारुण तपिश है। मानवता का पतन है और दैनिक जीवन म घटित होने वाली छोटी-बड़ी घटनाओ के ब्यौरे है--

गरीबी-अमीरी की तुलना मे झूलती हुई और बाल-मनोविज्ञान को प्रस्तुत करती हुई कहानी है 'रजाई चोर' जहा समृद्ध नजर और अधिक वैभव प्राप्त करने के लिये आतुर रहती है वहा गरीब की दृष्टि अपने आसपास लिपटे अभावो को भरने के लिये व्याकुल रहती है, चाहे वह बचपन हो या यौवनावस्था। इसम परिस्थितियो के अनुकूल वातावरण को ठीक-ठीक व्यक्त किया गया है--

मानवीय मनोविज्ञान को साकार करती हुई कहानी है 'भरी धूप मे' -- एक पुरुष की जिज्ञासा के व्यक्त-अव्यक्त द्वन्द्व है। ऊपर छत से पडोस वाले बगले की ओर जब भी वह देखता है तब एक बेच पर किसी लडकी को चुपचाप बैठे हुए देखता है जो उसे अच्छा लगता है-- लेकिन इसमे अन्तर्द्वन्द्वो का पनापन वह उधेडबुन वह व्यग्रता वह कौतूहल और वह दिल का हाहाकारी कशिश नहीं है जो होनी चाहिये। खाली देखना-बस देखना वह कौन है? एक जैसी अवस्था म

ने क्या गठी रहती ह ? क्या नाम ह ? क्या रुचिया ह ? जब वह लड़की मर जाती ह तब उस लड़के के सामने उस लड़की की बीमारी विवशता आदि प्रकट होती ह लकिन इससे क्या ? कहानी म रहस्य ह जा अत म खुलता ह।

नारी मन क खालीपन से दद भरी पीड़ा से आर एक उत्कट अभिलाषा की खोज म भटकती ऐसी कहानी ह "भीगे पलाश' — जहा सब कुछ ह लकिन जसे कुछ भी नहीं ह ? नारी-दृष्टि की गहराई का परिचय देने वाली कहानी। रोगी-भोगी योगी की समुचित जानकारी मदुहासिना को हो जाती ह— वह सोचती ह कि ऐसी कानसी शक्ति विधाता न आरत को दी ह कि दृष्टि के दायरे म पुरुष क शालीन अशालीन रूप क्षणभर म विजायित हा जात ह रिश्ते की सहजता शेष नहीं रह पाती। वर्तमान म ऐसा कटु यथार्थ नारी का कई बार झेलना पड़ता ह। कहानी के मूलकेन्द्र म विसगति विडम्बना से जूझता हुआ चारित्रिक रूप ह— एक ऐसा रूप जा अनुभूत सत्य को साक्ष्य बनाता हुआ रुढ़ परम्परा के बीच से गुजरता ह—

'रेत पर लिखा नाम —' कहानी म भी नारी मन की छटपटाती वे लालसाये व्यक्त की गइ ह जहा स्वय के आचल म अनुराग प्यार, मनुहारे भावनात्मक ऊजाये है लेकिन पुरुष— जा उसका प्रिय ह लेकिन जिसक पास उदासीनता है खामोशी ह ऊब उकताहट है जो विचारो व्यवहारा मे एकदम बर्फ क समान शीतल है- ठण्डा ह। नारी का उल्लसित समर्पित भाव पाकर भी वह उसे उपेक्षा उदासीनता देता है आर नारी मन की कोमल भावनाए अपमान बोध से जल उठती है। एक लिजलिजी कुण्ठा और एक अग्नि स्फुलिग सा विद्राह उसके मन को निगलने लगता ह। पुरुष का दभभरा व्यवहार-चेहरा इस कहानी को घेरे रहता ह।

'जेठ की धूप'— कहानी नारी मनोविज्ञान पर आधारित ह। आज की औरत के कदम निर्भीक होते जा रहे ह। उम्मीदे उसकी पशानी का सजाये रहती ह— लकिन इस कहानी की नायिका बेहद निराशावादी कुहरे से ढकी हुई है— वह चष्टा करती ह अपने परा के नीचे बिछे अनुदार काटा को बीनने की। जीवन म साधिकार जीने की। सार्थक निर्णय लेने की लेकिन घरेलू दबावो ने, अपमानो ने उपेक्षाआ ने उसे इतना कुण्ठित बना दिया ह कि सबल-सस्कारा से वह परिचित हा नहीं पाई तब ? वह घर-बाहर अपने बल पर खड़ी हाकर प्रत्येक विसगति का सामना करने मे स्वयं को अक्षम पाती ह। न उसमें धैर्य रह पाता ह आर न तार्किक प्रखर प्रबल वाणा ही—

'तलाश घर की' – नारी-मन के उस अनुत्तरित प्रश्न की अनुगूज से ध्वनित होती हुई कहानी है कि बच्ची रहती है नारी तब 'तुम्हे पराये घर जाना है – मा-बाप का घर उसे 'चिडिया रन-बसेरा" लगता है... जब पति-गृह मे आती है वहा पति-परिवार का साम्राज्य होता है। उन्ही के अहम्वादी स्वभाव तथा पीढी दर पीढी ढले हुए सस्कारो की सीलन भरी घुटन मे सिमट कर रहना होता है– और जब वृद्धावस्था झुक आती है, तब सतान सरपरस्त होकर अपनी मर्जी के मुताबिक जीने-रहने को मजबूर करती है– तब तरलिका घबरा कर मन से यह दहकता प्रश्न बार-बार करती है कि आखिर 'मेरा घर कहा है कौन सा है ?'– कहानी मार्मिक ततुओ से कसी गई है–

'दिन बुनता सूरज अपराध और चारित्रिक ताने बाने से बुनी हुई एक ऐसी कहानी है जिसकी प्रकृति अपराध या जासूसी कथा जैसी होती हुई भी उसमे पुरुष और नारी के प्रेम के प्रति दृष्टिकोण का निर्वचन छिपा हुआ है।

एक प्रोफेसर अपनी सहकर्मी युवती के आकर्षण मे विवेक खोकर अपनी समर्पिता और निष्कपट पत्नी की हत्या कर देता है और साथ ही आशा करता है कि जिसके आकर्षण मे फसकर उसने इतना बडा जोखिम उठाया है वह उसे स्वीकार कर लेगी पर वह इतना जानते ही रुख बदल लेती है और स्पष्ट कह देती है कि जो अपने सात फेरो वाली का सगा नहीं हुआ वह किसी का क्या हो सकता है। पुलिस की जासूसी भरी सक्रियता से अपराध का पर्दाफाश हो जाता है और कहानी की नायिका की छवि निष्कलुष होकर निखर कर उभरता है।

कथा मे अपराध रहस्य रोमाच की सफल बनावट हुई है जिसके साथ लेखिका का यह कथ्य भी गुथा हुआ है कि नारी मन प्रेम के आगन मे जघन्य अपराधो की कटीली झाडिया उगते हुए नहीं देख सकता।

कहानी का शिल्प अन्य कथाओ से अलग हटकर है। पाठक औत्सुक्य और विस्मय के सूत्रो से अत तक बधा रहता है। पुस्तक की शीर्ष कथा यही है।

'लहरो का अत कहानी मे एक ऐसा भाव लहराता हुआ मिलता है कि जीवन का सत्य केवल चादनी के वैभव और प्रकृति के रगीन सौन्दर्य मे नहीं है बल्कि सख्त तीखी धूप के तपते हुए रास्तो पर चलकर मजिल प्राप्त करने पर है अर्थात् कठोरता से गुजरते हुए मन की सकल्पित धीरता का वरदान पाकर ही जीवन की सफलता है। नारी प्रणय का दीप भी तभी अलौकिक रोशनी से दीप्त होता है जहा नैतिक साहस का अवलम्बन होता है–

'गेट वाला लडका'- कहानी म आध्यात्मिक दर्शन म डूबी वरागी भावना का दिग्दर्शन होता ह। एक आदर्श चरित्र एक देवरूप-व्यक्तित्व जब शून्य मे विलीन होकर सासारिक मार्ग छोड़कर आकाशदाप पथ पर चल पड़ता ह तब एक श्रद्दालु अपनी झोली के सार सुमन उसके रास्ते पर बिखरा कर अपन मन की आस्था श्रद्धाजलि के रूप म प्रेपित कर देती ह — मानविय विन्दुआ म रची एक आदरावादी कहानी ह जो बहुत स्तराय और रुचिकर है—

'जो वह ऐसा जानती' – कहानी नई भावभूमि का स्पश करती हुई चलती ह। इस कहानी की सरचना भी नारी मनोविज्ञान क इर्द-गिर्द ही की गई ह लकिन यहा नायिका के स्वभाव म एक स्वाभिमानी ओज ह। अपना निर्णय स्वय लेने का उसम जबदस्त क्षमता ह। कुछ सार्थक कर गुजरने का दृढ़ सकल्प उसके मन म काधता ह। एक एसी काध— एक ऐसा प्रखर उजास कि जो किसी काली लम्बी सुरग को पार करके सूर्य की किरणा से वन-प्रान्तर, को सृष्टि के कण कण को नव उत्कर्प देता ह— धरती को प्रकृति के वभव स भर देता है आर पवन म सुवास मथकर दिशाआ को परिजात पुण जसी सुगन्ध सापता ह। इस कहानी की नारी भी अपनी समस्त कुण्ठाआ की श्रृखलाए तोड़कर, समस्त जड़ रुढ़ियो म मुक्त होकर, व्यर्थ की समस्त वर्जनाओ - अवमाननाओ की अवहेलना करके नव स्वय अपन मन का पथ स्वीकार करके इन पर अपने चिह्न स्वय प्रगति-प्रतीक क रूप म रचती ह, तब वह उल्लसित होकर विस्मय से अभिभूत हो उठती ह कि अरे। मेरे भीतर इतनी प्रतिभा छुपी हुई थी? इतनी अपार शक्ति की सपदा? म अब तक इसे पहचान क्यो नहीं पाई? क्यो कूप-मण्डूक बनी रही?

कुल मिलाकर समकालीन सवदना से भरपूर, तात्कालिक घटनाआ को प्रस्तुत करता हुई सभी कहानिया ह। युग-बोध के इनमे प्रसग-सदर्भ है। सान्दयबोध भी ह आर यर्थाथपरक दृष्टिकाण भी ह। सुन्दर कलवर व त्रुटिरहित मुद्रण ह। पुस्तक पठनीय ह।

सावित्री परमार
पार्लीवाल भवन
खजान वाला का रास्ता
जयपुर — 302001

अपनी बात

किसी भी रचना के लिए सर्जनात्मक प्ररणा या तो रचनाकार के मानस क साथ प्रकृति की अन्त क्रिया से मिलती है या समाज के साथ हुई अन्त क्रिया या क्रिया प्रतिक्रिया स। न जाने जीवन में घटी कौन कौनसी घटनाए उसक अवचतन में इस प्रकार जा बैठती है कि कालातर में शब्दों का रूप ले लेती ह।

आज की कहानियों का प्राय प्रत्येक पात्र रचनाकार के जीवन म आए किसी पात्र का पुनर्जीवित रूप ही तो होता है। मेरी कहानिया भी इसकी अपवाद नही हैं। इनमें आपको किन्ही ऐसे चलते फिरते पात्रों के साथ हुई अन्त क्रिया से बने जीवानानुभवा से बुनी हुई घटनाओं का प्रतिबिम्ब मिलेगा।

काई भी कथा लेखक आसपास समाज में राष्ट्र में घटने वाली घटनाओं के किसी न किसी प्रकार के प्रभाव से अछूता नहा रह पाता। ऐसी घटनाओं से ही उसके मन का सूरज रचनाओं के लिए कथानक बुनता चलता है— जिसे वह बाद में शब्दा की चौखटों के ताने बाने में पिरो देता है सभी कोई रचना सहज सरल स्वभाविक हो अपनी सी लगने लगती है।

समस्याए तो उसी समाज का होती है न जिसमें वह उठता बैठता है। उच्च वग की कहानियों में जहा सम्पनता की अतिरजना होती है। वही सबधों की सहजता का अभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। नायक नायिका ऊब का शिकार दिखाई देत ह। आज की अधिकाश कहानियों में मध्यम वर्ग की समस्याए अभाव अन्तर्द्वन्द्व भ्रष्टाचार व दुश्चक्र आदि दिग्दर्शित होते रहते हैं। निम्न वर्ग की कहानियों में सत्रास पीडा बलात्कार और शोषण का बहुत अधिक चित्रण नजर आता है।

मेरे इस तीसरे कथा सग्रह की समस्त कहानिया मध्यम वर्ग की मनोभूमि को स्पर्श करती हुई लगेंगी। कहानियों की विषय वस्तु अनगिनत हो सकती ह। मानव के क्रिया कलापों पर रचनाकार सदियों से कहानिया बुनते चले आ रहे हैं। ऐसे ही कुछ मानवीय सस्पर्शों से अनुप्राणित ये कहानिया आपको समर्पित हैं।

माधुरी शास्त्री
सी 8 पृथ्वीराज रोड जयपुर 1

अनुक्रमणिका

□□□

भरी धूप में

म अक्सर नहाकर तालिया सुखाने बालकनी म जाया करता था आर कभी-कभी नागफना क गमला म पानी देन छत पर भी। म उन नागफनियो का दूर से हा देखा करता था यद्यपि उनकी विविधता आर कुदरत के करिश्मे बार–बार मुझे उसी आर आकर्षित किया करते थे कि म उनका स्पश करूं उनके बार म जानू फिर भी मन उन्ह कभी छूने का प्रयास नही किया । मन ही मन म उनस डरा हुआ था क्याकि म उनके बारे म कुछ भी नही जानता था कुछ भा नहा समझता था एक्दम अनभिज्ञ था कारा ।

मरा मकान इस बहुमजिली इमारत के चाथे माले म था । मरा कमरा आर उस कमर का छाटा सा छज्जा पिछवाड़े की ओर खुलता था। म अक्सर चिन्तन या रिलक्सशन के मूड म उस बालकनी म चला जाया करता आर वहा खड़े खड़े ही उस मकान का निहारा करता जो इतनी ऊचाइ से एक्दम धरती स चिपका हुआ सा महसूस हाता था। ऐस एक दिन की बात ह। मरे दिमाग म अनाय सा बचपना कौंधा था कि अगर हवाई जहाज स नीच की ओर देखा जाय तो धरती की सारी वस्तुए इसी प्रकार खिलान जसी दिखाई देता हागी आर मै अपनी इसी बचकानी साच पर स्वय ही मुस्कुराकर रह गया ।

मुझ अपने छज्ज स उस मकान की छत आर सिर्फ बगीचा ही नजर आता था। बगीच क बीचा बीच हरा मखमली दूब करीने से कटी-छटी ऐसी लगती था मानो किसी ने हर रग का ईरानी कालान बिछा दिया हो। बाउड्री के किनारे-किनारे सभी तरह के वृक्ष लगे हुए थे। मुख्य द्वार पर लम्बे अशोक के दो वृक्ष अगल बगल प्रहरी की भाति खड़े साफ नजर आते थे। क्यारिया रग बिरग पुष्पा के पौधा आर लताआ से सज्जित थी जा आखा को बहुत ही आकर्षक लगती थीं।

लॉन के पूर्व दिशा की आर देखती हुई एक सफेद पत्थर की बच रखी हुई थी, उसी बच पर बैठी एक आकृति कभी कभी मुझे नजर आ जाया करती थी। वह आकृति मुझे हमेशा कुर्ते आर पाजामे मे ही दिखाइ देती। साथ ही सर पर सफेद रुमाल जसा भी बँधा रहता जिससे म सदा भ्रम की स्थिति म रहा करता।

वह आकृति वहा कब आ बटती आर कब उठकर चली जाती इसका मुझ कभी ज्ञाथ नहीं हो पाता। पर अक्सर मने उसे उसी बेंच पर शात मुद्रा म बठ हुए पाया था। उसके प्रति कुछ महीना तक तो मर मन म लापरवाही रही परतु न जाने कब किस दिन उससे लगाव हो गया, बता नहा सकता।

म उसके बारे म जानन को पहल ता उत्सुक हुआ फिर मरा उत्सुक्ता धीरे-धीर व्याकुलता म परिवर्तित होने लगी। मर मन म कई प्रश्न बनन आर बिगड़न लगे। कई बार तो जिज्ञासाए फुफ्कार कर खड़ी भी हा जातीं कि वह हमेशा इस तरह स अकमण्य सी, निश्चल क्या बठा रहती ह ? न जान किस कॉलेज म पढती ह ? सोचत ही कई गर्ल्स कॉलेज मेरी आखो म काध उठते। कभा लगता कि यह पढ़ी लिखी नहीं ह तभी तो इस तरह निकम्मा सी घटा बठी रहकर अपना अमूल्य समय फालतू म घुलाती रहती ह। अगर स्टूडट हाती ता कभी न कभी कोई कॉपी या किताब इसके आसपास जरूर होती।

कभी-कभी मरे दिमाग म आता कि पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर चुकी हागी सिर्फ मनन आर चिन्तन हेतु इन वृक्षा की छाया तल बठती ह मरे अनुमान स यह जरूरत स ज्यादा भावुक भी हानी चाहिए शायद कविताए भी लिखती हो। इस प्रकार की न जान कितनी ऊल जुलूल बाते मेरे दिमाग मे उमड घुमड कर जब तब मुझे परेशान करता रहता।

बचपन से ही म समय का जरूरत से ज्यादा पाबद रहा हू समय क एक-एक क्षण की अहमियत जानता हू। गया समय कभा वापस नहीं लाटता -- ये आदश वाक्य मेर दादाजी न मुझ अच्छी तरह से घुट्टी म पिलाए थे जो कि बाद म मेरे लिए आप्त वचन बन कर रह गये थे।

हा तो, मेरा जिज्ञासाए उसके लिए दिन-प्रतिदिन बढती चली गई। मै नीच देख सकता था। आर झूठ क्या बालू किसी न किसी बहाने से दखा भी करता था। कई बार मुझे छीक आर खासी भा आई (अब आप यह मत *पूछ बठना कि छींक या खासी सच्ची थी या झूठी ?)* पर *आश्चर्य* उसन एक बार भी गर्दन ऊचा करके मरा ओर देखा तक नहीं। आर ना ही मरे इस तरह राज-राज त्राटक लगाए जाने पर उसने कभी भृकुटिया ही ताना।

म अब यह अच्छी तरह से जान चुका था कि वह लड़का हा ह क्योकि कई बार उसके ढीले ढाले झूलते से कुर्ता पायजामे की वजह से मे भ्रम मे पड चुका था आर एक ऊहापाह की स्थिति से ग्रस्त लकिन एक दिन मने उस अपने घने आर घुघराल बालो का धूप म सुखाते हुए दखा। वह अपनी गोरी आर पतला उगलिया से अपन बाला का सुलझा सी रहा थी।

म सोचने को विवश हो उठा कि जिसके हाथ इतने गारे ह उसका चेहरा कितना गोरा होगा अवश्य कश्मीरी ब्यूटी की मलिका होगी। सोचते ही उमक लालिमा-युक्त कपोल मेरे मन म काध गये। लेकिन वह मुझ हमशा उसी वच पर वठी दिखती रही न रत्ती इधर, न माशा उधर। यही विचार रह-रह कर मुझे विकल कर दिया करता था।

कभी म सोचता शायद इसे चिडियो का चहचहाना अच्छा लगता होगा मोरा का पख फलाकर नाचना अच्छा लगता होगा। अपने बच्चा को अपन परा के मध्य लेकर मोरनियो का दाना चुगते हुए दखना प्यारा लगता हागा। अमरूद आर अजीर के फला पर, हरियल तोता का कच्चे-पक्के फलो पर चाच मारना आर फिर अचानक ट-ट करके उड़ जाना प्रिय लगता होगा। गिलहरी का इस डाल से उस डाल तक फुर्ती से आवागमन देखना आनदित कर जाता होगा शायद इसीलिए वह उसी वच पर समाधि मुद्रा म घटा वेठी रहती ह एक फिलॉसफर की भाति ।

म चूकि कॉलेज म पढता था एम०ए० का अतिम वर्ष भूत का भाति मेरे सिर पर सवार था। इग्लिश लिटरेचर मेरा सब्जेक्ट था शेले काट्स की रचनाए पढकर अभिभूत हो जाया करता था। ऐस ही किन्ही कोमल क्षणा म म भावनाआ म वह गया। मने एक कोरे कागज पर चार पक्तिया लिख डाली। उसी कागज के अदर एक छोटी सी कक्री रख कागज को गुडी-मुड़ी करके रवर वड स वाध निशाना साध क उसके समीप फक दिया।

मैने ऐसा कर तो दिया परतु अचानक मेरा हृदय डर के मारे इतनी जार से धड़कने लगा कि म उस स्थिति मे वहा आर ज्यादा दर खडा नही रह सका। तत्काल कमरे मे घुस पर्द की आड मे छुप, उसकी प्रतिक्रिया देखन लगा। म सच कह रहा हू उस समय यदि मुझे कोइ दख लेता ता यही समझता कि म कोइ चार हू क्याकि म चोरो जसा ही सकपकाया आर हडवडाया हुआ था।

लेकिन यह क्या वह निलिप्त सी क्या वठी रही? इतनी पास पडी चीज को देखकर भी उठान के लिए क्या नही लपकी क्या इसम जिज्ञासा या कातूहल नाम की काई चीज नही ह ? अव तक म आश्वस्त हो चुका था। मर हृदय की धड़कन भी सामान्य हो चुकी थी। किसी क द्वारा अपनी इस उपेक्षा पर मुझे तात्कालिक क्रोध उपजा। जी म आया कि अभी दनदनाता हुआ उसके करीव जाऊ आर दो-चार खरी-खोटा सुनाकर लाट आऊ ।

तभी मुझे याद आया कि यह तो अनधिकार चेष्टा हागी म तो उसका

नाम तक नहीं जानता। मेरे द्वारा उसे देखे जाने का क्रम एक लम्बे समय तक चलता रहा। मेरी उत्सुकता में अब थोड़ी सी विरक्ति का समावेश भी हो चला था। इस विरक्ति में सच्चाई कम और खीझ ज्यादा थी। मैं उससे आमने सामने खड़े होकर बात कर लेना चाहता था। मेरा मन मूक संलाप में यदा कदा व्यस्त हो जाया करता था और कल्पना में ही मैं उसके साथ पिक्चर, पिकनिक और पार्टियों की सैर भी कर आया करता था।

परन्तु इकतरफा प्रयास किसी भी कहानी को आगे बढ़ाने में अक्षम साबित होता है। *अदर्शन से एक अनजानी अकुलाहट मन में समाती चली जा रही थी।* एक विचित्र मीठी-सा कसक के गिरफ्त में मैं कसता चला जा रहा था। मैं किसी आकस्मिक मौके की तलाश में रहा लेकिन मन में एक संताप था कि न तो वह घर छोड़कर जायेगी और न मैं ही। दुनिया गोल है। कभी न कभी तो आमना सामना होगा ही। कभी फुरसत के पलों में परिचय का सिलसिला ढूंढ लूंगा परीक्षाएं तो हो जाने दो।

संयोगवश किसी आवश्यक कार्य के लिए मुझे बंगलौर जाना पड़ा। वहां से दो हफ्ते बाद लौटना हुआ तो आदतानुसार बालकनी की ओर पैर अपने आप बढ़ गये वहां जाकर नीचे की ओर झांका तो बेंच खाली दिखी सिर्फ उस घर के नौकर-चाकर ही आते जाते दिखाई दे रहे थे। यही क्रम दूसरे और तीसरे दिन भी बना रहा। तब मुझे कुछ संदेह हुआ कि कहीं वह मेरी उस दिन की अशालीन हरकत से नाराज तो नहीं हो गई? मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था। अब भविष्य में ऐसी कोई गुस्ताखी नहीं करूंगा।

लेकिन उसने बगीचे में बैठना क्या बंद कर दिया? अंदर घुसे-घुसे तो उसका जी ऊब जाता होगा। *वह शालीन गंभीर लड़की अवश्य* ही मुझसे नाराज हो गई होगी। यह सब सोच सोच कर मेरा दिमाग खराब होने लगा। जब वह दिखाई ही नहीं देती तो मन भी छत पर जाना और टहलना छोड़ दिया। अब नागफनी के उन गमलों को आस से प्यास बुझाने के लिए मैंने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया था।

एक दिन कॉलेज से लौट रहा था कि एक अर्थी सामने से आती हुई दिखाई दी। मैं श्रद्धावश अंतिम विदाई देने हेतु स्कूटर से उतरा और सड़क के एक ओर खड़ा हो शव यात्रियों के गुजर जाने की प्रतीक्षा करता रहा। जब वे लोग आंखों से ओझल हो गये तो भारी मन ले स्कूटर पर बैठ घर आ पहुंचा। किसी के भी महाप्रयाण को देखकर न जाने क्या मेरा मन बुझ सा जाता है— एक गहरी उदासी-भरी वेदना मन मस्तिष्क में समाहित हो आती है और मन गमगीन का हो जाता है।

घर आकर मने मम्मी स सबस पहला प्रश्न यही किया कि आज कौन इस दुनिया से कूच कर गया माताजी ? (मन मम्मी म इसलिए पूछा था कि महिलाए ही अक्सर घर पर रहती ह एव सहृदय होन के नाते व ही मोहल्ल वाला क दु ख सुख की सारी खबर रखती ह)... परन्तु मम्मी ने अपनी अनभिज्ञता दशाई म भी यही सोचकर अपने-आपम व्यस्त हो गया कि यह तो दुनिया ह यहा आवागमन तो लगा ही रहता ह। म अपने कमर म कपडे चेज करने क लिए आ गया। आदत के अनुसार पर पुन बालकनी की आर बढ गय। नीच झाक कर देखा तो बैच वाली थी। हफ्त भर जब तब देखता रहा। उस मकान म भीड़ तो अवश्य दिखाई देती पर वह कहीं भी नही दिखाई दी।

परीक्षाए सिर पर आ गई थी। सतीश मरे नोट्स लेकर चला गया था इतजार करने के बाद भी लाटान नहीं आया था। इसलिए म ही उसक घर जाकर अपनी नाट्स वाली कॉपी लेकर जब घर लाटा ता मम्मी न बताया कि आज बनारस वाले ताऊजी आ रहे ह ... स्टेशन पर जाकर उन्हे ले आऊ। मने उनके हाथ से लकर पत्र पढा फिर हाथ मे बधी घडी की ओर देखा अभी टेन आने मे सवा घटा बाकी था। मने चन की श्वास ली कमरे में पहुचा फ्रेश होकर तालिया सुखाने बालकनी म चला गया नीचे झाक्कर देखा बच खाली थी। एक झुझलाहट भरी निराशा मन मे व्याप्त गई।

टेन आने म आधा घटा अभी-भी शेष बचा था। म ताऊजा का रिसीव करने के लिए स्टेशन जाने लगा ता दीदी ने दौड़कर आवाज दी--"राजू मम्मी कह रही ह कि लाटते समय थोड़े से पान लगवा कर ले आना ताऊजी की पान खाने की आदत है।

सुनते हा मने थोड़े से गुस्से म भर कर उत्तर दिया ... और सग मे पीकदान भी ले आऊगा वर्ना ... ताऊजी वाश बेसिन की जो हालत बनाकर छोड़ेग वह देखन लायक ही होगी।" मेरी आखा मे ताऊजी का बनारस वाले घर का बाथरूम आर सीढ़ियो की कोने वाली दीवारें कोध गई। मन एक अजीब-सी खिनखिनाहट से भर उठा।

स्टेशन पहुचा तो मालूम पड़ा कि ट्रेन आज आधा घटा लेट है। मन मे एक बारगी विचार आया कि घर लौट जाऊ लेकिन फिर न जाने क्या सोचकर वही रुका रहा। वक्त काटने के लिये निरर्थक इधर से उधर घूमता रहा। ... आती-जाती गाड़ियों को देखता रहा। तभी एक विचार कौधा कि स्टेशन पर बैठकर जिदगी के विविध पक्षो पर बहुत कुछ लिखा जा सकता ह। ...कोई चित्रकार भी चाहे तो यहा किसी बेच पर बठ कर जिदगी की सच्चाइयो को

फलक पर स्थापित कर सकता हैं — सैकड़ों कथानक — अनेक विषय मिल सकते हैं— लिखने के लिए।

मैं अपने ही विचारों में खोया हुआ था कि धीरे-धीरे सरस्वती मौं ट्रेन आ ही गई। एक डिब्बे में ताऊजी टाइप का कोई भव्य व्यक्ति झांकता हुआ दिखाई दिया। मैं लपक कर उनके डिब्बे के पास पहुंचा । ताऊजी ही थे। मैंने झुककर उनके पैर छुए तो उन्होंने बनारसी वाला में मेरे सिर पर हाथ रखकर रसभरा आशीवाद दिया जो मुझे बहुत प्यारा लगा।

घर आते ही मम्मी ने मुझे एक तरफ ले जाकर फुसफुसा कर पूछा, "पान लाया?" मैंने अपनी गलती महसूस की सकुचित होकर बोला "अभी लाये देता हू, ये गया और वो आया।" मेरी इस हरकत से मम्मी मुस्करा दी और मैं दनदनाता सीढ़ियां उतर, गली के नुक्कड़ वाले पनवाड़ी के पास जा पहुचा। जहां पान वाला चच्चू किसी बुजुर्ग व्यक्ति से बात कर रहा था। उस बुजुर्ग व्यक्ति की आंखो से अश्रुधारा बह रही थी जिन्हे वे बार बार अपने सफेद रुमाल से पोंछ रहे थे। मैं स्थिति की नजाकत भाप वहीं मौन खड़ा रहा। मुझे देख वे बुजुर्ग महाशय धीरे धीरे चलते हुए आगे बढ़ गये।

उनके चले जाने के बाद मैं अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाया और आखिर पानवाले से पूछ ही बैठा चाचा ये कौन थे और क्या रो रहे थे ?" इस पर वह पानवाला चौकी के ऊपर बिछे वस्त्र चूने से रंगे गीले कपड़े पर 8 10 पानो को बिछाते हुए बोला— 'अरे का बताए बबुआ। भगवान की अजब गजब लीला है बुढऊ बैठे हैं और उनके सामने सनताने (सतान) चली जाए तो एहि से बड़का दुःख और कौन सा होईये ? — बोलो भला — ?"

मैंने कहा— 'सो तो है — पर हैं ये कौन ?" — "अरे नहीं चीन्हत का ये स्वास्तिक सदन के मालिक हैं — अभी महीना भर पहले ही इनकी जवान बिटिया की मिरतु (मृत्यु) भई रहे—। पानवाले की बात सुनकर मेरे मुह से अचानक निकल पड़ा-- वही जो बगीचे में चुपचाप बैठी रहती थी — क्या हो गया था उसे ? मैं सब कुछ जान लेने को आतुर हो उठा। वह पान बांधता जा रहा था और बोलता जा रहा था और मैं जड़ की भांति वहीं खड़ा उसको ओर अपलक निहारे जा रहा था।

— बबुआ होना क्या था बस ऊपर वाले की मर्जी — कोनऊ कौन घरन में तो रोटी के लाले पड़े रहत है तो वहां भगवान लदाफद सतान की खेपे उडेलत रहत हैं और जो घर में अनाप शनाप तर माल भरे पड़े रहे ऊ घर मे दो भई औलाद भी छीन ले है। लो भैया — पांच का नोट दे दो।' उसने बंधे पान मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा।

मन पर्स से पाच का नोट निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दिया। आर बात को आगे बढ़ाने के अदाज म पूछा, लेकिन हुआ क्या था ? _ मतृब्र उसकी बेटी को ?"

बाय हाथ की आर रखी छोटी-सी काठ की (पई) सदूक मे वह पसे डालते हुए बोला--"हिमानी बिटिया कॉलेज मे पढ़ती थी _ कॉलेज की तरफ स पहाड़ पर चढ़ने की टरेनिग (ट्रेनिग) लेने कही गई हती ... वही कहीं पर फिसल गया आर लुढ़कती भई खाई म जा गिरी। गिरने से दिमाग म कही एसी चोट आई कि त्रिटिया की आखे चली गई आर पर टूट गये सा अलग ।

डाक्टरो ने आपरेशन करके स्टील की छड़े आर पिलास्टिक (प्लास्टिक) की कटोरिया फिट कर दी थी, इधर दो महीनो से उसकी तबीयत ज्यादा खराब रहने लगी थी। वापस इलाज शुरू करवाया गया तो डाक्टरो ने बताया कि अदर सपटिक (सप्टिक) हा गया है। चलो अच्छा ही हुआ. दु ख पाके जीने से तो भगवान ने सुन ली। एक तो लड़की ऊपर से भगवान ने दोनो आखिन क दिया भी बुझाय दीन रहे _ ।

म इससे ज्यादा कुछ न सुन सका जी चाहा कि खूब जोर स चिल्लाकर रो लू पर किसके काधे का सहारा लेकर, आर क्यू मने अपने उस राज का किसी को साझेदार भी तो नही बनाया था। फिर भला मेरा परिचय ही कितना-सा था ? बस यहा न, कि वह मुझ दिखती थी उसी बच पर बठी हुई।

अचानक मुझे ऐसा लगा कि जसे उस बगीचे का हरा कालीन एकदम से स्याह हो गया ह। पेड़ पाधे मुरझा गये हा आर दिन-भर चहचहाने वाले पक्षी उड़ कर कही आर चले गये हो, आर यही कही भरी धूप मे अमावस की रात जसा अधेरा छा गया हो। इस बात को अनेक वर्ष बीत चुके हे। बार बार तबादलो के चक्कर मे मने कई मकान कई शहर बदले ह लेकिन आज भी बेच पर बठी कोई आकृति आखा के आगे झूलकर लुप्त हो जाती है और एक अजाब सी उदासी भर उठती ह।

मैं पूर्व जन्म पर विश्वास तो नही करता। फिर भी मेरे मन मे इतनी अकुलाहट क्यो ह ? समझ नही पा रहा। लगता है मन का कोई कोना रिक्त पड़ा हे कई जन्मा से।

■■■

गेट वाला लड़का

उस आलाशान कोठी की महिलाय जब शापिंग करके वापस (घर) लाटी तो मेन गेट पर एक दस बारह साल के लड़के को जमीन पर पड़े हुए देखा। कार से उतरकर मालकिन ने सतरी से पूछा-- विश्वनाथ य छोरा कान है आर यहा चीचा-खीच कस पडा है?' 'मालकिन। ये बहुत देर से यहा बठा हुआ था। मने सोचा शायद भूखा होगा इसलिये भीतर जाकर महाराजिन से खाना लाकर दिया पर खाना तो दूर रहा यह कमबख्त यहीं गश खाकर गिर पडा।' सतरी ने अपना पूरी-पूरी सफाई पेश कर डाली।

सतरी की बात सुन सेठानी उस लड़के के पास जा खड़ी हुई। लडका बुरी तरह स काप रहा था आर सिकुड़कर गठरी सा बना जा रहा था। सठानी उसकी दयनीय दशा देख एकदम से द्रवित हो उठी। दया मे भरकर बोली--'भई विश्वनाथ। दखत क्या हो -- अदर जाकर मुनीमजी से चाबी ले स्टोर स कम्बल-- अबल निकाल कर इस छोरे पर डाल दो नहीं तो बेचारा बिना मात मर जायेगा।

विश्वनाथ अदर गया मुनीम से चाबी ले स्टार स एक कम्बल निकाल कर उस कापते हुए छोरे पर डाल दिया। अपने ऊपर थाडा-सा भार पाकर उस लड़के ने कबल को अपने तन से लपेट लिया जसे वह पडे-पडे ऐसी ही किसी वस्तु की घटा स प्रतीक्षा कर रहा हो। बुखार का नीम बेहोशी म भी उसे उन कागजो की याद आ रहीं थीं जिन्हे वह दिन-रात सडको से उठाया आर बीना बटोरा करता था। हा उन्ही कागजो के ढरो पर वह उसकी मा आर मुन्नी चन-से सोया करत थे। इन कागजा म उन्हे उतना ही आनद महसूस होता जितना कि अमीर लोगो को डनलप के गद्दा पर। ऊपर से टाट की बोरिया जिनम उसकी मा दिनभर गली गली घूमकर कपडा क फट पुरान चान्द बटारा करती था इन्हा कपड़ा को म्यूनिसिपलिटी के नल से धो-सुखाकर उसकी मा न माटी रजाई-सी बना डाली थी। सडक प्रदत्त वस्तुआ म उन्हे इतना गहरा नींद आती कि एक ही करवट मे कब सवेरा हो जाता पता ही न चल पाता।

रात को दो-बार सेठानी अपने कमरे स निकल निकल कर गट तक गई थीं परन्तु गेट के बाहर कदम नहीं रख पाई क्योकि रात का सतरा अब बदल

चुका था। चूंकि वह सतरी फाज का रिटायर चाकीदार था जो भरी वदूक लिये उस काठी क भीतर-बाहर घूम घूम कर रात भर पहरा दिया करता था। वह आज का नहा उनके ससुरजी क जमाने का था इसलिये घर की सारा वहए उसस थोड़ा बहुत पदा किया करती थीं। उसका रात्र भी कुछ एसा था कि मजाल ह कि उसकी मर्जी के बिना कोई फाटक क बाहर, भीतर चला जाये। उसकी पनी आख भरी हुई बदूक आर हृष्ट पुष्ट चाड लम्बे तन शरार स सभी कापते थे। आवाज ऐसी जसे कोइ शर गुर्रा रहा हो।

इतनी रात गये अचानक बड़े सेठ के कमरे का साक्ल खुला वह चाकन्ना हो उठा फिर दरवाजा खुलने क साथ ही राशनी का एक टुकडा वरामदे म पसर गया, दबे परा सठानी को सीढ़ियो स उतरत भी वह देखता रहा। माजरा समझन के लिये आर आदेश का पालन करन के लिये उसने खास खास कर अपनी उपस्थिति का अहसास बड़ी बहूजी को करा दिया लेकिन सकोची आर लिहाजी सठानी जसे आइ थी वसे हा उल्टे परा अपने कमरे म जा घुसी। बार-बार उस कपकपाते वच्चे का चहरा उन्हे याद आता रहा। बाहर की ठड का अहसास व कर ही चुकी थीं। इसलिये हर पल उनका जी चाह रहा था कि उस बीमार वच्च को जाकर देख आऊ कहीं ...। लोग तो बिल्ली-कुत्ते तक के बच्चा की हिफाजत करते ह यह तो इसान का बच्चा ह। इसा अकुलाहट म उन्ह रात भर बेचनी रही।

दूसर दिन भी वह वसे ही अचत पड़ा रहा। सतरी की ड्यूटी बदलते ही सठानी ने सबसे पहला जो काम किया वह था उस बच्चे को देखने का। उसे कम्बल वाली ही स्थिति म देख घर की फटी दरी चोंपर्त करके उसके नीचे बिछवा दी गइ। इस काम मे हरिया कुम्हार न पूरा सहयोग दिया। उस बच्च के लिये बड़ा हुण्डा (मिट्टी का गिलासनुमा पात्र) भर कर कड़क मसाले की चाय जिसम लौंग अदरक काली मिर्च तथा तुलसी भी पड़ी थीं भीतर से भिजवाई गई। लड़के न कापते हाथा से चाय पी आर कुल्लड़ को नाली म लुढ़का कर वापस निढ़ाल हो कर लेट गया। दोपहर की चाय के साथ विश्वनाथ ने उसे कोई दवा का गोली भी झुझलाये स्वर आर शब्दा के साथ पकड़ाई--'ऐ छोरे ले चाय के *साथ ये गाली भी गिटक जा।"* एक काम का इज़ाफा आर हो जाने से विश्वनाथ को खुदक सवार हो गई थी उसके होठ कुछ बुदबुदा भी रहे थे। शायद उसने कोई छाटी मोटी गाली दी हो।

चार दिन की देखरेख के बाद जब उसका बुखार उतरा तो उसे कुछ होश आया। अपने ऊपर कम्बल आर नीचे दरी देखकर उसका हृदय देने वाल के प्रति श्रद्धा से भर उठा। उसके परो मे अब तक कुछ ताकत आ चुकी थी। धीरे से

वह उठा आर कम्बल का दरी म लपेटकर, उसे सतरी के लिये बिछी बैंच क नाच सरका कर चुपचाप चला गया। उस जात हुए किसी न भी नहीं देखा। कुछ दिना के बाद सभी के दिमाग स उस लड़के का बात आइ गइ हा गइ।

अभी पूरा महीना भी न गुजरा हागा कि वही लड़का एक दिन फिर उसा काठी क मुख्य दरवाज पर आ बठा। आत जाते सब लागा को सलाम करता फिर चुपचाप अपनी जगह पर सिकुड़ कर बैठ जाता। बुजुग दरबान से वह रात म बात करता आर दिन म विश्वनाथ स। विश्वनाथ से ही सेठानी को पता चला कि वही लड़का फिर आ धमका ह द्वार पर। सुनकर इस बार सठाना न अपनी काई प्रतिक्रिया व्यक्त नहा की ।

कुछ दिनो बाद सेठानी का उस लडके से अचानक आमना सामना हा गया तो वे उससे पूछ बठी "क्या रे, कहा चला गया था बिना बताये?" फिर जैसे खुद ही अपने प्रश्न का उत्तर पा वह चुप रह गई कि अचेतावस्था मे इसे क्या पता था कि किसने मरे साथ हमदर्दी बरती थी बताता भी तो किसको? वे अपने आप पर हसता हुई सी बोली–"तर मा-बाप कहा रहते है छोरे?" लड़क ने जवाब मे आख नाचा कर ली आर धार स बोला–"बाप नहीं है मा पता नहीं कहा चली गई। ... कहन के साथ ही उसकी आखा स दो आसू टपटप करके जमीन म जा गिर। तो रोता क्या ह? बठ जा जब तेरी मा तुझे मिल जाये तब चल जाना।" लडक ने गर्दन हिला कर स्नेह जता आदेश मान लिया। रात मे बचा-खुचा खाना महाराजिन (खाना बनान वाली) उसे दे आई ।

कुछ दिन तक तो दरवाज पर लैटर बॉक्स की तरह चिपका यह लड़का सभी की आखा म शूल सा खटकता रहा। उस कोठी के सदस्या म फुरसत के पला म या भोजन करते समय उसको लेकर तरह तरह क अनुमान लगाये जाते लेकिन वे हमशा ही निरर्थक साबित हाते। महीने दो महान बीतते ही वहा लडका सभी को सुहा गया। धीर धीर वह उस घर के छोट बड सभी लोगा क लिये आवश्यक बन बठा। आदेश मिलते ही कभी सब्जा वाले को ता कभी चूडी वाले को तो कभी दुकान दुकान घूमकर कढ़ाई बुनाई का सामान ला दता। उसके रात दिन फाटक स सट बठ रहने के कारण अब दोना दरबाना को भी सुकून की श्वास मिलने लगी थी। क्योकि जब भा वो लोग थोडा सी देर क लिए इधर उधर होते ता यही लडका छपक कर फाटक खोल देता आर गाडा के भीतर आते हा वापस बद कर पुन उसी स्थान पर बैठ जाता। कभा कोई सतरी उससे पान मगवा लेता तो कभी कोई जर्द की पुडिया। धीर-धीरे वह घर बाहर दोना जनो का प्रिय बनता चला गया। यहा नहीं घर के छोटे बच्चो को भी अब वह स्कूल छोडने आर लाने ले जान लगा था।

आज सेठजी की जीप खराब पडी थी, ड्राइवर नही था। दूसरी कार छोटा भाई लेकर पहले से कहीं चला गया था। सेठजी को आज किसी से मिलने जाना था इसलिये पदल हा चल पड़े परन्तु आमों से भरे टोकरे की समस्या उनके सामने मुह वाय खडी थी। उस लडक को उन्होंने आवाज दी -'ए लडक इधर आ। तेरा नाम क्या ह ? लडका डरता-सहमता भीतर गया उसन सिर झुका कर कहा- "मालिक मेरा नाम राम ह। "ठीक है— हा रामू तू इस टाकरे को सिर पर उठाकर स्वदेशी मार्कट तक चल पायेगा ? देख कहा बाच म ची तो नही बोल जायेगा ? सठजी ने रामू के सुदर मुख लेकिन मरियल तन की आर दख सदेह भरे स्वर म पूछा।"

सेठजी की बात सुनकर विश्वनाथ फिस्स से हस दिया आर रामू ने सिर्फ मुस्कुराहट से ही काम चला लिया। टोकरा विश्वनाथ ने उठाकर रामृ के सिर के ऊपर रख दिया। आगे-आग सेठजी अपना कीमती छडी का सहारा लेकर चलते रहे आर पीछे-पीछे सिर पर टोकरा उठाये रामू। रामू सेठजी के व्यक्तित्व के बारे म सोचता चला जा रहा था कि ये कितने अच्छे सरल आर सहज आदमी ह पसे का घमड तो छू कर भी नही गया । सबसे कितनी आत्मीयता से बात करते है। — बडी सेठानी जी भी अच्छी ह — बिल्कुल मदिर की मूरत जसी —— गोरी चिट्टी—— मेम सी।

सिर पर बाझ हान की वजह से वह धीर-धीर चल रहा था। सठजी उससे बहुत आगे निकल चुक थे तभा उसका नजर अपनी मा आर मुन्नी पर जा पडी। पर — यह क्या सेठजी तो मा से ही बाते कर रहे ह। वह थोडा-सा ठिठका—। क्या मा को सेठजी पहिचानते ह ? अभी वह अपने प्रश्न का हल नही ढूढ पाया था कि उसने देखा सेठजी ने कुछ रुपये अपने कुर्त की जेब से निकाल कर उसकी मा के हाथा म रख दिय फिर आगे बढ़ गय। ता क्या, मा न सेठजी से भीख मागी फिर — क्यो— । अब तक वह अपना मा के पास पहुच चुका था। उसने प्रश्न भरी निगाह से मा की ओर देखा फिर रुपयो की ओर इससे पहले कि वह मा से कुछ पूछे उल्टे मा ने ही उससे प्रश्न कर डाला - अरे मुन्ना तू — कहा था इतने दिनो से — क्या तू सब्जिया बेचने लगा ?

नही मा म इन्हा सेठजी के यहा रहता हू। रामू के मुह से सेठजी की बात सुनकर वह आश्चर्यचकित रह गई। फिर उसे समझाते हुए बोली- "दख बेटा अगर तू वहा रह ही रहा ह तो कभी भी ऐसा कोई काम मत करना जिससे हम गरीबो की नीची आये। क्यांकि चोरी चकारी तो दूसरे लाग कर ल जाते ह आर अपन जसे गरीब लोग ही बिना मात मारे जाते है। उसके (गरीब क) सिर पर किसी सबल की छत्र-छाया न हाने से लोगा का गरीबा पर हा शक जाना ह। तू

सेठ और सेठानी को मा-वाप जसा ही आदर देना। जिस घर का नमक खा रहा ह न वेटा उस घर का कर्ज चुका दना पर लजाना नहीं। इनकी अपने ऊपर वहुत मेहरवानिया ह। _ रामू को वहुत पीछे आर उस आरत स वात करते देख सठ ने दूर से ही कड़कदार आवाज लगाई। रामू सहमकर लम्वे लम्वे डग भरता हुआ उनके पास जा पहुचा।"किससे वात कर रहा था?" सेठ न गुस्स भरा आवाज म पूछा।_ सरकार यह मेरी मा ह वहुत दिना क वाद मिला था न_। रामू के मुह से मा शब्द सुनकर सेठ का सारा गुस्सा जाता रहा। अव तक सेठ हुकुमचद जी की दुकान आ चुकी थी। सेठ के आदेश पर रामू ने टोकरी उतार दी आर वापस कोठी की आर लाट गया।

उस रात रामू को नींद नहीं आई। अपनी मा के फटे हुए वस्त्र रह रह कर उसे पीडा पहुचाते रहे। काश मेरे हाथ मे भी चार पसे होते। रोटी, कपडा आर आश्रय तो मुझे मिल ही गया पर हाथ म एक फूटी काड़ी भी नहीं ह_। मा ने उसे कई वार वताया था कि – "उसकी शादी एक रिक्शे वाले के साथ हुई थी। अच्छी तरह स गृहस्थी चल रही थी। (वापू) जो कुछ कमाकर लाता था सव मेरे ही हाथा म रखता था। उसी ने तो मुझ मेरी सातेली मा के कष्ट स उवारा था। मुझे चाहता भी खूव था। पर न जाने वह कान-सी कुघडा थी कि किसी दास्त के भडकाये मे आकर वह ववई चल दिया आर फिर वहा से आर हा कहा सुना ह कि दुवई _ वहा जाकर उसने दूसरी शादी कर ली फिर लाटकर आया ही नहीं। उस याद ह जव भी उसकी मा ने यह वात वताई तव तव उसकी आखा से अश्रुधारा वह निकला थी।

वेटा फिर समस्या आई पेट भरने की। सव जगह काम की तलाश म भटकी पर कहीं काम नहीं मिला अत म सडका से कागज वीनकर आर उन्हे वेचकर किसी तरह से पेट भरा।_ यह तो समय का फेर ह वह पल मे किसी को राजा तो किसा को भिखारी वना देता ह।_ पर वटे अपन भिखारी नहा ह इसलिए कभी किसा के आगे हाथ मत फलाना। मेहनत की खाना।

मा क कहे ये शब्द रामू के कलेजे मे पत्थर की लकीर स वन कर वठे थे। कुछ तो सस्कार कुछ अपना-अपना स्वभाव। रामू को याद आया उसकी मा ने वताया था कि किसी सेठ ने दया करक अपने गोदाम के टिनशेड मे उस रहने का इजाजत दे दी थी। सेठ के गादाम म रहने से सेठ को भी फायदा था और मुझे भी। इसी वहाने गोदाम की रखवाली हो जाती थी आर मेरी इज्जत भी वची रहती थी कि ये सेठ के घर क नाकर ह। रखवाली के 40 50 रुपये माहवार तनखा भी मिलती है।

धीर-धारे साल पर साल गुजरते रह। रामू फाटक के वाहर रहते रात

बच्चे से किशोर हो गया। लेकिन उसने कभी भूलकर भी फाटक के भीतर पर रखने की बात मन में नहीं सोची। भीतर कौन कौन हैं वहां क्या क्या होता रहता है उत्सुकता होते हुए भी कभी साहस नहीं बटोर पाया था वह। आती जाती गाड़ियों में ही जो चेहरे उसे दिख जाते बस उन्हीं से सलाम करके पुन अपने स्थान पर बैठा रहता। हां सेठ और सेठानी से उसकी इतने वर्षों में दो चार बार बात अवश्य हो चुकी थी। बाकी सारे समाचार उसे विश्वनाथ से ही मालूम पड़ते रहते। इसका भी एक कारण था कि उसे बेकार में बड़बड़ाने की बुरी आदत जो थी। रामू से कभी सिर की मालिश तो कभी पैर दबवाने की नौकरी दाना ही सतरी लिया करते थे। रामू भी सभी के काम खुशी-खुशी कर दिया करता। इसमें उसे प्रसन्नता का अनुभव होता था। हमेशा सोचा करता कि भाग्यवान घर के दरवाजे पर यदि खड़े रहने भर की जगह मिल जाय तब भी अपने को भाग्यशाली समझना चाहिए।

विश्वनाथ से ही रामू को एक दिन पता चला था कि बड़े सेठजी बीमार हैं फिर कुछ महीनों के बाद उसे उनकी बीमारी का नाम भी मालूम पड़ गया था। सेठजी कुष्ठ रोग से ग्रस्त थे। सेठ के भाई-भतीजो ने व्यापार पहले से ही सम्भाल रखा था लेकिन व्यापार सम्बन्धी मशविरा सेठ से अवश्य ले लिया करते थे सेठ की पहली पत्नी के निधन के वर्षों बाद उन्होंने दूसरी शादी भी की लेकिन उनके भाग्य में संतान सुख लिखा न होने के कारण भगवान ने सेठानी की गोद तो एकबार अवश्य भर दी थी लेकिन उस बालक को छह महीने का होते-होते ही छीन कर सेठानी के मातृत्व को अधूरा छोड़ दिया था। उसके बाद फिर उनके कोई संतान नहीं हुई। यही कारण था कि उनके रिश्तेदारों की भीड़ इर्द-गिर्द हमेशा उसी तरह मंडराया करती जैसे गुड़ की भेली पर मक्खियां और शक्कर पर चींटियाँ।

लेकिन अब वही भाई भतीजे अपने अन्नदाता भाई का घर पर नहीं रखना चाहते थे। सभी सेवा करते-करते बुरी तरह से उकता चुके थे। धीरे-धीरे उस उपयोगी व्यक्ति को अनुपयोगी मानकर अब उनकी जाने-अनजाने उपेक्षा भी शुरू हो चुकी थी। ऐसा नहीं था कि बीमार सेठजी को इन सब बातों की भनक नहीं थी। वे परिवारजन के हाव-भावों स्पर्शों, शब्दों झुंझलाहटों और यहां तक कि नाक पर कपड़ा रखकर आने इत्यादि सभी बातों से परिचित हो चुके थे। अपनी इस उपेक्षा और भाई-भतीजों की आपा-धापी से सेठजी मन ही मन बुरी तरह रुष्ट भी थे और दुखी भी। और दुखी क्यों न हो उनका शरीर ही तो व्याधिग्रस्त हुआ था मस्तिष्क तो स्वस्थ था चैतन्य था। जहां सौ का खर्चा होता वहां लोग हजारों पर दस्तखत करा कर ले जाने लगे। न जाने कितने-कितने और कैसे-कैसे

विचार उनके दिमाग म हमशा आते जात रहत। क्या करते मजबूर थे। अपनी आलाद तो थी नहीं जिसस आमदनी का हिसाब जचवाते।_ दैहिक आर दैविक मजबूरियो के आगे नत मस्तक थे।

एक दिन सेठजी को छोड़कर घर के अन्य सभी पुरुषा ने बैठकर गुप्त मत्रणा कर डाली जिसम सठजी के निजी डाक्टर का भी सम्मिलित किया गया। प्रस्ताव यह पारित हुआ था कि अब सेठजी को इस कोठी से जाना होगा, क्योकि वाल बच्चो वाली हवेली मे ऐसा अब बहुत दिनो तक नहीं चल पायेगा। ये एकात सेवन करे आर खुली हवा म श्वास ल। फिर भी किसी पुरुष का उनके साथ रहना परमावश्यक माना गया। इस पर सभी अपना-अपनी मजबूरिया बता कर कन्नी काट गये। मीटिंग चलती रही। सभी पशोपेश मे उलझे हुए थे। तभी किसी ने अपन पास वाले व्यक्ति के कान में कोई सुझाव उडेल दिया। सुनते ही उस व्यक्ति की बाछे खिल गई। फारन ही विश्वनाथ का आवाज दी गई। विश्वनाथ से पूछा गया क्या तुम सठजी के साथ रहकर उनकी सेवा सुश्रूषा कर सकते हो?' सुनते ही विश्वनाथ ने दो टूक जवाब दे दिया। फिर उसी न एक सुझाव पश कर दिया कि वह गेट वाला लडका है न रामू, उसको ही सेठजी क साथ भेज दे ता कसा रहे। वेस भी निठल्ला सा चाबीसो घटे यहीं चिपका रहता ह।_ अच्छा भई उससे भा पूछ कर दख लो। सेठ के छोट भाई ने निराशा भरे स्वर मे कहा।

सहमा सकुचा रामू विश्वनाथ के पीछे चलता हुआ उन सबके सामने आ खड़ा हुआ। उसका रोम-रोम आज किसी अज्ञात आशका से आक्रात हो रहा था। उसन सीढिया चढ़ते समय अपने द्वारा किये गये कार्यों के बारे मे दिमाग मे जोर डाला पर उसकी समझ म कुछ भा न आ पाया। आज से पहले उसे भातर कभी नही बुलाया गया था फिर क्या बात हो सकती ह? उसका कलेजा बुरी तरह से धड़क रहा था। आतकित सा उन सबके सामने जा खड़ा हुआ भाचक्का सा हो उन सबके चेहरो की ओर ताकने लगा।

तभा उसके कान मे मझले सेठ का स्वर गूजा- "रामू क्या तुम सेठजी के साथ आश्रम मे रह सकते हा?' रामू ने स्वाकृति मे सिर हिला दिया। "सिर्फ सिर हिला देने काम नही चलेगा बुद्धू_ मालूम ह तुम्हे वहा उनके साथ चोबीसों घटे रहकर सेवा भी करनी पड़ेगी। आवाज में शीघ्र उत्तर पाने की झुझलाहट भी थी।

"जा मालिक।"_ "जी मालिक के बच्चे अच्छी तरह स सोच समझ कर अपन मा बाप से सलाह करके बता देना। दो-चार दिन साथ रह कर कही भाग छूटा तो हम लोग तुझे कहीं भी नही छोड़गे।"

रामू को उस व्यक्ति के बोलने का ढग बिल्कुल भी पसद नही आया। मन ही मन बोला - 'साला धमकी देता है। लेकिन बिना अपने मन के भाव दर्शाये वह सीढिया उतर कर वापस गेट के खम्बे से लग कर बैठ गया। बहुत सोच विचार कर वह इस निर्णय पर पहुचा कि इन बडे लोगो का क्या भरोसा कहा चोरी-चोरी लगाकर चक्की मे पिसवा दे। कल सुबह ही मै मना कर के यहा से कही दूर चला जाऊगा। — देखू फिर किसको धमकाते है?

तभी उसे अपनी मा की याद आ गई और याद आ गई उसके द्वारा कही हुई बात— 'बेटा सेठजी देवता व्यक्ति है — अगर तू इनका नमक खाता है तो — उसका कर्ज अवश्य चुका देना। बेचारे निसतान है। बडे भले है।' मा ने ऐसा क्यो कहा था? क्या मा को मालूम था कि सेठजी बीमार या रोगग्रस्त है? मुझे उनके साथ जाना चाहिये या नहीं? जाना चाहिये या नही का चक्रवात उसके दिमाग मे रातभर घूमता रहा और वह करवट बदलता रहा।

सच ही तो है आत्म सम्मान तो सभी मे होता है। पढे-लिखे ऊचे ओहदे वालो का आत्म-सम्मान नौकरों का नहीं होता? रामू का रुष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था बच्चो से तो बात करने के लिए बहुत ही नाजुक और विवेकपूर्ण शब्दो की जरूरत होती है। फिर यह धमकी क्यो? मुझ पर छोटे सेठ ने ऐसे रौब झाडा जैसे मै उनके घर तनख्वाह पर नौकर होऊ। कभी हाथ मे एक छदाम तक दी नहीं और ऐसे झाड रहे थे जैसे मै उनका खरीदा हुआ गुलाम होऊ।

जब सेठ के कानो मे यह बात पहुची कि उन्हे आश्रम पहुचाया जा रहा है तो उन्हे अपना भयकर अपमान महसूस हुआ। अपने भाइयो को अपने पास बुलाकर उन्होने उन्हे बुरी तरह से फटकारा भी पर उन चीमडो पर सेठजी के क्रोध का कोई असर नही हुआ। जैसे सबके सब एक साथ चिकने घडे हो गये हो। उन सबकी हरकतो से क्षुब्ध होकर सेठजी ने सेठानी से एकात मे विचार-विमर्श कर बागवाली कोठी मे चलने का विचार कर लिया।

सेठानी तो पहले से ही दुखी थी। उन पर तो इस समय दोहरी मार पड रही थी। एक तो पति की बीमारी दूसरे घर वालो की ओर से उनके पति की इस तरह उपेक्षा। बहुत सोच-विचार कर उन्होने अपनी निजी सपत्ति तिजोरी से निकाल ली। बडे-बडे बक्सो मे जरूरत का सामान भर लिया। जानती थी कि यदि पैसा पास हो तो कही भी नये सिरे से गृहस्थी बसाने मे कितना-सा दर लगती है? फिर वे लोग जहा जा रहे थे वहा भी उनकी अपनी खुद की बनवाई कोठी थी।

चारों तरफ बगीचा और उसके मध्य सुदर सा मकान। अपना घर। सेठ

जी ने आश्रम जाने के बजाय अपने ही घर में रहना ज्यादा श्रेयस्कर समझा, सा
एकदिन चले भी गये।... मन ही मन जानते थे कि वह छोट-छोटे बच्चा के घर
है। सभी तो उनकी आखों के तारे थे। मेरा क्या मैं तो बुजुर्ग हूं, एक न एक
दिन जाना ही है। भगवान करे वे लोग हजारों वर्ष जियें...... सुखी रहें।

सेठ को इस खुली हवा में आये लगभग दो वर्ष बीत चुके थे। इन दो
सालों में वे अपने और पराया को बहुत अच्छी तरह से पहिचान चुके थे जो
मित्र उनके पास रात दिन साये की तरह चिपके रहते थे उन्होंने भूलकर भी
अपनी शक्ल दिखलाये जाने पर भी नहीं दिखाई थी। परिवारजन रक्त संबंधी
सभी दूर से ही नाक पर कपड़ा रख छठे-छमासे आकर मिल जाया करते और
झूठी आत्मीयता का प्रदर्शन कर चल देते। इन सबका रवया देख देखकर और
बहुत कुछ आगा-पाछा सोचकर सेठजी ने एक दिन चुपके से अपने वकील को
बुलवाकर कुछ कागजात तयार करवा कर संतोष की सास ली। आज के अपने
निर्णय से उन्हें बहुत प्रसन्नता थी जैसे हृदय पर रखा बोझ उतर गया हो। उन्हें
आज प्रसन्नचित्त हसते मुस्कुराते देख सेठानी को तसल्ली हुई। इन दोनों को
सुखी देख रामू का सुखी होना भी स्वाभाविक था।

उन सबसे अलग एक पराया खून ही ऐसा था जो सेठजी की निस्वार्थ
भाव से सेवा करने मे तन मन से जुटा हुआ था। सेठ के रिसते घावों से मवाद
आर रक्त को वह चदन आर इत्र मान कर पोछा करता। सेठ और सेठानी
उसकी दिन-रात की सेवा-सुश्रूषा से खुश भी थे और आश्चर्यचकित भी। सेठानी
भी इन दिनो कम बीमार नहीं थी उन्हे भी गठिया ने बुरी तरह से जकड़ रखा
था। हाथ-पैरो मे दर्द और शरीर मे सूजन बनी रहती थी। इन दोनों को रामू के
फक्कड़पन पर कभी-कभी बहुत आश्चर्य आता। सोचते कि हमने दुनिया में
जितना पेट भरा उतनी ही उनकी भूख और बढ़ती रही और एक यह है जो चवन्नी
आने तक का हिसाब ऐसे देता है जैसे लाखो की सपत्ति का हिसाब समझा रहा
हो। अपनो से तो यह पराया ही अच्छा है जो विपत्ति मे काम तो आया। रामू
के निस्वार्थ सेवा-भाव ने पति-पत्नी दोनो का हृदय जीत लिया था।... उन्हें
लगता ही नहीं था कि वह अपरिचित गेट वाला लड़का है। वह तो जन्म-जन्म
का परिचित और अपना-सा व्यवहार कर रहा था।

सेठजी का अंतिम समय आ गया था। उर्ध्व श्वासें चल रही थी लेकिन
दिमाग अब भी काम रहा था। सेठजी की गिरती हालत देख सेठानी के
साथ साथ रामू भी बिलख कर रो पड़ा। इतने दिनों तक साथ-साथ रहने से
दोनों ओर प्रेम और श्रद्धा की भावना भर चुकी थी। गरीब अमीर का भेद तो न
जाने कब का खत्म हो चुका था। सेठ ने रोते हुए उस बालक को अपने

नजदीक पलग पर इशारे से बुलाकर उठा लिया फिर उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर बोले- 'रो मत मेरे बटे देख ये कागजात सभाल कर रखना इसकी एक कापी मेरे वकील के पास भी ह ।_ मर पास बहुत कम समय ह। गोदाम की कोठी (टिनशेड वाली) जहा तेरी मा रह रही ह वह मने तेरे नाम कर दी ह किसी दिन जाकर मा का समझा दना कि सेठानी की सवा करे आर जीवन आराम से विताए। सब पुख्ता कागजात ह किसी का कोइ परशानी नही होगी।

_ फिर अपनी पत्नी की तरफ इशारा करके बोले वेटा आज से इस मा का भी तेरे ऊपर ही जिम्मेदारी ह। सटजी ने रामू का हाथ जो अब तक उनका मुट्ठी म भिचा हुआ था उस परिश्रमी खुरदरे हाथ को जी भर कर चूमा फिर पत्नी के हाथ म उस बच्चे का हाथ दते हुए बोले- दखो सुहासिना इसको तुम अपना सतान से बढ़कर मानना। मुझे विश्वास ह इसके रहत_ तुम कभा दु खी नही रहोगी____ अकेलापन महसूस नहा करोगा __ । दु खा सेठाना न पति का अतिम आदेश समझ तत्काल रामू का कलज से लगा लिया। सठजी उन दाना का मिलन देख श्वासा का कजा चुका चिर निद्रा म सो गये। सेठानी क साथ-साथ रामू भी विलख विलख कर रो रहा था।

दूर पेड़ के नीचे खड़ी रामू की सगी मा अपने फट आचल से आसू पाछती रही आर अर्थी को सजते दखती रही। उसके मन म बड़ा भारी सतोष था कि उसके वेटे ने लजाया नही। नमक का कर्ज उतार दिया तन मन से सेवा करके । अपनी मुट्ठी म भिची हुई फूला की पखुडिया उसने उसी मार्ग पर विखेर दी। जिस मार्ग से एक देवता का शव शून्य म विलीन हान जा रहा था।

■■■

संलाप-सेतु

चलती ट्रेन मे लिखने का अभ्यास कर रहा हू बधु - सोचा कि समय का सदुपयोग कर लू। कल यहा कलक्ते मे चीफ कमिश्नर पद का चार्ज ले लिया यह सब वडे घमासान युद्ध - महाभारत के बाद पूर्ण हुआ। जो चार्ज ग्रहण किया उसमे भी सुप्रीम कोर्ट के आदेश का उल्लेख ह। इस कारण वह भी एक विशिष्ट चार्ज रिपोर्ट ह - जिनसे चार्ज लिया वह भी सज्जन ह साधु प्रकृति के ह आर मुझे मानते ह अन्यथा दूसरे अधिकारी सशकित थे कि वह हस्ताक्षर करने से इनकार कर द तो क्या होगा। मैने सोचा था कि उस स्थिति म म चार्ज ही न लेता आर वरग लाट जाता। पुन सुप्रीम कोट का दरवाजा खटखटाता वह स्थिनि नही आई। अव मुझे कोई चिता नही ह क्योकि सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार मै चार्ज लेने की तिथि स चाफ कमिश्नर का वतन पाता रहूगा।

वन्धु यहा कोई ऐसी यात नही ह जिसे म परिभाषित कर पाऊ किन्तु कलक्ता अभी मुझे आकृष्ट नहा कर पाया ह मन मेरा अभी आपके शहर म ही रमा हुआ ह। आपने वहा के साहित्यिक सास्कृतिक जगत से इतना घुला-मिला दिया था कि मुझे अपना जावन सार्थक लगने लगा था अपना तमाम विविधताआ आर इन्द्रधनुषी रगो के साथ।

अग्रेजी की टाइम्स आफ इण्डिया का (पुस्तक लोकार्पण के समाचार वाला प्रति) यदि दो चार प्रतिया कही मिल सक तो आप खरीद कर रख लेना कई लोगो का आग्रह ह - मुझे भा अच्छा लगा। म ये प्रतिया उनको अपनी ओर से समर्पित कर दूगा कभी किसी उपलक्ष्य म ।

कलक्ता म धूल-धक्कड वहुत ह। वढती आवादी आर महगाई ने जन साधारण की कमर तोड कर रख दी ह। जनचेतना काफी प्रबुद्ध है। जावन क प्रति एक नकारात्मक विद्राही भाव ह सामान्यतया उत्साहहीन लोग यत्र तत्र सर्वत्र दिखाई पड़ते ह। अपने अधिकारा के प्रति सजग आर कर्त्तव्या के प्रति थाड़ी हल्की अवहलना वाल अपने विभाग म थोड़ा वहुत अनुशासन ह हा अभी थाड़ा समय आर लगगा सबको समझने म और खुद का समझान म ।

आशा है मैं अपनी लोकतान्त्रिक आस्थाओं के कारण उनके हृदय को जीत सकूगा। ये दक्षिणात्य समकक्ष सहयोगी हैं उन्हें तो किंचित्मात्र भी यहां अच्छा नहीं लग रहा है किन्तु मैं तो अपनी कविताओं के सहारे अपनी नाका पार लगा लूगा ऐसा विश्वास है। आपने मेरा मनोबल हमेशा बढ़ाया है।

*　　　　*　　　　*

नववर्ष मंगल मय हो

बंधु! आज टेलीफोन पर आपसे संपर्क का प्रयास किया पर नहीं हो पाया। जहां गेस्ट हाउस में मैं ठहरा हुआ हूं, वहां से चार कदम पर मैक्समूलर भवन है। वहां सायं प्रतिदिन कुछ न कुछ प्रोग्राम होता रहता है अतः थोड़ा थोड़ा मन अब लगने लगा है लेकिन आप मन से यह भ्रम निकाल दें कि मुझे कोई लवंगी मिल गई होगी। आज पन्द्रहवीं शती के नृत्यों को एक डविश दम्पति दिखा रहे थे - मनोरंजन तो था ही ज्ञानवर्द्धन भी हुआ।

लगता है अभी यहां की सांस्कृतिक धरा में घुलने मिलने में थोड़ा समय लगेगा। 25 जनवरी से 25 फरवरी तक मैं इलाहाबाद में संगम तट पर कल्पवास और अनुष्ठान करने की सोच रहा हूं। बंधु, अनुवाद वाला अध्याय प्रोफेसर को दे दिया होगा। मेरी पुस्तकों की जो प्रतियां बुकसेलर के पास पड़ी हैं, पड़ी ही न रह जायं आते-जाते आप उनसे पूछताछ कर लिया करें - भवभूति की दशा मेरी भी है कविता के क्षेत्र में कभी किसी के लिए लिखा था -

आज तुम्हारे बिन व्याकुल हूं,

कल शायद तुम पथ निहारो।'

समय जो चला गया वह लौटकर नहीं आता। काल का प्रवाह प्रबल है। आपने तो बहुत उत्साहित किया था कि उपन्यास लिखूं मैंने शुरू भी किया था लेकिन लगता है आधा-अधूरा ही रह जायगा। यहां हाथ से रिक्शा खींच जाने के अमानुषीय दृश्य से अपना संवेदनशील हृदय क्लेशित है। वैकल्पिक जीविका साधन देकर इस प्रथा को बंद कराने का संकल्प करना चाह रहा हूं - देखो कहां तक सफल हो पाता हूं। आप जैसे मित्रों की शुभकामनाएं साथ रहीं तो यह भी कार्य कोई कठिन नहीं है।

समय मिले तो उत्तर देना। मैं स्वयं प्रमादी हूं । महीनों बाद आज प्रियवदा को भी पत्र लिख रहा हूं ।

*　　　　*　　　　*

स्नेह से सराबोर आपका पत्र मिला । मेरे पास दिव्य दृष्टि तो नहीं है कि मैं भूत वर्तमान और भविष्य को पूरी तरह से देख पाऊं किन्तु कोई परावाद्विक

शक्ति के आधार पर मरा यह विश्वास दृढ़ म दृढतर होता ना रहा ह कि आप आर म पूर्वजन्म मे सहोदर थे। आश्चर्य हाता ह कि जिस दिन मुझ आपका याद बहुत आती ह उसा दिन शाम होत-होत आपका पत्र अवश्य मिल जाता ह।

आपका अभिन्न

*　　　*　　　*

वधु, यहा के जन जीवन पर विहगम दृष्टिपात किया। लोग सहृदय है सरस ह मानवीय सवदनाआ का आदर करते ह। म बम्बई के जीवन की नीरसता आर व्यावसायिकता भोगकर किसी प्रकार छह वर्ष वहा व्यतीत करक कलकत्ता आया हू आर ईमानदारी मे कहता हू कि मेरे इस निणय म कहीं कोइ त्रुटि नही दिखाइ देती। साचता हूँ कि मुझे कलकत्ता आ जाने का निर्णय बहुत पहले ही ले लेना चाहिए था खग।

यद्यपि यहा की जलवायु अभी बहुत अनुकूल नहीं ह तथापि जावन का सफलता का एक नूतन आयाम मिल रहा ह जेसा कि मन पहले लिखा कि यहा पर एक कुत्सित प्रथा हाथ से रिक्शा खींचे जाने वाली ह। मरा सवदेशनील हृदय यह देख कर कराह उठता ह वसे तो अभाव आर विपन्नता सर्वत्र ह किन्तु यह प्रथा हमारे समाज पर कलक है आर विश्वबधु कवि कुलगुरु रवान्द्रनाथ भारतीय मनापा क मधन्य प्रतीक विवेकानद एव आध्यात्मिकता क आलोक पुज अरविद महर्षि तथा परमहस की जननी धरती के साथ मेल नहीं खाती। पिछले एक माह मे जितने लोगा से बातचीत हुई सभी ने इसका समर्थन हा नहीं अभिनदन भी किया। आवश्यकता होगी तो हाई कोर्ट म एक याचिका भी दाखिल करूगा कि सविधान में उल्लिखित आर गारण्टीड मानव गरिमा के साथ यह स्थिति असगत ह अत असवधानिक ह। थोड़ा विलम्ब इसलिय कर रहा हू कि जा रिक्शा वाहक हे इनकी जाविका का स्रोत सूखने न पाये या ता उन्हे बैंका से बाइसिकिल रिक्शा का ऋण मिले या सरकार द्वारा कोई वकल्पिक साधन दिलाया जाय।

शेष पुन

आपका अपना

*　　　*　　　*

सप्रेम नमन। आपका पत्र मिला स्नेहिल सदेश भी पता नहीं बधुवर क्या बात ह दाड़धूप मे जीवन का रस ही सूखता चला जा रहा ह। वैचारिक क्षेत्र म वही वृद्ध सपर्क याग ही फलित हाता ह। आख तरस जाती ह नयनाभिराम सुदर आकृतियों को देखने के लिए। पुण्या का फल काफी विलम्ब स मिलना

ह। इसका कुछ गमन कीजिय न। लिखना तो बहुत था कभी फुरसत से लिखूगा। हा प्रयाग सगम म आपक आर आपक परिवार के लिये पाच डुबकिया अमावस्या का लगाइ थी। भाभीजा का नमस्कार कह द आर यह भी कह द कि इस आधे जीवन का क्या करू ⁄ कोइ रास्ता बताए। उपन्यास का नार्ग पात्र बनकर यदि वे अपनी आर स कुछ निरतर लिखकर भजता रहे ता शायद यह अधूरा उपन्यास पूरा हा जाये उनस पूछ कर बताइयगा। प्रतीक्षा म

आप सबका

* * *

वधु, सप्रम अभिवादन

पत्र मिला। अभी ता प्रोग्राम यह ह कि होली पर आपके पास आऊ। ना मार्च की रात्रि को आई सी फ्लाइट 215 जो कलकत्ता से साय चार दस पर प्रस्थान करती है और शायद दो घटे बाद वाराणसी हाता हुई आपके नगर तक पहुचती ह दो-तीन दिन आपके साथ बिताऊगा।

शिलाग गया था - वापसी उड़ान म गुवाहाटी के बाद गारा पवत शृखला के ऊपर वायुयान आया तो बादला के कारण विजिबिलिटी शून्य हा गई आर एयर पाकेट बन जाने से वायुयान कम्प करने लगा। फ्रिक्शन से अग्नि प्रज्वलित हो सकती थी आर 10 12 मिनट तक हम सब आतकित थे।— उसके बाद बच गय— कदाचित अभी कुछ अध्याय शष ह—— इसलिए।

दिनचया यहा पर भी एक साचे म ढल चुका ह। अत शन शन सब कुछ रास आने लगा है। भाभीजी से नमस्ते।

शेप मिलन पर

आपका

* * *

इस समय मन म अनेक तर्क-वितक उठ रहे है। नूतन विभाग जो मिला ह उसम अधिकतर लोग परिपक्वावस्था के हागे। यह वृद्ध समागम योग बड़ा प्रबल ह यह सोचकर कुछ उन्मन हा उठता हू अन्य दृष्टिया से तो ठीक ही ह।

वधुवर सस्कृत वाङ्मय कोश मे आपके पिताजी का चर्चा बड विस्तार स हुइ है- गर्व का विषय है। इसी कोश मे ग्रथकार खण्ड म मेर पूर्वजो की भी चर्चा देखकर हृदय उल्लसित हुआ आर एक बार प्रेरणा का स्रोत फिर हरा-भरा हो उठा साथ ही गर्व हुआ अपने पर कि हम लोग विद्वानो के वशधर है।

कलकत्ता स दुर्गापुर, मेदिनीपुर, बाकुड़ा शातिनिकेतन गगासागर जगन्नाथ

पुरा खड़गपुर आदि स्थानों की यात्रा हुई और पुरान्चल का दर्शन भी हुआ।

शेष फिर

आपका अभिन्न

•   •   •

बधु, बहुत दिनों बाद आपका पत्र मिला। इतनी सारी बातें लिपिबद्ध करता हूँ यदि उसमें कुछ असम्बद्धता आ जाय तो क्षमा करना।

नवीन भवन निर्माण पर आप दोनों को बधाइयाँ। आपकी खुशी में मैं अवश्य शामिल होऊँगा। आश्वासन देता हूँ।

इधर रामभक्तों का बहुत रक्त बहा - किन्तु बलिदानियों का बलिदान इतिहास में कभी व्यर्थ नहीं जाता। हत्यारों को माफ करना गुनाह है - जलियाँ वाला बाग और हिटलर का गैस चेम्बर काण्ड लोगों के दिमाग में अब भी आतंक पैदा करता रहता है। कभी रह रह कर धुआँ उठ ही जाता है।

मैं तो इस बात का समर्थक था कि तथाकथित मस्जिद की भी पूजा प्रारम्भ कर दिया जाय क्योंकि ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है तो मस्जिद वाले ब्रह्म की पूजा कहाँ निषिद्ध है। शायद हमारे पास अब कुछ करने को शेष नहीं बचा है इसलिए हम उद्दण्ड बालक की भाँति उत्पात मचाने की सोच रहे हैं।

बधु, संस्कृत और संस्कृति पर संकट के मेघ छा रहे हैं और इसके अतिरिक्त राजनीतिक प्रभुता की देहरी पर पहुँचा जाय और कोई उपाय नहीं है। यदि बी जे पी का टिकिट संभव हो तो बिटिया की शादी के बाद उसका भी अनुभव चखना चाहता हूँ। आपकी क्या राय है?"

राजनीति के क्षेत्र में मुझे ककहरा अथवा अक्षर ज्ञान भी नहीं है किन्तु जिस स्तर की बहस लोकसभा में सुनता आ रहा हूँ, उसे देखकर अफसोस होता है। हिन्दुओं का उदारवादी दृष्टिकोण निष्क्रियता की समकक्षी वृति में रखा जाने लगा है किन्तु लगता है कुछ होकर रहेगा। मेरे जीवन में अद्‌भुत बात होती रही है कौन जाने?

आज मेरी डायरी कहीं मिसप्लेस्ड है थोड़ा चिन्तित हूँ। चार पंक्तियाँ समर्पित हैं—

किस अभाव को डस लेने दूँ,
किस पीड़ा को पी जाऊँ?
किन तीरों का लेखा रक्खूँ,
किन घावों को सहलाऊँ?

म तो स्वय नहीं जानता

जयी पराजित क्या कहलाऊ ?

महासमर के बीच अभी हू,

किन शस्त्रों से कतराऊ ?

किस अभाव को डस लेने द ?

मने एक कार्य इन दिनो यह किया ह कृष्णानगर जो मेरे निवास से मिला हुआ है एक छोटा सा अतिथि कक्ष नियुक्त कर लिया ह साहित्य सस्थान की ओर से जिसमे कोइ साहित्य प्रेमी जो यहा आना चाहता हो आकर दो चार दिन रुक सकता ह। साहित्यिक मण्डली मे आप सभी को सूचित कर द आर कोई सुझाव हो तो बताय उससे पूर्व आप एक बार आकर यहा की व्यवस्था देख जाय। शेष फिर।

आपका

* * *

बधु, ऊधो मोहि ब्रज विसरत नाहीं की तर्ज पर आपके शहर पर कविता बना रहा हू। सर्वप्रथम आपसे क्षमा प्रार्थना उत्तर मे विलम्ब के लिए।

आपका स्नेहसिंचित पत्र मिला था।

बधु, आजकल टेनिस का क्रम टूट गया ह। साहित्य सृजन थोडा बहुत होता रहता ह किन्तु यहा पारखा लोगो की अवस्था दुःखी करती ह। कभी-कभी वहा भी यही दशा हुई थी। जिन सुमुखियो को सराहना चाहिए उनकी जगह उनके माता पिता अधिक सराहते ह। मै इस दुर्गुण का क्या करू ? इस दुर्भाग्य को कसे दूर करू ? कृपया बताए।

एक बार भाभीजी ने मुझ पर तरस खाकर पूछा भी था कि आप जो कुछ लिखत ह वे कुछ समझती भी ह या नहीं कहीं उनक सिर के ऊपर से होकर तो नहीं गुजर जाता ? जरा पूछ कर तो देख लीजिए।

उसी मनोदशा मे मने लिखा था -

तुम मुझको अपना कह न सके,

म आर किसी का हो न सका।

तुम सब कुछ पाकर हँस न सके

म सब कुछ खोकर रो न सका।

"किसी अदृष्ट नियति ने मेरे भाग्य म जो लिखा था कदाचित म अपनी

प्रारम्भिक रचनाओ म वरवस उस अभिव्यजित कर चुका हू- "तुम मान रहो या मुखर रहो म गीत सुनाता जाऊगा।'

उस दिन रत्ना साथ मे थी उनक साथ सगम तट पर गया था, रात्रि म जव माघ मला समाप्त प्राय था वह स्वय कहन लगी - कल तक यहा कितना चहल-पहल थी आज सव उखड़ा उजड़ा सा ह। मने कहा चलो मेरी तपस्या आर मरी साधना आज सुहागिन हो गई। असला वात यह ह कि हमार जीवन का मला भी उजड़ उखड़ चुका ह- अव तम्बू गिरना वाकी ह।

इसी थीम पर मैंने एक रचना कलकत्ता म की थी, आपका भी सुनाऊगा आपको पसद आयेगी। साहित्यिकता आर कलात्मकता के प्रति रत्ना का रुझान देखकर याद आया "आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक" आदि आदि।

इतना सव कुछ होन पर भा हँसता हू, स्वस्थ हू परिस्थितिया किसी का हँसी न छीन पाए, यह कामना करता रहता हूँ। सामने होता ता यही सव वक्वास प्रत्यक्ष म भी करता। अव आप सुरक्षित ह। सारे सघर्षों की निरथकता आर सार्थकता पर प्रश्नचिह्न मा दिखलाई पड़ता ह। समय की धूलि म सव कुछ दवा जा रहा ह। आप लागा का स्मृति ही अभी ताजा ह... वरकरार अपना मधुरिमा के साथ।

वधु, दुखित हूँ कि इतना अन्तराल हम लोगा के पत्राचार मे क्या आ जाता ह इसका उत्तर म स्वय अपने का नहा द पाता हूँ किन्तु एक वात निर्विवाद ह स्वय सिद्धवत् कि आप लोगा का स्मृति मेरी चेतना मे वद्धमूल ह- पत्र चाहे जितने ही अन्तराल से लिखू। तो वधु, आज समाचार पत्र म जव पढा कि श्रद्धामाता यश शष हा गई ता एक वार पुन इस आस्था को वल मिला कि मन की गति कितना तीव्र ह। मेरी ओर से भी श्रद्धा सुमन आप अर्पित कर ही देगे ऐसा विश्वास हे। मेरे ऊपर उनकी अहेतुकी कृपा थी। मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त था। अभी वस इतना ही वाद मे आर

आपका

* * *

आपका कृपा पत्र 1 सितम्वर का अभी अभी प्राप्त हुआ ह। वष्णादेवी आर भरो घाटी की पहाड़ा पद यात्रा स लाटा हू। अत्यत क्लेशित हूँ। आपने अधूरे उपन्यास की चर्चा करके मुझे फिर उक्सा दिया ह... क्या वताऊ... साचता हू सव कुछ अधूरा ही अधूरा ता ह...। सारा जावन ही कितना अधूरा ह। प्यार का प्रकरण प्रारम्भ भी नहीं हो पाया किसी को कुछ खवर मिले... उसस पूर्व ही ट्रासफर हो गया। मन के अरमान मन म ही दव कुलवुलाकर रह गये। मित्र

कभी कभी कोइ इतना पमद क्या आ जाता ह जिसे चाहन पर मजबूर हा जाना पड़ता ह लेकिन दूसरी ओर का जन तक खबर हो तब तक दुनिया ही बदल जाती है-

समिधकुश बीनते रहे हम
हवन बेला ही गइ।
मत्र चुनते ही रहे हम
स्तवन वेला ही गइ।
रथ सजाते ही रहे हम
गमन वेला ही गई।
समिधकुश बीनत रहे हम
हवन बेला ही गइ।

भटके मेघ कहीं अब बरसो सावन अब ता चला गया ह। मित्र जीवन की तमाम सफलताओ की जगमगाहट के बीच अवसाद और खिन्नता की काली छाया ही छाइ रहती ह शायद एको रस के कारण। तो फिर विदा...

आत्मीय

* * *

बधुवर। आपका स्नेह सिंचित पत्र मिला। उत्तर म विलम्ब हा गया क्षमा प्रार्थी हू। कई लोगा का पत्र लिखना ह, कारण यह कि मेरा इन्दार स बम्बई टासफर हो गया है। उस पर मेरी प्रतिक्रिया -

"जब जब साचा डग रख दू,
चलने का पगाम आ गया।

आपने ठीक कहा था टक्नालॉजी ट्रासफर की प्रक्रिया ह यह। शब्दा पर तो अधिकार आवश्यक ह ही साथ ही साथ भावा का उद्रक अपने आप काव्यात्मक स्रोत को धरती स चेतना की कोख से काव्यात्मक रचनाओ को उपजाता ह उसी समय मन लिखा था -

'छोड़ो गगा यमुना सगम
हस कहीं अब दूर चलो।

अन्न जल सब पहले स ही निश्चित होता ह आप लागा का सान्निध्य मेरी भावनात्मक पूजी ह। पता नहीं क्या इधर कई दिन स आप लागा का बहुत

याद आ रही ह - यह एकतरफा नहीं हो सकती इतना तो आश्वस्त हू ।

किनना पथ शेप ह आगे

कितना अभी आर चलना ह ।

आज इस गीत को लिखा यहा अमरकण्टक नर्मदा आर सान का उद्गम स्थल अत्यत रमणीक स्थान ह। पर्वतीय स्थल की गरिमा से समन्वित हिल स्टशन की तरह। मेरी इच्छा ह कि आप लोग एक वार इसे अवश्य दखे जाकर। अव तो आपकी नगरी मेरी चिन्तन की धुरी वन चुकी ह-- लिखना ता वहुत कुछ चाहता हू लेकिन फिर कभी।

आपका

* * *

वधु मेरा उपन्यास 'उसे क्या नाम दू अभी अधूरा पडा ह बीच म एक उपन्यास आर प्रारम्भ कर दिया जिसम नारी व्यथा के अनक पहलुआ का चित्रित किया था। इसी बीच एक क्सट भा वन गया जो आपको भेट करना ह। फिर से श्रीमती जी की कोपाग्नि का शिकार हो गया हू, उपन्यास की पाण्डुलिपि जिस 100 पृष्ठो तक लिख चुका था न जाने कहा गायब हो गई लगता है अग्नि की भेट चढा दिया गया है यह भी ता जावन ह... क्या करू ?

कारवा को किसने लूटा यह खुदा जाने मगर,

राह म नक्श कदम रहवर के पहचान गय।

आवास से निकले आर आपके यहा पहुच गये - यह सुख अव सुलभ नहीं - ते हि नो दिवसा गता' तथापि उस सुख का सारभ मरा स्मृतिया के गलियारा का आज भी सुवासित कर रहा ह। व्यक्ति दिन रात घटे मिनट सवको धार-धारे भूल जाता ह पर उन क्षणा का नहीं भूल पाता जो अत्यधिक सुख या दुख भरे रहे हा। आप लागा से पत्र द्वारा ही सलाप का सतु स्थापित करू यह सुख भी नहीं ले पाता हू - यह भी एक विडम्बना हे।

आजकल आवश्यकता स अधिक व्यस्तता हे। दो चार कमरा का मकान वनवा रहा हू। प्रत्यक अवकाश प्राप्त अधिकारी का यह रोग ग्रस्त कर लता ह कि एक मकान वना लने स उसके सुखा म अपार वृद्धि हो जायेगी।

किस किस व्यथा का वयान करू ... न तो आकाश के तार ताड़ पाया... न सागर का सुखा पाया... न हिमालय हिला पाया... ससार अपना गति स सचरित ह हम लोग नियति क हाथा के माहरे केवल इतराते रहत ह... विना मतलव। समय हर महल म सध लगाना रहता ह काइ चाह कितना भा न्हाटना रह। शप निमाण स्थल पर हा पूरा करूगा।

यहा पर एक न एक समस्या मुह फलाय खड़ी रहती ह। एक दिन पम्प चारा चला गया था - फिर स्लाव म पानी नहीं भरा गया फिर लिण्टन का माचा नहा गया - फिर यह सुनिश्चित करना ह कि पाइप आर चाखट चाग न चला जाए, आदि आदि।

सर्वापरि यह कि जक की पूजी दिन प्रति दिन क्षरित होती चला जा रहा है। सोचता हू कितने सुखी थे वे ऋषि मुनि जो वट-वृक्ष के नीच बिना किसी दबाव के जीवन यापन कर लत थ। प्रकृति ही आढ़ना प्रकृति हा बिछाना आर प्रकृति प्रदत्त ही खान-पान। काश वह समय फिर लाट आय__।

प्रियवदा का फान आया था। आप उस समझा द रला का स्वभाव__। बधु, व्यामोह के स्टेज तक तो म पहुचा था उसके आगे आर कुछ भी नहीं ___ मौसम यहा न पतझरा से- मधुमासा स छला गया ह।

मैं मूढ़ अपनी इच्छानुसार भूत का किसी करामात स एक बिंदु पर टिका दू, वर्तमान को फिसलने न दू आर भविष्य का वही तक प्रवेश करने दू जहा तक मै चाहू - आर ये तीना असभव ह क्योकि तीना म से कोई भी ता अपन वश म नहीं ह कहा तक लिखू आर क्या क्या लिखू ?

आजकल निमाण के सिलसिल म लगभग कीलायित हू जो मरी घुमन्तु प्रकृति क विरुद्ध ह फिर भा आपक आगमन का हृदय स स्वागत करूगा। हसिनी सहित आइए, इसम पूछन का क्या बात ह।

आपका अपना

*　　　　*　　　　*

इलाहाबाद के पास कुछ दर्शनीय स्थान ह। यहा स दा सा किलामीटर की दूरी पर राजदारी (मिर्जापुर अहरारा- चकिया होत हुए राजदरी) के वन विभाग का एक विश्राम गृह है वहा पर चद्रप्रभा प्रपात जलधारा ह - पवताय स्थल पर उछलती कूदती खिलखिलाती जलधारा ऐसा श्रुति मधुर सगीत का सृजन कर रही थी आर स्नायुमण्डल को इतना सुख प्रदान कर रही थी कि "अये लब्धम् कर्ण निर्वाणम्। वरबस स्मृति पटल पर उद्भासित हुआ आर "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे ह तर्ज पर एक रचना लिख उठी अपने आप

मधुरतम लय से सुहागिन

किस डगर से आ रही।

अमित ऊर्जा छलछलाती

किस नगर को जा रही।

दव बाला की मधुर मुस्कान

अधरा पर लिए

पत्थरो के बीच म भी

गीत अनुपम गा रही।

कविता बहुत लम्बी ह अनेक पत्र पत्रिकाआ म छप चुका ह लोगा क द्वारा सराहा भी गइ ह। कुछ दिना से लिखने का क्रम टूट गया था- अस्तु

कल जब म एक दूसरे प्रपात को देखने गया चचाई जल प्रपात तो बड़ा निराशा हुई- सोहणी पहाड़ी की शृखला म यहा से पश्चिम दक्षिण सवा सा किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह पर्वतीय प्रपात स्थली विगत वभव का भार मात्र वहन कर रही ह। जल क नाम पर थोडा सा ठहरा हुआ सड़ता हुआ सा पानी ह- जिससे पक्षा कतराते ह। बरबस याद आया सोहाणी पहाड़ी का उजडा सुहाग। विगत एव विगलित यह यावना स्थली आज मृत प्राय ह। जहा पहले वाहनो की पक्तिया लगती थी- वहा आज भूला भटका कोई पथिक ही दिखाई देता ह आर आकर वह आस बहाता हुआ चला जाता ह।

ऐसा सुरम्य स्थली का सुहाग जल ही तो हाता ह न। कदाचित् 'जलम् जीवनम्' इसालिए कहा गया ह। विन पाना सब सून भी प्रासगिक ह।

इकतीस दिसम्बर को म सेवा निवृत हो जाऊगा फिर एक झोला उठाकर कही भी किसी भी जगह जाकर आसन जमा कर वठ जाऊगा और जब जा ऊबेगा तो पुन आगे का यात्रा के लिए चल दूगा सभी वधना से मुक्त होकर किसी साझ का सावला सादर्य देखने हेतु।

आपका

क्ष त्र ज्ञ

■ ■ ■

दिन बुनता सूरज

अखबार गमले के पीछे पडा था। कितनी वार गातमी न हॉकर से कहा था कि भया तुम गेट से ही अखबार लॉन पर मत फका करो। उसक गिरन की आवाज सुनकर टॉमी उसका भुर्ता बना कर रख देता ह आर यदि उससे बच भी जाय तो लॉन की ओस से अखबार गाला हो जाता है। जसे तसे खोलो तो गीला होने की वजह से छोटे-छोटे टुकडे ही हाथ म आ पाते ह आर यदि इस स्थिति मे न मिला ता जनाब तीसरी स्थिति का सामना करने के लिए एक-एक गमले क पीछ आर हेज क ऊपर नाच दृष्टि घुमाते रहो। अब हॉकरा से भी भला कोई क्या कह आर कब तक कह। महीने की एक-दो तारीख को हा ये लोग पकड मे आते ह।

रोज राज अखबार ढूढने मे गातमी का बडी कोफ्त हाती ह। कई बार इस बात को लकर वह कन्हेयालाल को डाट भी चुकी ह। लेकिन या तो वह भूल जाता ह या दूर से फेकना उसकी आदत म शुमार हा चुका ह आर एक बार जा आदत पड़ गई वह जल्दी छूट नही पाती।

सुबह-सुबह ओस नहाई लॉन पर गातमी भाभी की नगे परा घूमना पुरानी आदत ह। इसी वहाने वे लॉन मे उग आई 'वीड्स' को भी नाचती-फक्ती रहती है। इस तरह से सुबह का एक घटा तो वे अपन प्यारे बगीचे को अर्पण कर हा देती ह। इस क्रम म उगते सूरज के दर्शन भी उन्ह हो जाते ह तब तक अन्य परिवारजन भी साकर उठ बठते ह। उन सबकी गुड मॉर्निंग उस हरे-भरे बगीचे के रग बिरग फ्ला का क्यारियो के बीच ही होती ह क्योकि जहा पत्नी ह वही पति आर जहा ये दो, वहा इन दोनो के तीनो।

राज की तरह गातमी अखबार ढूढ कर लॉन पर बिछी कुर्सी पर जा बठा। तब तक झरना आकर टेबुल पर चाय की ट्रे रखकर चली गई।

गातमी ने अपने लिए चाय बनाई। केटली म से सुनहरी खुशबू वाली धार कप म पड़ रहा थी। मिल्क-पॉट से ताजे गर्म दूध की साधी खुशबू भाप के साथ वातावरण म फल रही थी। चाय का पहला सिप ले वे गाल, गुड़े मुड़े अखबार को खालन लगी अखबार के पहल ही पन्ने पर बडे-बड़े अक्षरा म लिखा था- 'श्रीमती श्रद्धा देवी की हत्या- लाश नाले म पड़ी मिली, खबर पढत

ही वह चाय वाय पीना भूल कर छपी हुई खबर को पूरा की पूरी बिना पलक झपकाये पढ़ गई।

एक बार तो उसे अपनी आखो पर विश्वास ही नहीं हुआ इसलिए उसी खबर को उन्होंने दोबारा से पढ़ी शरीर में विशेष प्रकार की झुरझुरी सी फैल गइ। दिमाग सुन्न हो गया... ए... एसा भी हो सकता है... ? अच्छा भला व्यक्ति अभी है अभी नहीं है... श्रद्धा के तो नाखून में भी रोग नहीं था... फिर एसा कैसे हुआ... हत्या... उसकी हत्या कौन करेगा उसका तो कोई दुश्मन भी नहीं था... तो क्या उसने आत्महत्या कर ली पर क्यो ?

अभी दो दिन पूर्व ही तो हम लोग मिले थे... तब तो भली चंगी थी... तन से भी और मन से भी न हारी न बीमारी... फिर यह बात कहा से आ टपकी ? गौतमी को श्रद्धा के साथ बिताए एक-एक क्षण याद आने लगे।

न जाने कितनी दीन दुनिया की बात उन दोनो में आपस में हुआ करती थी। श्रद्धा जैसी गंभीर, विवेकशील और सदगुण सम्पन्न महिला उसने आज तक नहीं देखी थी। अखबार पर आसू की बूंद टपाटप गिर चली जा रही थी। दिल कैसे रोता है आज वे पहली बार महसूस कर रही थी... निःशब्द मौन निस्पंद सी गौतमी कुर्सी के हत्थे पर हाथ टेक जड की भांति बैठी रही। अकस्मात के सदमे से उसका मस्तिष्क धीरे-धीरे सुन्न पडता जा रहा था।

मिस्टर चन्द्रकान्त फ्रैश होकर न जाने कब गौतमी के पास आ खडे हुए इसका उसे पता भी न चल पाया। ... यह क्या... तुम्हारी चाय तो ठंडी हो गई... और मक्खी भी तैर रही है... कहा खो गई ?... तबीयत तो ठीक है न ? कहते हुए उन्होंने पत्नी के ललाट को छुआ सहानुभूति भरा स्पर्श पा गौतमी की तन्द्रा टूटी... पलको पर रुके आसू और भी वेग से प्रवाहित होने लगे। चन्द्रकांत भौचक्के से गौतमी को देखते रह गये कि आखिर इसे हुआ क्या... ? तभी गौतमी ने अखबार उनकी ओर बढा दिया और वापस बुत की भांति अपलक पति की ओर देखने लगी।

चन्द्रकांत ने अखबार लेकर नजर दौडाई तो हैडलाइन पढकर चकित रह गये अविश्वास से उनका मुह खुला का खुला रह गया...। परसो ही तो मैं प्रोफेसर नीलमणि के पास दो घंटे बैठ कर आया हू। उस दिन वे कहीं जाने की तैयारी में थे। तो क्या उनकी अनुपस्थिति में मिसेज मणि का 'मर्डर' किया गया है ? सुनो जो कहा कोई चोरी चकारी का मामला तो नहीं... ? कलीग होने के नाते हमें उनके घर चलना चाहिए क्योकि नील तो बाहर गये हुए है और श्रद्धादेवी... वह तो बेचारी मृत पडी... वह भी घर मे नहीं और कहीं...। गौतमी उठो उनके घर चलते है। गौतमी जैसी और जिन कपडो मे थी... उन्हीं

कपड़ो म चन्द्रकात के साथ स्कूटर पर वठ दो तीन सड़क आर चौराहा को पार कर प्रोफेसर के घर पहुच गइ। चन्द्रकात ज्याही स्कूटर स उतर कि वहा खड़े पुलिस वाल उनकी ओर ही मुड गय—पुलिस का अफ्सर चन्द्रकात स बात करने लग गया। आर गातमी उस सूने घर की आर आख फाड़-फाड़ कर दखती रहा जहा उसका श्रद्धा के द्वारा दिल खाल कर हमशा स्वागत हुआ करता था। लकिन आज दरवाजे पर ताला पड़ा हुआ ह—। घर की वीरानी दख गातमा फफक कर रो पड़ी।

उन लोगा की बातचीत से मालूम पड़ा कि लाश अस्पताल म मुर्दाघर म रखी हुई ह। उनके पति के आन की प्रतीक्षा की जा रही ह जा वाइवा लेने जोधपुर गय हुए ह—। यह घटना उसी रात की ह। वाकी पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने क बाद पता चलेगा। पुलिस वाले ने सारी बात चन्द्रकात का सक्षेप मे वता दी।

"हत्या— अरे साहव उसका तो कोइ भी दुश्मन नही था वह तो वहुत सीधी–सादी महिला थी। — न कहा आना न कही जाना ? सिफ अपने काम से काम रखन वाली। अखवार की खबर पढ़ने से लकर श्रद्धा के घर तक आने तक मान गातमी पहली वार वोला थी— पहली वार अपने भाव विलख कर व्यक्त कर रही थी।

उनमे से एक वुजुग से पुलिस वाले ने कहा— यही ता हम लोगा को आश्चर्य आ रहा ह कि मारन वाले ने कोई सुराग तक नहा छाड़ा लाश पानी म पडी था— लूट खसोट अथवा वलात्कार जसे कोई चिह्न वॉडी पर नहा पाय गये। जो गहने जेवर आम महिलाए प्रतिदिन पहनती ह वे भी उनके शरीर पर ज्यो की त्यो ह— उनके पति दूर से लाट तो पता चले कि कही उनको स्लीपिंग वॉक की वीमारी तो नही थी ? आप वता सकती ह क्या ? —पुलिस अफसर ने गातमी की तरफ मुखातिब होकर पूछा—। श्रद्धा न ऐसी काई आदत का जिक्र तो कभी नहा किया न कभा प्रोफेसर ने ही। गातमा ने तपाक से जवाव दे दिया।"

'लाश नाल म पड़ी होने की खबर आपको किससे मिला इस वार चन्द्रकात ने अफ्सर से पूछा। अपने हाथ का डडा इधर-उधर घुमाते हुए जीप क सहारे टिक कर खडे हो वह वोला - "कागज वीनने वाले एक छोकरे से—।' —तभी एक जवान पुलिस वाला हाथ मे जजार वधा— पुछ कटा कुत्ता लेकर आ गया आर अपने अफसर को सेल्यूट मार कर वही खड़ा हो गया। कुत्ता बुरी तरह स हाफ रहा था लगता था दोना काफी मशक्कत करके लाटे ह। दोनो थके हुए स लग रहे थे। उनम आपस म कुछ बाते हुई जिसे ये पति-पत्ना सुन

नहा पाये। दो को छाड आये हुए मारे सिपाही जीप म भर कर वापिस चले गये उनक जाते ही धीरे-धारे वहा से भीड भी छट गई।

चद्रकात आर गातमी के परिवार मे आज सारे दिन सिर्फ श्रद्धा ही श्रद्धा की बाते होती रहीं- सभी का दिमाग चक्करघिन्नी सा हो रहा था कि आखिर यह सब कसे हो गया__ कान ह मारने वाला ? क्या मार डाली गई श्रद्धा देवा ? मारने वाला कान हो सकता ह__ ?

इस प्रकार दिन पर दिन वीतते गये महीना पर महीने गुजरते रहे अखवार मे इस हत्याकाड को लेकर रोज ही कुछ न कुछ छपता रहा__ सिफ अटकल बाजिया मात्र आर एक दिन ऐसा भी आया कि श्रीमती श्रद्धा देवी प्रकरण ही समाप्त हो गया।

*　　　*　　　*

छह माह बाद

अखबार के फ्रट पेज पर छपा था छ माह पूर्व हुई एक हत्या के सुराग मिले श्रद्धा देवी के पति को गिरफ्तार कर लिया गया ह। इस खबर को पढकर चन्द्रकात गातमी के पास किचन म लम्बे डग मारते हुए चले आये_ सुनो तुमने आज का अखबार पढा कि नहीं ?" दूसरी तरफ से उत्तर था 'नहा__ आज नहा पढ पाई__ क्या कोइ खास खबर ह ? __ हा खास ही ह__ प्रोफेसर नीलमणि गिरफ्तार कर लिए गये।' चन्द्रकात ने कहा।

गातमी ने आटा सन हाथो स ही अखवार लपक लिया आर एक श्वास मे खबर पढ गई__ नही नहीं__ भला प्राफेसर क्यो अपनी पत्नी की हत्या करेगा_ वह तो श्रद्धा को बहुत चाहता था देखा नहा था तुमन जोधपुर से जब लाटा था तब लाश को देखकर कसा पछाड खा-खाकर रोया था ?__ ये पुलिस वाल भी अजीब ह__ जब काई नहा मिलता ता पति को हा दबोचा करत ह खानापूर्ति के लिए।

इन छह महाना के दारान सहानुभूति के नाते चन्द्रकात पत्नी सहित कई चार नीलमणि से मिलने उसके घर जा चुके थे। ऐसे ही एक दिन जब वे दोना टहलते घूमते शाम को उनके घर पहुचे ता देखते क्या ह प्रोफसर नीलमणि अपन कुत्त को दूध ब्रेड खिला रह ह आर वह खाने को तयार ही नहीं। इन दाना को आया दखकर नालमणि ने गोदी से उसे पुचकारते हुए जमीन पर उतारा आर इन दोना को आदर सहित ड्राइगरूम म बठा कर हाथ धोने बाथरूम का ओर चले गय।

गातमा न उस पामेरियन पप को देखकर नालमणि स पूछा "यह पहल ता नहा था आपके पास ? अभी खरीदा है क्या __ बड़ा सुदर है।"

नहीं भाभी जी मने खरीदा नही ह। मरे एक विद्यार्थी ने मुझे दिया ह श्रद्धा जब जीवित थी तभी उसने मुझसे एक पप लाने की इच्छा व्यक्त की थी वह तो अब ह नहीं पर उसकी मन की इच्छा पूर्ति के लिये म मना नहा कर सका आर ले आया इसे घर। लाकर सबसे पहले उसका फोटू के सामन इसको वठा दिया। नील ने भारी गले से कहा साथ ही उसने अपनी आखे भी पाछ ली यह शो करने के लिए ताकि इन लोगो को पता चल जाय कि वह राया ह।

लेकिन प्रोफेसर साहब यह तो बिना देखभाल के मर जायेगा। आप तो दिन-दिन भर गायब रहते हे न जान कहा कहा आर सुना ह_ रात का भी दर से घर लाटते ह ? न हा तो इसे हमे ही दे दीजिये हम पाल लगे, गातमी उस सफेद झबरे को हाथा मे उठाकर उसकी पीठ सहलाते हुए बोली।

"वाह भाभी जी_! आपने तो मेरे मुह की बात छीन ली। म ले ता आया था नरेश के घर से। लेकिन बाद म दूसरे दिन से ही पछताने भी लगा था कि अपना ही पेट की रोटी के लाले पड रहे ह उस पर इस बेजुबान को कान पकाये आर कौन खिलाये ? आज से यह आपका_। आप बठ इस बात पर आज आपको ब्रेड के पकाडे बनाकर खिलाता हू। म भी भूखा हू। प्रोफेसर ने हसते हुए कहा।

आपको बनाने आते भी ह_ ? गातमी ने प्रश्न किया। "हा भाभी जा। बस यही चीज ह जा म बना लेता हूँ बाकी कुछ नहा। पेट भर जाता ह आर स्वादिष्ट भी लगता ह।

अच्छा तो बनाइये, आज हम लोग खाकर ही जायेगे। हा प्रोफेसर साहब इस पप का क्या नाम रखा हे आपने ?" गातमी ने पूछा।

"डिक्की" नीलमणि ने छाटा सा जवाब दिया आर किचन की ओर बढ गये। क्या जी ये डिक्की का मतलब क्या होता ह ?' गातमा ने चन्द्रकात से प्रश्न किया।

चन्द्रकात ने टबुल पर पडी पत्रिकाओ मे से एक उठा ली आर पन्ने पलटने मे मशगूल हो गया। शात वातावरण होते ही गातमी को श्रद्धा की याद पुन सताने लगी। वह उठी आर प्रत्येक कमरे मे घूमने लगी, एक कमरे के कोने म श्रद्धा द्वारा बनाये चित्र रखे हुए थे। उनपर धूल की पर्ते छा चुकी था। जिसे देखकर गातमी को बहुत दुख हुआ। सोचने लगी जो वस्तु एक के लिये अमूल्य होती ह वहा दूसरे के लिये निरर्थक क्यो हो जाती हे ? श्रद्धा के इस शाक को नीलमणि ने हमेशा हेय दृष्टि से ही देखा था। जब तब कहा भी करता था_ कि यह सब फिजूलखर्ची है_व्यर्थ मे पेसा बहाना ह। इसीलिए श्रद्धा ने

शायद बाद वाले चित्रो म सिफ दो ही रगो को महत्व दिया था_काला आर सफेद_सुख दु ख_ रात आर दिन _ रोशनी आर अधेरा।

इन दो रगो से ही उसके चित्र क्स मुह बोलते से लग रह थे। कुछ प्रोर्टेट थे तो कुछ लण्डस्केप। आखिरी चित्र जो अधूरा था_ शायद मात के आगमन से कुछ क्षण पहले ही बन रहा होगा। शायद खींचा-तानी हुई जसा लग रही था। ब्रुश से कुछ आडी तिरछी रेखाए खिच गइ थीं। चित्र मा बच्चे का था। मा अपने नन्ह से शिशु को स्तनपान करा रही थीं। आखा म ममत्व का अमृत झर रहा था_ एक नाजुक गदराई सी नन्ही हथेली मा के हाथ म समाई हुई थी। _चित्र के इतने सुदर भाव देखकर गातमी की आखे भर आई। उसका मन बोल उठा लगता है श्रद्धा मातृत्व सुख की लालसा मन मे लिए हा इस ससार से विदा हो गई। _बेचारी_। सब सुख लेकिन_ अकेलेपन की घुटन स सराबोर जीवन_।

एक बार गातमी ने ही चलाकर श्रद्धा को तनिक सा छेडा था। _श्रद्धा बुरा न मानो ता एक बात कहू_ तुम किसी बालक को गोद क्यो नहीं ल लता। उससे तुम्हारा अकेलापन भी मिट जायेगा आर बुढापे का सहारा भी मिल जायेगा। _गातमी की बात सुनकर श्रद्धा हँसी थी_ उसकी हँसी क्या थी जसे किसी ने फूला की बरखा कर दी हो_ जसे किसी ने काई रागिनी छड़ दी हा। हँसा म एक लय था एक मीठी ताल थी_। उस दिन गातमी समझ गई था कि यदि ध्यान दिया जाय तो प्रत्यक वस्तु म एक आर्ट होता ह इसान की प्रत्यक हरक्त मे एक रस का उद्रेक हाता ह।

व्यक्ति क सुसस्कृत हाव-भाव से हा व्यक्तित्व का निमाण होता ह। हा तो जब उसकी हँसी का वग कुछ थमा तो उसन प्रतिउत्तर म कहा कि भाभाजी एक बात बताऊ सुनकर शायद आपका आश्चर्य आयगा आर आप हसगी भा_ बताऊ मुझे जब प्यार का जोश उमड़ता ह तो म इन्हे हीं (नाल) उसम सराबार कर दती हूँ। हम दोना के बीच अगर तीसरा आ गया तो मरा प्यार बट जायेगा म नील को बहुत बहुत प्यार करती हूँ_ मेरा ससार वही ह_ म उसके बिना अधूरी हूँ_ मुझे एक दिन का भी बिछाह बदाश्त नहा ह।

इनके कही चले जाने पर एसा लगन लगता ह जसे मेरे प्राण ही खिंच कर इनक साथ चले गय हा। इनक पीछ मने अपन प्रियजना तक को भुला दिया ह। तब गौतमी न कहा था कि अभी नइ हो जब आरत क साथ एक दा चिल्ल पो लग जाती ह तब सब प्यार-व्यार धरा रह जाता ह।

चाय की ट्र लिय नील गातमी क सामने आ खड़ा हुआ। "चलिये भाभा

जी_ गरमागरम पकाड़ खाइय आर बताइये कि कसे बने ह। नील की आवाज सुनकर गातमी चाक कर, उठ खड़ी हुई। पकाड़े सचमुच स्वादिष्ट बने थ। अचानक नील का चेहरा दखकर उनका हृदय भर आया- कितना अभागा ह यह आदमी_। टूटकर चाहने वाली पत्नी को विधाता ने झटक स खींच लिया। _ अभी तो इन दोना न दुनिया भी नहीं देखी थी_ शादी के कवल आठ साल हा तो हुए थे__।

चन्द्रकात को उठते देख वह भी पस उठाकर चलने का उद्यत हो गई। जाते जाते पूछ बठी_ "कुछ पता चला_?"

'भाभी जी जब कोइ हत्यारा ह ही नहीं तो पता कैसे चलेगा_ लगता ह श्रद्धा ने उस दिन जरूरत से ज्यादा नींद की गोलिया खा ली हागी क्याकि अक्सर वह कहा करती थी कि आप जब भी टूर पर चल जाते ह ता म नींद की गोली खाकर सोती हू। _मुझे एसा मालूम होता कि सचमुच मे वह ऐसा करती ह तो म बार बार का यह टूर का सिलसिला ही खत्म कर दता_ कहते कहते नील एक बालक की भाति सुबक कर रा पड़ा। साथ म गातमी भा रो दी_ चन्द्रकात की आखे भी सजल हो उठी।'

जैसे तसे गातमी ने नील का ढाढस बधायी आर बिखर कप-प्लेटा का टे मे रख रसोई म ले जाकर सिक म धा पाछ कर रख आई। लाट कर बोली-- "नील भाई आपका जब भी घर का पका खाना खान का इच्छा हो फारन हमारे यहा चले आया करे, सकोच की कोई बात नहीं वह भी अपका ही घर ह।

उनको जाते देख डिक्की_ गातमी के परा म लिपट गई। अपनी नाजुक जीभ से गातमी के पर चाटने लगी। उसके स्पर्श से गातमी का हृदय ममता से भर उठा। उसने फौरन डिक्की को उठाया आर कलेजे से लगा लिया-- 'चल बेटा आज से तू मेरी हुई। उसका जाते देख- नीलमणि न फारन प्लास्टिक की थली म उसकी दनिक इस्तेमाल की चीज भरकर चन्द्रकात जी को थमा दी।

इधर पुलिस वाला की कार्यवाही चोरी-छिपे चल ही रहा थी। उन्हें किसी व्यक्ति के माध्यम से पता चला था कि प्रोफेसर नीलमणि का अपनी कलीग मिस वसुधरा से लम्बे समय से चक्कर चल रहा ह। इस बात की जानकारी मिलते ही पुलिस वालो के कान खड़े हो गये थे। बस फिर क्या था इस घर आर उस घर, दोनो पर ही सादा वर्दी मे पुलिस वाले हर आने जान वाले पर नजरे रखने लगे।

एक दिन मिस वसुधरा के नाकर से बातचीत की गई तो उसन कहा साब का बताइ_ बस मुह ना खुले, तब ही तक ठीक ह। आर वह अपने काना म

हाथ लगा कर (जैसे मानो डर गया हो) सीढ़िया चढ़कर गायब हो गया। एक दिन वही नाकर गली के नुक्कड़ पर किसी व्यक्ति के द्वारा रोक लिया गया। उस कुछ समझाया। बुझाया गया और उसने स्वीकृति म अपना सिर हिला दिया। उसके बाद वे दोनो एक दूसर के पाछ पीछ चलन लगे। सीढ़िया पार करके उस भिड़ा हुआ दरवाजा खोला आर हाथ जोड़कर गभीर मुद्रा म आखा को नम करके खड़ा हो गया।

वसुधरा का ध्यान जब अपने नाकर पर गया तो वे हतप्रभ रह गईं। आज से पहल उसन कभी इस मुद्रा (प्रकार) म बात नही की थी उन्होने हाथ मे लिए पन को बद करते हुए पूछा 'क्या बात ह सरवतिया ?"

मास्टरनी जी ये आदमी मेरा चचा भाई ह गाव से आया ह— बताय (बता) रहा ह कि मा सखत बीमार ह अगर आप एक हफ्ता की छुट्टी दे द तो मा स मिल आऊ आर बाल बच्चा का भी सभाल आऊ ?

मिस वसुधरा ने उस नवागत का पनी दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देखा जस कि भापना चाह रही हो कि उसके नाकर सरवतिया की बाता म कहा तक सच्चाइ ह।

फिर धीरे स बोली वह तो ठीक है सरवतिया पर तुम तो जानते हा हो कि एग्जॉमिनेशन म मरी ड्यूटी लगने वाली ह। मा बापू जी को कान सम्हालेगा घर बार बिखरेगा सो अलग नही म तुम्हे नहा जान दूगी। लो ये पस गाव भज दो इसके हाथ। कह कर मिस वसुधरा न चट्ट से पर्स खोलकर सा सा के पाच नोट निकाल कर सामने मेज पर रख दिये।

सरबतिया वसुन्धरा की दो टूक बात सुन उसके पेरा के पास बठ गया नहीं—नही दिदिया (दीदी) ऐसा गजब मत ढाओ— मा जसी चीज दुबारा नहा मिलती। सवा से ठीक हो गई तो ठीक ह आर अगर भगवान जी टढ़ (टढा) ह तो अत समय के दरसन (दर्शन) से वचित ना करो। हम तुम्हार पाय परत ह।"—

"रही बात काम की सो ये झबर करेगा, इसे हाथ पर जोड के किसलिये लाया हू।" कहते हुये उसने कोहनी से झबर को टहूका मार दिया। —अरे भैया झबर, मरी दीदी देवी ह तुम्हे बडे लाड-दुलार से रखेंगा। वसुधरा की तरफ मुडकर बोला दीदी ये पहले स्वीट ड्रीम होटल मे खाना बनाता था अब छटनी म निकाल दिया गया ह। आप चाहो तो इसके बारे मे अभई फोन पे पूछ लेओ।

मिस वसुधरा ने सचाई जानने के लिये डायरेक्ट्री में से होटल का फोन

नम्बर ढूढकर फोन किया। वहा से संतोषचद्र उत्तर पा सरवतिया से कहा "ठीक हे तुम जा सकते हो। लो य पसे भी लेते जाओ आर जल्दी लाटना। आर कहीं वडी अडचन आ जाये तो किसी से चिट्ठी लिखवा देना।' सरवतिया एक थले मे अपनी धोती गमछा आर दोनो कमीजे ठूस के वसुधरा के पर छू सीढिया उत्तर गया। झवर भी पीछे-पीछे गया उनमे आपस मे फिर कुछ देर तक बात होती रही।

नय नाकर झवर ने दा ही दिन मे घर बार इतनी कुशलता से सम्हाल लिया कि घर के सभी सदस्य उससे खुश हो गये। सरवतिया से ज्यादा अच्छा काम आर खाना पा, वसुधरा भी निश्चिन्त हा गई। जब समय से पहले सब चीजे तयार मिले तो फिर झझट या परेशानी की आवश्यक्ता ही नही।

झवर आर सरवतिया म जमीन-आसमान का अतर था। वह वसुधरा को दिदिया कहता था तो झवर मेमसाब बोलता था। प्रोफेसर नीलमणि को देखते ही सरवतिया की त्यारिया तन जाया करती थी आर झवर महाशय सेल्यूट मारते। इससे ये दोनो ही बहुत खुश थे। इस प्रकार एक एक करके दिन बीतते गये। सरवतिया तो नही लौटा पर झवर के पर उस परिवार म धीरे-धीरे जमते चले गये।

वसुधरा को कॉलेज से लाटते हुए झवर ने देख लिया था। वह काम स थक कर बालकनी की धूप म सुस्ता रहा था। फारन उठा आर अपना चटाई को गाल करके कोने म खडी कर दी फिर चाय बनाने के लिए रसोई की आर मुड़ गया।

वसुधरा कमरे म आई। चप्पल कोने मे उतार दी आर हाथ की किताबे आर पर्स टेबल पर पटक सोफे पर ही पसर गई ? लेटे लेटे ही उसकी निगाह कमरे का निरीक्षण करने लगी। सब चीजे साफ सुथरी, चमाचम चमक रही थीं। बेतरतीब पड़ी किताबो की धूल झडकर कायदे से अलमारी मे सजी हुई दिखीं। सालिंग फन चमचमा रहा था। फिरोजाबादी काच का झाड़ दमदमा रहा था। साफ सफाई देख उसके मन मे प्रसन्नता भर उठी। उसने मन ही मन महसूस किया कि बूढे नाकर से जवान नाकर ज्यादा काम का साबित होता है।

झवर ने चाय नाश्ता लाकर मेज पर रख दिया। उसे देखते ही वसुधरा ने मुस्कराते हुये उसे शाबाशी दी तो वह वहीं कमरे में बिछे हरे कालीन में उकडूँ बैठ गया और बोला- मेमसाब आप बहुत थक जाती हे न।' सहानुभूति से भरे शब्द वसुधरा को अच्छे लगे, वह सोफे से उठती हुई बोली - "हा, थक तो जाती हू- झवर, आज के विद्यार्थिया को पढाना सहज काम नहीं ह। —दिन भर

मगजमारी करत रहा... पढ़ाइ म ता आज क नौजवान सीरियसली लत हा नहीं... व पढ़न नहा बल्कि उन्ह दखकर ता एसा लगता ह जस व लोग पिकनिक पर आ रहे हा। खूब सज धज। सिफ कपड़ा पर हा ध्यान। वसुधरा कॉलज की खाज झवर क सामन निकालता रहा। झवर चुपचाप उठा सुनता रहा फिर चाय की टे लकर चुपचाप चला गया।

रात का सोने से पूव वसुधरा न अपना डायरी ढूढा ता उस कहीं नहीं मिला जिसे वह रोज लिखा करता थी। वसुधरा न चिल्लाकर झवर का आवाज दा... अपना नाम सुन झवर मा-बापू क कमरे म स भागता हुआ आया आर बोला क्या बात ह ममसाब?" अर भाई ढूढ ढूढ कर हार गइ मरी डायरी नहा मिल रही मरे कमरे की सफाइ अफाइ मत किया करो जसा ह वैसा ही पड़ा रहन दो मुझ काई चीज ढूँढना अच्छा नहीं लगता ... । न मरे पास इतना समय ह। वसुधरा न झुझलात हुए कहा।

कमाल ह दीदा दोपहर म ता आप शाबाशी दे रही थी आर अब... मइ म पढा लिखा ता हू नही जा किताब आर डायरी म कुछ फर्क कर सकू। उसने स्टूल पे चढ़कर कुछ किताब निकालकर दिखा दी उन्हा के बीच मे डायरी भी रखी हुइ थी। अपनी चीज का सुरक्षित पा वसुधरा का थोड़ा सताप मिला। चढा हुआ गुस्सा उसक अपढ आर भोले भाव को जानकर ठडा पड़ गया।"

इसम क्या लिखती ह दीदी। झवर ने भाल भाव से पूछा।' झवर, जो जो घटनाए दिन भर म घटता ह न व ही लिखती हू- आर साथ ही अन्य बाते भी। तू भी लिखा कर झवर। कहकर वसुधरा हस दी।

क्या मजाक करती ह दीदी... हमारे गाव म लिखन पढन की जरूरत नहा पड़ती, हमे ता सब कुछ मुह जबानी याद रहता ह आर अगर काई परेशानी होता ह तो पचायत सुलटा देती ह। हम हा पढे-लिख होते तो जगह-जगह जाक बतन चाका क्या करते?"... लोगा की ललकार-फटकार क्या खाते?

यह डायरी नये वर्ष की थी जिसे प्रोफसर नीलमणि ने वसुधरा को भट की था। वह हर नये वर्ष के शुभागमन पर वसुधरा को डायरी ही भेट किया करता था। तब नीलमणि को कहा पता था कि यही डायरिया उसे एक दिन फासी के फदे तक ले जायगी।... उसक चमचमात भविष्य पर काला कबल डाल देगा।

वसुधरा के मकान के एक फ्लट मे मिस छम्मक छल्लो भा रहा करता थी। वे अक्सर साढिया चढ़ते या उतरते समय कभी प्रोफेसर से ता कभी वसुधरा स टकरा जाया करती थी। जब भी इन दोना को एक साथ दख लेती तो एक व्यग्य भरी कुटिल मुस्कान फक, आगे बढ जाता। यद्यपि इस कहानी म

वे खलनायिका नही थी फिर भी पुलिस का इनकी मदद बहुत मिली थी। ये कान थी कहा नाकरी करती थी, कान सी भाषा बोलती थी वसुधरा न कभी जानने की कोशिश नहीं की न किसी और ने ही।

सचाई तो यह थी कि मिस वसुधरा को अपन बारे म अन्दर ही अन्दर थोड़ा सा गुमान था कि मैं बहुत सुदर हूँ म योग्य हू, म समर्थ हू। बस इन्हा अहकारा ने उन्हे कभी किसी के साथ सहज नही होन दिया था। न कभी काई महिला उनकी पक्की दास्त ही बन पाइ। हा उनके पुरुष मित्र अनक थे। एक आरत होत हुए भी वह अन्य आरता को हय दृष्टि से देखा करती।

आज भी यही हुआ कॉलज से लाटकर नीलमणि आर वसुधरा न जाने किस बात पर हसते खिलखिलाते हुए चल आ रहे थ कि मिस छम्मक छल्ला से सामना हो गया। नीलमणि उसे देखते ही चुप हो गया। नीलमणि न अदर ही अदर एक माटी सी गाली छम्मक-छल्ला को द डाली। वसुधरा भी उस अनदखा कर आग बढ़ गई। बाद म अपने कमर म जाकर नील स बोली हमेशा ही बिल्ली की तरह रास्ता काट जाती ह... जसे इतजार मे बठी रहती हो।

कमरे म पहुचकर नीलमणि इत्मिनान स सोफे पर बठ गया आर टेबुल पर रखी मग्जीना को उलट पुलट करके देखने लगा। करीब 10 मिनट के बाद वसुधरा फ्रश हाकर आ गई। उसक बाल खुले हुए थे जिनम अभी-अभी ब्रश किया सा लगता था। बाटिक प्रिंट का हल्की आसमानी कॉटन का साड़ी उसक छरहरे शरीर पर बहुत खिल रही थी। सट की भीनी सुगध स कमरा महक उठा। अचानक नील ने वसुधरा से पूछा- अब तुम्हारा क्या विचार ह वसु ?...

"किस बात का विचार ?" वसुधरा न प्रश्न का उत्तर प्रश्न म ही दिया।

'अरे भाई मेरी जीवन सगिनी बनने का।

ओह इसक बारे मे तो मने कभी साचा तक नहीं।

'आह हो देवी जी। कभी तो सीरियसली बाते किया करो... एक म हू, न जाने कितने जाखिम उठाकर, न जाने कितने पापड़ बेल कर रास्ता साफ करके आया हूँ। आर तुम एकदम ठडा बर्फ की भाति के जवाब देती रहती हो।'

नील... की बात सुनकर वसुधरा की आखे फटी की फटी रह गई एक क्षण के लिए, बल्कि क्षणाश भर के लिए उसका चतन्य मस्तिष्क एकदम सुन्न पड़ गया लेकिन अपने को सयत करते हुए वह बोली... 'तो क्या तुमने... ?

वसुधरा की इच्छा हुई कि वह चीख चीख कर सारे मुहल्ले का इकट्ठा कर ले कि दुनिया वाला देखो मेरे घर पर एक हत्यारा घुसा बठा ह। उस समय नील ने बुरी तरह से वसुधरा का अपन आगोश म जकड़ रखा था। वसुधरा

भीतर स भयभीत लेकिन ऊपर स सयमित हाकर नील के गाला का स्पश करती हुई बाली- 'आराम से बठो नील और चन से बाते करो। जितना सभव हो सका वसुधरा ने अपनी वाणी म मिठास घोलत हुए अपनी उफनती घबराहट, क्रोध आर घृणा आदि का छुपाय रखा।

वसुधरा की बात सुनकर नाल पहल तो झिझका फिर बोला- "यह मैं तुम्ह क्यो बताऊ वह मेरी अपनी परशानी थी।__इसे म कभी किसी को नहा बताऊगा।"

वसुधरा का दिल धक-धक कर रहा था फिर भी वह नक्ला हसी हसता हुई बोली-- ठीक ह__ परेशानी ह तो मत बताओ____।" "__जाने दो।

ठीक है जब तुम मुझे अपना नहीं समझते फिर जिंदगी मे कसे साथ निभा पाऊगी। मेरे मन के अदर हमेशा यही रहेगा कि तुम सिर्फ मेरी गोरी चमड़ी को चाहते हो__ मेरी डिग्रियो को मेरी उपलब्धियो को आर मेरे माता पिता का अपार सम्पत्ति को भी जिसकी म इक्लाती वारिस हू।

अरे, नहीं नहीं,___ तुम तो__ जरूरत से ज्यादा सोच गई वसु। नील ने अपने को सम्हालते हुए कहा।

दरवाजे पर आहट हुई तो नील ने वसुधा का पकड़ा हुआ हाथ छोड दिया। झवर अदर आया__ दीदा का रग उडा चेहरा देख कर चाय की ट उठाकर जाने लगा ता वसुधा ने उसे रोक्कर कहा झवर दखो__ गोयल पढन आये तो उस वापस लाटा देना कह देना कि मिस घर पर नहीं ह____ किसा जरूरी काम से बाहर गई हुई हे। आर हा__ दरवाजा जरा अच्छी तरह से बद करते जाना। कोई भीतर न आने पाये।"

झवर आज्ञाकारी नाकरी की भाति स्वीकृति मे सिर्फ सिर हिलाकर वहा से चला गया आर जाते-जाते किवाड ओढा कर खिडकी की जाली के पास जा खडा हो गया।

झवर के जाते ही प्रोफेसर ने वसुधरा से पूछा - क्या यह वही सताश गोयल ह जिसन थर्ड इयर की छात्रा सोनाली के ऊपर तजाव डाल दी था?

वसुधरा ने कहा — नहीं___ उसे तो रेस्टीकेट कर दिया गया था वह तो अभी सींखचो मे बद हे। कहकर वह चुप हो गई। उसको डेढ साल पहले की घटना फिर से याद हो आई। उसे पुरुष जाति से नफरत सी होने लगी__ क्या सभी एक से होते ह__ स्वार्थी__ खुदगर्ज__ दगाबाज__ कपट कर्मो मे निष्णात?___ एक वह था___ एक यह मेरे सामने बठा हे बेशर्म कहीं का।

उसे चुप देखकर प्रोफेसर ने फिर से पूछा - कहा खा गई? म तो यहा

बठा हू। वसुधरा की कुछ समझ मे नही आ पा रहा था कि वह आगे क्या बोले। अदर खून उबाले खा रहा था और ऊपर नाटक करना पड रहा था। अपन आपको सयत करके वह उठी आर नील से बोली अगर आपकी इजाजत हा तो म एक बार झवर को डिनर मे क्या-क्या बनेगा जाकर समझा आऊ... हा कुछ स्पेशल खाना चाहो तो वह भी बता दो...। बन जायगा बडा हाशियार ह हमारा झवर।

"स्वीट डिश म क्या ह ?' प्रोफेसर ने पूछा– "न हा तो सानूदाने की खीर बनवा लो, मुझे बहुत अच्छी लगती ह।' ठीक ह कहकर वसुधरा रसोई म चली गई आर झवर से थोडी देर बाते करके वापस लाट आई।

शाम ढल चुकी थी, कमरे मे आते ही वसु ने बोर्ड मे लगे दो तीन स्विच ऑन ऑफ किये तब कहा जाकर कमर मे लगे बिल्लारी झाड के बल्ब चमचमा कर जगमगा पाये...।

हा आगे बताओ नील फिर क्या हुआ ? तुमने श्रद्धा देवी को रास्ते से कैसे हटाया "कहते हुय उसने बालकनी का दरवाजा आर खिडकिया भी बद कर ली ताकि नील को यह महसूस हो जाय कि उसका राज बाहर नही जाने दिया जा रहा है।'

वसु, खिडकिया–किवाड बद करके नील से एकदम सटकर बठ गई। गिलास म रखी अगूर की बेटी का नील एक-एक घूट गले क नाच उतारता रहा... आर सब कुछ उगलता रहा। नाल को हल्का फुल्का नशा करन का आदत थी आज तो उसने पूरी की पूरी बोतल चढा ली थी।

'उस दिन मुझ 'बाइवा लेने जाधपुर जाना था। मने आर श्रद्धा ने बेठकर एक साथ खाना खाया। मने उसे प्यार से गुलाब जामुन खिलाये जिसे खाते ही थोडी देर मे वह सो गई। मने दरवाजा बाहर से बद कर दिया आर ट्रेन जो आधे पान घटे बाद छूटने वाली थी फटाफट स्टेशन जा पहुचा। कुला से अटैची उठवाई आर चलाकर उससे झगडा तथा हाथापाई की ताकि पुलिस वाले देख ले कि म इस शहर से बाहर जा रहा हूँ।

मै लड-झगड़ कर ट्रेन पर सवार हो गया और जब ट्रेन चल दी तो अगले स्टशन पर उतर कर ऑटो करके वापस घर आ गया। बाहर के ताले की दूसरी चाबी ढूढी आर उसे श्रद्धा की कमर मे खोस दी। श्रद्धा जमीन पर सोई पड़ी थी। मने सोता हुइ का गला मफलर से दबा दिया आर जब उसका दिल धड़कना बद हो गया तब उसे उसी ऑटो मे डालकर नाले तक ले गया।

ऑटो वाले से कहा- "भया हमें यही उतार दो।"

उसने हमे उतार दिया। मने श्रद्धा का सहारा देकर उतारा तो उसने पूछा- माताजी बीमार ह क्या ? मने कहा हा भया... अपने गाव लिये जा रहा ह। मरा दोस्त यहा रहता ह अभी टक्सी लकर आता हागा मने उसक पसे चुकाये और वह चला गया। चारो तरफ सन्नाटा था लाश को मने उसी नाले म धक्कल दिया और टक्सी लेकर अजमेर जा पहुचा। फिर वही म जोधपुर की ट्रेन पकड ली। ... बस यही छोटी सी कहानी हे तुमसे मिलने की। अब तक सामने रखी अंगूर-रस से भरा शीशी पूरी खाली हो चुकी थी और नीलमणि जी पूरी तरह से नशे मे धुत्त हो चुके थे।

बात खत्म हुई। अपने उबलते खून पर इतनी देर से काबू रखने वाली वसुधरा एक झटके से उठ खडी हुई और तेज आवाज मे बोली - "मिस्टर नीलमणि जी कान खोलकर सुन लीजिये- जो व्यक्ति अपनी ब्याहता पत्नी को और वह भी इतनी पतिभक्त को किसी के मोह जाल मे फसकर मार सकता ह... आई से गेट आउट ... य... रास्कल। ... तो वह किसी और क मोह म फस कर कल को मुझ मार देगा। तूने ये कसे समझ लिया कि म तुझ जसे हत्यारे आदमी से शादी करने क लिये तैयार हो जाऊगी। झवर आ झवर... ।"

वसुधरा इन जुमलो को कुछ इतनी जोर से चिल्लाई कि पूर्व आदेश के अनुसार झवर कमरे मे तत्काल उपस्थित हुआ और माजरा जानने के लिये वहा खडा हो गया। वसुधरा फिर से चीखी... आप यहा से जाते ह या झवर से आपको बाहर फिकवाऊ।

नीलमणि ने कभी स्वप्न मे भी न सोचा था कि जिसके पीछे उसने इतना कृतघ्न कार्य कर डाला ह वही एकदम से चण्डी का रूप धारण कर लेगी। दिमाग को गहरा झटका लगा पिये गये सोमरस का नशा एक झटके मे काफूर हो गया। अपने सामने लंब तड़ग व्यक्ति को देख फोरन खिसक लेना ही उचित समझ नील लडखडाते हुए सीढिया उतर गया।

झवर ने बाल भाव म पूछा- 'क्या हुआ... दीदी ? साब क्या चल गये... खाने का क्या होगा ?"

वसुधरा उसकी बात सुन लगभग चीखती हुई सी बोली- भाड मे जाये तेरा खाना और कहकर वह अपने कमरे म घुस गई और दरवाजा बंद करके दूसरी बार श्रद्धा देवी को याद करके फफक-फफक कर रो पडी।

इक्कीस मई की रात श्रद्धा देवी की हत्या हुई थी हत्या के छह माह बाद सबूतो को इकट्ठा करके पुलिस ने प्रोफेसर इन्द्रमणि को सुबह गिरफ्तार कर लिया। इस खबर को पढ़कर मिस्टर चन्द्रकात और गौतमी दोनो दातो तले अगुली दबाकर रह गये।

* * * * *

न्यायालय खचाखच भरा हुआ था। सभी परिचित अपरिचित चढ़ हुए सरकारी वकील नील क वकील से बातो म मशगूल थे। जज साहब आ थ। सभी उनका अभिवादन करके यथास्थान बैठ गये। आज महत्वपूर्ण थी। इससे पूर्व भी कई बार वसुन्धरा अदालत म हाजिर हो चुकी थी।

तभी वकील साहब ने गवाह मिस वसुधरा को हाजिर होने की पेश की। वसुधरा बड़े आत्मविश्वास के साथ उठी और निधारित स्थान (कटघरे) जाकर खड़ी हो गई। वकील गीता वीता की कसम खिला कर असली मुद्दे आ गया। "मिस वसुधरा आप अभियुक्त को जानती ह_ यदि जानती ह कितने समय से ?'

"मैं और प्रोफेसर नीलमणि एक ही कॉलेज म पढ़ाते ह और म लगभग तीन वर्षों से जानती हू। वसुन्धरा सक्षिप्त सा उत्तर देकर चुप हो गई

'क्षमा करेंगी क्या आपका और नीलमणि का प्रेम का रिश्ता ह और उनसे शादी करने वाली थी ?" वकील का दूसरा प्रश्न था।

"वकील साहब। आपस यह किसन कह दिया कि म उनसे शादी व वाली थी ? रही रिश्ते की बात तो मेरा तो सभी से प्रेम का रिश्ता ह। म कि से द्वेष करना जानती ही नहीं। जाइये और कॉलेज मे एक एक से पूछ कर ले लीजिए।"

लेकिन मने तो कुछ ऐसा ही सुना ह कि आपसे शादी का इरादा था सज्जन का इसीलिए इन्होंन अपनी पत्नी को मौत क घाट उतार दिया। इस आप क्या कहना चाहेंगी?" 'वकील साहब किसका क्या इरादा ह म भ उसके लिये क्या जिम्मेदार होऊ रही बात मौत के घाट उतारने की तो इनका निजी मामला था एसा काम या तो कोई पागल करता ह या व विवेकशून्य। ऐसे आदमी किसी को भी किसी घाट उतार सकते ह। तात्कालिक भावना के वशीभूत रहते ह। _वसुधरा के कहने के ढग जबरदस्त घृणा का भाव था।

वसुधरा का उत्तर सुन पूरा हॉल हसी से गूज उठा।

"लेकिन वजह तो आप ही है__ ये आपसे प्रेम करते ह_। वकील वसुधरा की बात बीच मे ही काट दी।

इस पर वसुधरा बोली- प्रेम तो मुझसे हजारो लोग करते ह मेरे माता-पि मेरे साथी_ मेरे स्टूडेंट्स यहा तक कि अगर दो चार दिन आप भी मेरे साथ तो आप भी मुझसे प्रेम करने लग जायेगे। इसका मतलब यह तो नहीं कि मे किसी से शादी कर लू_ क्योंकि मुझसे सब प्रेम करते ह?" वसुधरा दलील से कोर्ट के सारे लोग पुन ठहाका मार कर हसने लगे।

'खर छोडो— यह वताइये— इस डायरा को आप पहिचानता ह ? जी हा यह मेरी गत वप की डायरी ह— लेकिन यहा कसे ? "—यह डायरी मुझ अपराध शाखा के मिस्टर विमल मित्रा ने दी ह — मिस्टर विमल मित्रा हाजिर हो-' दरबान ने टेर लगाई। तभी एक सूटेड-बूटेड व्यक्ति हाजिर हो गया— उसन आते ही जज साहब को झुककर नमस्कार की फिर वसुधरा की आर देखकर मुस्कराया।

अर झवर तुम—। कहा चले गये थे—'

'य झवर नही मडम अपराध शाखा के एक होनहार युवक हे जो अपने कार्य म कुशल हे। तभी वसुधरा वोल पड़ी 'खाना भी वडा लजीज वनाते हे ओर उल्लू भी।" —फिर से ठहाके पे ठहाके उस हॉल मे गूज उठे।

अव आप जा सकती है। वकील ने वसुधरा से कहा। वकील ने जज साहव से कहा माई लॉर्ड अव म आपको वह कसेट सुनाना चाहता हू जिसमे *अपराधी ने अपने अपराध करने का स्वय ही कच्चा चिट्ठा खोला ह।*

जज साहव न अपनी स्वीकृति दे दी। टेप भरी अदालत मे वज उठा। प्रोफेसर नीलमणि का चेहरा, लज्जा शर्म व ग्लानि से झुकता चला गया। यथासमय मिस वसुधरा को बाइज्जत बरी किया गया ओर प्रोफेसर नीलमणि को निरपराध पत्नी की अकारण हत्या पर फासी की सजा सुना दी गई।

निर्णय मे स्पष्ट किया गया था कि कैसट आर डायरी के पूर्ण अध्ययन से पता चलता ह कि मिस वसुधरा का कही स कोई गलत इरादा नही था न इन्हाने नीलमणि को किसी भी प्रकार से इस जघन्य काड के लिये उकसाया ही था। उनका सभी साथियो परिचितो से सदा स्नेही व्यवहार रहा ह।

उस दिन जव अदालत के फेसले की खबर फैल रही थी कॉलेज म सभा लक्चरर्स आर स्टूडट्स आपस म वाते कर रहे थे कि मिस आज से कॉलेज नहीं आयेगी। लकिन तब उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही जव सदव की भाति सिर ऊचा किये हसती मुस्कुराती वसुधरा उन्हें कॉलेज की सीढ़िया चढती हुई दिखाई दी। सभी ने उनकी सपाट बयानो और निर्भीकता की मुक्तकठ से प्रशसा की।

एक पढ़े-लिखे होनहार व्यक्तित्व का ऐसा भयावह अत ? सार कॉलज मे महीना तक यही चर्चा का विषय वना रहा। सच ह पोथी के पन्ने तो पलटने पड़ते ह लेकिन भाग्य के पन्ने यकायक कैसे पलट जाया करते हे ? कोई कुछ कह नही सकता आज का सूरज दिन वुनकर क्षितिज मे अस्त हो गया था सभी के दिमाग मे एक प्रश्न चिह्न छोड़कर।

■■■

जेठ की धूप

उस वहिन का खुला खत मुदिता के हाथ म थमा तेज हवा के झकारा मे रह रहकर वार-वार फड़फड़ा उठता था। मस्तिष्क मे महाप्रलय सा मचा हुआ था। पत्र की प्रत्येक पक्ति के एक-एक शब्द भयावन चित्र की भाति उभरकर आवतन आर विवतन का व्यूह सा रचा रहे थे। विचारा मे कद वह लॉन पर पड़ी कुर्सी पर न जाने कितनी देर निढ़ाल सी वैठी रही।

पत्र म ऐसा ही कुछ लिखा हुआ था कि कठोर से कठोर हृदय भी एक वार पसीज कर रो उठे। तभी उस याद आया कि कुछ समय पहले भी किसी अन्य वहिन का पत्र उसके पास आया था जिसम उसने भी अपनी कुछ एसी समस्या का समाधान चाहा था। मुदिता सोच के अथाह सागर मे हिचकाले खाने लगी। रह-रह कर उसके जेहन म प्रश्न पर प्रश्न उभर रहे थे कि नारी होना इतना वड़ा अभिशाप क्या ह। यदि नारी न होती तो यह पुरुष समाज कहा से आता? नारी हा तो पुरुष की जननी ह वही ता उगली पकड़ा कर उस ढग से चलना सिखाती ह वही अपन शरीर का सार पिलाकर उस जीवनदान देती ह फिर उसके साथ यही पुरुष समाज क्या ऐसी क्रूर हरकत करता ह क्या कुदृष्टि डालता ह और क्या घिनानी हरकत करने से वाज नही आता? जव जी मे आया उसे रौंदा आर हाथ झाड़कर चलते वने।

विधवा हो जाना क्या उस वहिन का अपराध ह? अगर उसके सिर पर से पति की छाया ईश्वर ने छीन ली तो इसम उसका क्या दोष? वचपन म शादी करके पिता ने मुक्ति पा ली थी सिर्फ उसे चार अक्षर ही पढ़ा पाया था कि वेटी अपना नाम भर लिख सके या वच्चो की पोथी के अक्षर मिलाकर पढ़ ले।

आज के इस युग म जहा एम. ए. पीएच.डी. लोग घरा मे हाथ पर हाथ धरे वठे रहते है वहा सिर्फ चाथा या पाचवी का अध्ययन कोई मायने नही रखता। फिर क्यो उसके वाप ने उसे अनपढ़ रखा, फिर क्यो उसकी नाजुक उम्र म शादी करके उसके जीवन के साथ खिलवाड़ किया गया? छोटी उम्र म शादी करके कन्यादान कर पुण्य कमाने वाले माता पिता अनजाने हा उसकी नाजुक झोली मे अटूट विपदाओं का पहाड़ क्या डाल देते ह?

पति के जीवन काल में वही लड़की चोटी माथा भी करती थी लेकिन अब

हफ्तेभर बाद भी झूथला जसे बालो म तेल डालकर सुलझा लता ह तो बाहर वाले क्या परिवारजनो तक की त्यारिया चढकर सातव आसमान म पहुच जाती ह। वह पति के जिंदा रहते बाजार हाट भी किया करती थी लेकिन अब एक साधारण स साधारण खड-खड काया (दुबली-पतली) वाला भी ललचाइ दृष्टि स उसकी ओर देखने की हिम्मत करन से नही चूकता आरो की ता बात ही क्या। उस अनाम का जीवन दूभर हो उठा। लोग यह क्या नहीं समझते कि सिफ उसका पति मरा ह लेकिन वह तो जिंदा ह आर जिंदा ह उसस जुड़ा हुआ एक अदद पेट भी जिसे न अभावा का पता होता ह न दुखो का उस तो खाना चाहिए ही चाहिए, वह भी एक समय नही दोना समय का।

वही अकेली होती तो कुछ सोचा (पुनर्विवाह) भी जाता लकिन मरने वाले ने तो एक नही दो दो सताने उसके गले म हसुला की तरह लटका कर सदेव के लिए आख मूद ली। वडी लडकी मात्र ढाई वर्ष की आर छाटा बेटा दस महीने का। कुछ समय पश्चात जिठानी को ये तीनो काटे से खटकने लगे। उन्हान इन्हे मनहूस कहकर घर से निकाल दिया। बाप को जब पता चला तो वह दाड़ा आया आर अपनी सीमित जमा-पूजी से बेटी की नई गृहस्थी के लिए अति आवश्यक वस्तुए एव दाना-पानी खरीद कर रख गया। साथ ही अपने आखिरी बेटे को भी छोड गया। लेकिन बाप भी अपनी ब्याहता बेटी को अपने घर का छत की शरण देने से एक बार तो कतरा ही गया। क्याकि उसकी खुद का पत्नी वर्षा पहले इस ससार से विदा हा चुकी थी। वह खुद बेटा बहुआ पर आश्रित था। इसलिए आगा पीछा सोचकर ही उस असहाय बाप ने चुप्पा साध ली था।

एक शाम उसे अपने जेठ के मन का कालुष्य पता चला। उससे पूर्व वह कई बार मन ही मन सोचा करती थी कि जिसने मुझ जेसी अबला को निराश्रित समझ घर स बाहर कर दिया था उस जिठाना न भी तो उसे आइदा का मतलब समझाया था - छाटी तू आइदा का मतलब समझती ह कि नहा ? सफद साड़ी मे आवृत छाटी ने घूघट म ही हामी भर दी थी कि समझती हू दादी सब कुछ समझती हूँ। तुमने जो जो कहा वह भी समझती हू आर जो नहा कह पाई उसे भी समझ गई हू। तुम भी नारी हो म भी नारा हू, जितना तुम खाता हो उतनी ही रोटिया म भी खाती हू समझूगा क्से नही। लेकिन अपनी जीभ पर आए हुए उत्तरो को वह कभी प्रकट न कर सकी। यहा आज भी उसके साथ हुआ था। उसका पति जब जिंदा था तभी वह कानसी बोल पाती थी। दिन भर व्यग्य आक्षेप उपेक्षा झाड फटकार ही तो सहती रही थी। बहू बनकर तो सभी लडकिया ससुराल आती ह फिर उसने ही ऐसा कानसा गुनाह कर लिया था। कई बार वह यह भी सोचती कि आखिर म कब तक अकारण अपमान सहना रहूगा_। अब कब तक इनके ललकार दुत्कार खाती रहूगी ?

बाप का दिया हुआ कब तक चलता। जेठ ने फिर चुपके से महीने का राशन पानी कपड़ा लत्ता पटकवाना शुरू कर दिया था। कभी नौकरों के साथ वे सामान भिजवा देते तो कभी अपने किशोर होते बेटे के साथ। इधर कुछ दिनों से वे खुद ही आने लगे थे। तब वे बैठकर बच्चों के साथ खेलते चीज दिलवाते और कभी-कभी उन्हें घुमाने भी ले जाते। अपने जेठ के इस बदलाव पर वह आश्चर्यचकित थी फिर स्वयं ही अपने मन को समझा लेती कि भई अपने अपने खून पानी पर सभी का स्नेह आता है और आये भी क्या न आखिर उनके सगे भाई की ही तो संतान है। हो सकता है बच्चों का स्नेह ही इन्हें खींचकर इस घर तक ले आता हो। यही बात सोचकर उसका हृदय अपने जेठ के प्रति श्रद्धा से नत हो जाया करता था।

लेकिन एक शाम उसकी श्रद्धा ने ऐसी पलटी खाई कि उसका सारे पुरुष वर्ग से जिंदगी भर के लिए विश्वास हो उठ गया। बाहर वालों से तो निबटा जा सकता है उन्हें भला बुरा कहकर दबाया भी जा सकता है लेकिन जब घर के भीतर ही काला कोबरा आ घुसे तो... ?

यह तो भला हो उस बूढ़ी काकी का जो रोज रोज आ-आकर उसका भेजा चाटा करती थी। काकी रोज शाम को ही उसके घर आया करती थी और आकर नियम से अपने बेटे-बहुओं की करतूतों का गुणगान रेवती से किया करती। यद्यपि उससे इस रोज-रोज के एक से पारायण से उस नवयौवना का जी मिचलाने लगा था फिर भी उसका आना उसे इसलिए भी प्रिय लगता था कि कोई तो है बड़ा-बूढ़ा जो उसके नजदीक प्रतिदिन आता रहता है और उसका दुःख दर्द सुनता रहता है। बस इसी लालच के वशीभूत हो वह एक कुशल श्रोता बन बुढ़िया के द्वारा उसके घर और बाहर वालों का कच्चा पक्का चिट्ठा सुनती रहती। उस दिन उसी काकी ने कृष्ण बनकर उसके चीर हरण का सिलसिला जहां की तहां रुकवा दिया था और जेठ भी जैसे आये थे वैसे ही बाहर निकल भागे। उसके जी में आया भी था कि वह अपने जेठ को 'आइंदा' का मतलब उसी तरह से समझा दे जिस तरह से कभी उसकी जिठानी ने उसे समझाया था। लेकिन जब चेहरे पर घूंघट पड़ा हो तो मुंह पर ताला पहले ही लग जाया करता है। उस दिन बूढ़ी काकी के वेश में यदि कृष्ण ना आ पाते तो दुःशासन रूपी जेठ उसकी पूरी दुर्दशा करके ही दम लेता। फिर वह समाज में मुंह दिखाने लायक भी न रहती और इतना ही नहीं वह स्वयं की नजरों में भी सदा के लिए गिर जाती। ...थोड़ी देर तक वह हक्की बक्की सी खड़ी रह गई।

जेठ के जाते ही वह अपनी काकी की छाती से लगकर इतना बिलखी थी कि उसका दुःख देख कर शायद आकाश भी रो पड़ा हो। काकी को उम्र का

अनुभव था। उसने उससे कुछ भी नही पूछा सिर्फ इतना ही कहा "विटिया अगर सुरक्षित रहना चाहती हो तो तू आज ही अपने बाप के घर चली जा। जानती हू तेरा माँ जिदा नहीं फिर भी भरा-पूरा परिवार तो है वहा तेरी रक्षा अपने आप हो जाएगी।' काकी जब तक वह सिसकिया भरती रही तब तक उसके पीठ और माथे पर बराबर प्यार से हाथ फेरती रही और वह घबराई सी बहुत देर तक काकी की गोद मे सिर गडाय अपनी असहायता पर सिसकती रहा अपनी फूटी किस्मत को कोसती रही।

सयत होन पर उसन (अपने) पीहर वालो के विना आमत्रण की परवाह किये अपने मायके जाने का मानस मन ही मन बना लिया। तभी इतनी देर से सोती हुई बेटी रो पड़ी वह उसके नजदीक गई। उसे देखा तो पाया कि वह बुखार से बुरी तरह तप रहा है। तब तक उसका भाई भी घर लौट आया था। भाई को किसी बुक्सेलर की दुकान मे छोटी सी नौकरी मिल गई थी। अभी वह छोटा ही था फिर भी घर बैठे रहने की बजाय चार पैसे ही कमाकर लाय तो उससे भी थोड़ा-बहुत सहारा मिल ही जाता है। वह अपने भाई को साथ ले मुन्नी को गोदी म उठा कुछ पैसे रुमाल मे बाध कर डाक्टर की दुकान पर पहुच गई। डाक्टर ने दवा दी लेकिन बुखार हफ्ता न उतरा। उसे अपनी बेटी को गोदी मे लाद-लादकर दूसरे या तीसरे दिन डिस्पसरी जाना पड़ता।

डाक्टर घाघ था। रेवती की छोटी सी उम्र मासूम चहरा और श्वेत धवल साडी विना चूडिया की कलाइया और सूना माग फीका ललाट दखकर उसके मुह मे पानी भर आया। कभी-कभी वह आत्मीयता जताता और दवाइया भी मुफ्त मे देता रहता एक दिन डाक्टर महोदय क्या 'उवाचे' उसे भी सुनना काबिले तारीफ है - 'वे उससे बोले - तुम अकेली ही क्या नहा आ जाती अपने इस भाई को क्यो तकलीफ देती रहती हो?' यद्यपि यह बात लिखने और पढ़ने म बहुत छोटी सी बिल्कुल मामूली सी नजर आती है लेकिन उस डाक्टर के चेहरे की कुटिल मुस्कान ने रेवती को उसके कलुषित हृदय का सारा परिचय दे डाला था। वह भौचक्की सी खडी देखती रह गई और सोच रही थी कि यह मेरे बाप के बराबर है और यह भी जब रक्षक हो भक्षक बन जाये तो फिर और कहा ठिकाना है। _क्या नारी के प्रति पुरुष का एक ही नजरिया रह गया है?

उसी रात काकी से विदा ले जेठ की धूप से झुलसा भयभीत हिरणी ने अपने लिये कुछ आवश्यक सामान बाध लिया उसे दुखी निराश दख काकी ने उस पुचकारते हुए कहा था कि बेटी जब तक ससुराल म पति जिदा रहता है तब तक ससुराल अपना घर कहलाता है। उसके जाते ही फिर कोई किसी का सगा नहीं। म जानती हू, मे भुगतभोगी हू। खैर, भगवान ने तुझे चार चार भाई-

भतीजो वाला पीहर ि्या ह जा तू वहा चली जा। अगर वहा तुझे वर्तन भी माजने पड़े तो कभी दुखा मन होना मरी लाड़ो ! वहा तुझे सुरक्षा तो मिलेगी। जा वेटी जा मरा आशीवाद नरे साथ ह भगवान तेरी रक्षा करग। काकी वोली "ले मरी वेटी यह जमा पूजी जा वषा से वक्से म वेकार ही पड़ी था इसे तू ल जा। तेरे हाथ खच के काम आएगी। हा तू इसके लाटाने की चिता विल्कुल मत करना समझूगी कि मैंने देवी दवताआ पर खर्च कर दिया। वटी तू तो जानती ही है कि मै अव नदी किनारे का पेड़ हू वस अव किसी भी दिन, यमराज का वुलावा आने ही वाला ह।"

रेवती काकी के उस ममत्व आर अपनत्व भरे आग्रह को टाल न सकी उसने वे पसे (रुपये) किसी वड़े-वूढ़े का आशीर्वाद मान अपने पास रख लिये। आखो म आसुआ की नदिया उमड़ रही थी भारा मन से मुख्य द्वार पर ताला लगाते हुए आर काकी को चावी देता हुई वोली काकी मेरी एक माह तक प्रतीक्षा करना अगर मैं न लाटू तव यह चावी मेरी निठाग को साप देना।' आर वह आखा म आसुआ का सलाव राके सदा के लिए अपन पति के शहर का मोह त्याग रिक्श पर जा वैठी। काकी सजल नत्रा से उसे जाती हुई देखती रही। जसे आज उसका कोई वहुत प्रिय व्यक्ति सदा सदा के लिए विछुड़ रहा हो।

यह थी उम आर उस लड़की की कुछ मिलती जुलता सी कहानियॉ जिसे पढ़कर मुदिता का हृदय दुःख से वाझिल हा उठा था सोच रहा थी क्या होने वाला ह इस देश का ? लॉन से उठकर वह अपने स्टडी रूम म चली गई आर कागज कलम उठाकर उस वहिन को उत्तर लिखने वैठ गई।

वहिन ! निराश मत होना यह ससार ह। यहा पग-पग पर काटे विछे हुए है। इन्ही काटों को वुहारकर तुम्ह अपने लिए मार्ग का निमाण करना होगा आर अपने गतव्य तक पहुचना होगा। म तुम्हारी सारी विवशताए आर पीड़ाए अच्छी तरह से समझ सकती हू क्योकि म भी नारी हूँ। परेशानिया सवकी जिंदगी म आती ह लेकिन उनके रूप भिन्न-भिन्न होते हैं। अदर ही अदर सुलगते-घुटते रहने का ही नाम आरत है। इस ससार रूपी हवन कुड की वही एक मात्र समिधा है जिसे यावत् जीवन घुमाते ही रहना ह।

पुरुष नारी को सिर्फ अपने आनन्द की ही वस्तु मानता ह। उसकी नियति ही कुछ ऐसी ह कि उसे चुपड़ी और दो-दो मिलती रहे वस फिर चाहे जिस पर जो कुछ बीतती रहे। इससे उसको कुछ भी लना-देना नही। क्षणिक खुदगर्जी मे वह यह नहीं समझ पाता कि नारी के सतीत्व की रक्षा अगर पुरुष नहीं करगा तो और कौन करगा। उन्हे विधवा हो या परित्यक्ता (समस्त नारी जाति) के प्रति

सुनाइ। क्लाश ने मित्र की बात बहुत गभीरता स सुनी। अचानक वषो
पहेले घटी एक घटना उस याद हा आई। उसके मुह का स्वाद कड़वा हो उठा
गाव की एक गारी नाम का लड़की की उम रगाद वाल बाबाजी न कर्म
बनाइ था। बचारी घर की रही थी न घाट का। अत म उस कुए म ही
लगाकर सदा क लिए मुह पर लगी कालिख धाना पड़ी थी।

अपने मन म कौन सा विचार आकर चला गया कैलाश न राज
जाहिर न होने दिया। अरे तू कहा खो गया? राजीव के प्रश्न करन पर
न मन की बात छुपात हुए बोला राजीव तेरी समस्या का अत मैं करूगा तू
मत कर। राजीव जानता था जनम का झपू आदमी, शाब्दिक आश्वास
अलावा आर क्या द सकता ह भला। फिर भी किसी स कुछ कह सुन
उसे अपने मन म कुछ हल्कापन अवश्य महसूस हुआ।

समय थोडा-थोड़ा यू ही खिसकता रहा बात आई गई हा गई। कु
वार्षिक परीक्षाआ की व्यस्तता। कुछ अपना ही भविष्य सवारन के
सतोषप्रद सर्विस क लिए जगह-जगह इटरव्यू म सम्मिलित हाना। सा
कभी-कभा माता-पिता की बीमारी म सशरीर उपस्थित होना। इन सब च
म उसे कई बार बीच-बीच म शहर आना-जाना पडा था। दा तीन महीन
अनवरत व्यस्तता के बाद दोना मित्र एक दिन फिर मिल। इधर-उध
व्यस्तता आर राजी खुशा क हाल चाल पूछे जाने क बाद क्लाश न राज
तपाक स पूछ डाला कहा भाई अब भाभी क क्या हाल चाल ह? कुछ
पडी या__ वसी ही ह ? लाल मिर्च।

राजीव इस अचानक दागे गये प्रश्न के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं
फिर भा अपने विचारो की श्रृखला को इधर-उधर से बटोरकर एक कडी ब
सयत स्वर मे बोल उठा "भया अपने घर की ता काया ही पलट गई। जि
म सार दिन चिकचिक मची रहता थी वहा अब तो सन्नाटा छाया रहता
अगर वह__ तेरी भाभी चलती फिरती न दिखती तो म तो यही समझता कि
घर पर ह ही नहा। पता नहीं अब श्यामा इतनी चुप्पा कसे साधे रहता ह?

कलाश ने अपनी सफाचट (क्लानशेव्ड) मूछा पर ताव दत हुए कहा
बच्चू मेरा कमाल। एक दिन ऐसा मत्र फूककर आया हू कि सब ठाक हा
ला यार, आज मरी दक्षिणा (मेहनताना) तू दे ही दे।'

तू और मत्र दगा? तेर लिए ता काला अक्षर भस बराबर ह। जानता
हू क्या तुझे? राजाव ने क्लाश का बात को मजाक मे लिया। राजीव की
पर कलाश हस पडा आर उसी हसने के दौर मे वह बोलता रहा, "यार
जगह वाल अक्षरो की नहीं बुद्धि की जरूरत होता है जो तेरे पास नहीं

कह कर वह पुन हसने लगा जसे उस कुछ घटनाए याद आ रहा हा। सुन क्लाश अब हसना बन्द कर दे आर बता क्या चक्कर ह। वर्ना म तेरा ऐसा___ कर दूगा। समझ न पाने की असमथता स राजीव थाडा सा झुझला पडा था। क्लाश ने भूमिका बाधते हुए स्पष्ट कहा यार म इन साधु सन्यासिया के पाखडा को अच्छा तरह से जानता हू। ये लाग भाली भाली लडकियो का चक्कर म फास कर बडा अहित करते ह। कुछ वषा पहल एक ढागी जटाधारी इस गाव मे आया था। बरगद के नीचे बठा बठा भजन गाया करता था। गाव की बहू बेटिया मुग्ध होकर उसके सुरीले भजना को सुनती रहती। अगर राजीव वह ढोगी मुझे कही मिल जाये तो म उस कच्चा ही चबा जाऊ। कहते कहते कलाश की मुट्ठिया भिच गई।

"क्या किया था उसने ?" राजीव ने उत्सुकता से पूछा। वह गाव मे चदा था न उसी की बडी बहन गारी... नही नही तू कस जानेगा भला... तेरे आन से पहले की बात ह। खर छोड़ उसका किस्सा फिर कभा सुनाऊगा। पहले सुन मैने क्या किया तू इटरव्यू के लिए शहर गया हुआ था। भाभी का मन एक साधू के पास बठे देखा जो बडे प्यार से भाभी के सिर पर हाथ फेर रहा था। मेरा माथा ठनका। महीनो पहले कही गई तेरी बात दिमाग मे एकदम से ताजा हो उठी। स्थिति की गभीरता को भापते हुए मने जल्दी ही भाभी को सबक सिखाना उचित समझा। सोचा जाकर समझाऊ दो चार कडवे कसेले उदाहरण बताऊ परन्तु ये सब बाते मेरी कसाटी पर खरी नही उतरी। एक दिन विचार किया कि सभी आरते एक जसी हा तो होती ह। जिनको य सवशक्तिमान समझती ह उन्ही का रूप बनाकर क्यो न जाऊ। शायद कुछ बात बन हा जाये।"

"दूसरे दिन अपने सारे शरीर पर मने राख की पुताई करवा डाली। हाथ मे चामटा जो कुछ घटो के लिए किसी से उधार मागा हुआ था। देवी मदिर के पुजारी से लाल वस्त्र लिए। माथे पर चदन का त्रिपुड बनवाया आर कधे पर झोला डालकर चल पड़ा अलख जगाता हुआ। थोडी देर मे तेरे घर के सामने भा पहुचा आर जोर-जोर से ऊची आवाज मे एक कटोरी आटे की गुहार करने लगा। भाभी फूले मुह से बाहर आई आर परशान किये जान के कारण दो चार गालिया के साथ मुझे कोसकर फिर भीतर चली गई। जाते जाते उन्हाने दरवाजा इतनी जोर से बन्द किया कि मेरा तो दिल हा दहल उठा। उनकी भाषा स म सहम उठा आर उनकी मुख मुद्रा देखकर एक बार तो पलायन ही उचित समझा पर फिर विचार आया कि जब इतना स्वाग रचा हे तो कुछ करके दिखाना हा चाहिए। दिल कड़ा करके पुन कटोरी भर आटे के लिए आवाजे बुलद करता रहा आर बीच-बीच मे भाभी का भविष्य भी बताता रहा कुछ व बात जो सच थी आर मुझे मालूम थी आर कुछ बाते अदाज से म बोलता रहा।

"मेरा तकरीर से भाभी के हृदय में उत्सुकता जागी। उन्होंने दरवाजा खोला और बोली 'महाराज आप कुछ जतर-मतर भी जानते हैं या कोरे साधु हैं? मैंने कहा हां हां बेटी तेरी मस्तक की रेखाएं स्पष्ट बता रही हैं कि तू किसी कारण से दुखी रहती है। बेटी साधु संतों से कुछ नहीं छिपता हम मन अंदर की भाप लेते हैं। लगता है तेरा पति अक्खड़ दिमाग का है ?'

इतना सुनना था कि भाभी ने बड़े आदर-सम्मान से मुझे घर के भीतर बुला लिया। सम्मान सहित एक चटाई मेरे बैठने के लिये बिछा दी। और खुद भी मेरे सामने बैठकर लगी तेरी जन्मपत्री की बखिया उधेड़ने।" मैंने कहा बेटी मैं तेरी व्यथा अच्छी तरह समझ गया हूं। तू चाहे तो मैं तेरे पति को तेरे वश में कर सकता हूं। भाभी तपाक से बोल उठी। "हां हां स्वामी जी आपने तो मेरे मुंह की बात छीन ली। कुछ ऐसा उपाय कीजिये जो 'वे' मेरे सामने भीगी बिल्ली बन रहें।" मैंने कहा तो बेटा तुम्हें मेरे कहे मुताबिक चलना होगा। फिर देखना कितनी जल्दी तेरा पति तेरे वश में हो जाता है। कुछ ही दिनों में इस घर में शांति का साम्राज्य छा जाएगा।

"भाभी ने कहा आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगी।' मैंने जब तीर निशाने पर लगता देखा तो कहा बेटी कुछ साबुत सुपारियां हों तो ले आओ। भाभी भीतर गई और चन्द क्षणों में खाली हाथ लौट आई। बोली घर पर साबुत सुपारी तो नहीं है महाराज कटा हुआ है उनसे काम चलेगा ? मैंने कहा नहीं। तो भाभी बोली पड़ोस से मांग लाऊं? मैं भी थोड़ा सा आश्वस्त हो लेना चाहता था इसलिए कह दिया हां हां ले आओ। बेटी लेकिन जरा जल्दी आना क्योंकि मुझे एक निपूती को पुत्र होने का ताबीज देने भी जाना है। आज उसके लिए बहुत शुभ दिन है। मेरी इस बात से भाभी आन्तरिक रूप से प्रभावित हुई हो इसलिए बड़ी श्रद्धापूर्वक मेरी ओर देखती हुई दरवाजे से बाहर चली गई।

उनके जाते ही मैंने चैन की सांस ली और आगे क्या करना है इस पर दिमाग दौड़ाने लगा। भाभी जिस फुर्ती से बाहर गई थी उसी फुर्ती से हांफती हुई तत्काल मेरे सामने आ गई। हाथ में रखी सुपारियां उन्होंने तत्काल मेरी ओर बढ़ा दीं। मैंने सुपारियां को ले लिया और भाभी से कहा बेटी अब तुम अन्दर जाओ और शुद्ध जल से हाथ पैर धोकर आओ। तब तक मैं अपने गुरु का स्मरण कर इन सुपारियों को मंत्रित कर लेता हूं। भाभी के जाते ही झोला में रखी राख की पुड़िया मैंने निकाला और उन सुपारियों पर राख रगड़ दी ताकि वे सुपारियां आम न लगकर खास लगने लगें।

राजीव मुस्कराते हुए बोला फिर क्या हुआ? कैलाश ने कहा, होता क्या

भाभी हाथ पैर धोकर आ गई और मेरे सामन पालथी भरकर उठ गइ। मन मुट्ठी बन्द किये किये ही होठो स बुदबुदाना शुरू कर दिया। फिर ओम बम बम करत हुए भाभी के हा। पर सुपारिया रख दी और बोला जा बेटा तेरी मनोकामना अवश्य पूरा होगा। हर अमावस्या का रात एक ब्राह्मण का भोजन अवश्य करा देना। फिर अगुलिया म कुछ कुछ गिना और बोला दखो 'क" अक्षर तुम्हारे लिये बहुत भाग्यशाली ह, तुम क अक्षर स शुरू होन वाले ब्राह्मण को ही भोजन पर आमत्रित करना। म वहा स तत्काल दुम दबाकर भागने वाला ही था कि भाभी बोल उठी पर महाराज यह तो बता दीजिये कि मुझे इन सुपारिया का करना क्या होगा?"

उनकी बात सुनकर एक बार तो मैं स्तब्ध रह गया फिर तत्काल बोल उठा ये वशीकरण मत्र से मत्रित सुपारिया हैं। पति क घर पर आते ही तुम मुह म एक सुपारी रख लना। जब तक सुपारी मुह म रहगी पति तुम्हार वश मे रहगा। वह मुह खुलवाने का कितना ही प्रयत्न करे चाह कितनी ही खरी खोटी सुनाये पर तुम मुह मत खोलना वना मत्र की शक्ति जाती रहगी।

कभी कभी म सोचता हू कि उस दिन मैं इतना सब कसे बोल गया था? कहकर कैलाश चुप हो गया। "अच्छा तो यह सब तेरी महरबानी है। म तो समझा था कि देवा जी के गले म गाठ हो गइ। मान गये यार, दोस्त हो तो तुम जैसा।" अभी राजीव आग कुछ और कहने वाला ही था कि कलाश बोल उठा "अरे रे ज्यादा मत फुला यार मुझे पहले ही फूल कर कुप्पा हो रहा हू। मैंने तो सचमुच वशीकरण का मत्र दिया था।"

"अच्छा तो ससुर जी अपना बेटी के हाथ का बना खाना खान कब आ रहे हो क्योकि तुम्हारा नाम भी तो 'क से ही शुरू होता ह न।"

कैलाश भी अपने ही कहे हुए वाक्य याद आ गये। दोना ही बड़ी देर तक ठहाका मार मार कर हसते रहे।

■■■

भीगे पलाश

रिटायर हाकर श्यामलदा गहर साच म पड़ गय कि अब किधर जाय। कहा घासला बनाय। जीवन भर ता घाणी के बल की तरह पिसत रह। कभी इधर ता कभी उधर, खाया पिया पढ़ा और पढ़ाया। जहा भी रह उसी स्कूल का समर्पित हाकर रह गये न दीन का फिक्र की आर ना दुनिया की। कभी मन म यह विचार भी न आने पाया कि एक न एक दिन सेवामुक्त हाग तब क्या करग कहा जायग। वे सिफ वतमान का ही जीत रहे आर समय पख लगाकर व आवाज उड़ता रहा।

फिकर तब कर न इसान जब उसक आग पीछ बहुत बड़ा भरा-पूरा परिवार हा बाल बच्चा की लाइन लगी हा। श्यामलदा युवावस्था म अपन माता पिता की जिम्मदारिया निभाते रह। फिर पिता का दहावसान हा गया। इनक पिता वदात के धुरधर विद्वान थ। इसलिये विद्वता श्यामलदा का विरासत म ही मिल गइ थी। पिता क दहावसान क पश्चात सारे परिवार की जिम्मदारिया इनक कधे पर आ टिकी थी। भाई बहिना क लिए अपना सवस्व होम कर इन्होन उन्हे अपने परो पर खडा कर दिया था। बाद मे वे लोग सब कुछ भूल गये तो क्या हुआ श्यामलदा का उत्तरदायित्व तो खत्म हा गया। बहिना को सस्कारित कर घर वर ढूढ कर उन्ह विदा किया तत्पश्चात अपनी इकलौती सतान दीपाली की ओर व अच्छी तरह स ध्यान दे पाये। इसी बाच उनकी माताजा भी चल बसी जिसका श्यामलदा को गभीर आघात पहुचा। पिता क पश्चात माता की छत्र छाया तो थी, परतु जब घर के बड़ बूढ़े अचानक चल दत ह तो घर एक बार ता बिखर ही जाता ह। बहुत धीरे धीरे स्थितिया सामान्य हा पाती ह।

श्यामलदा अपन छाटे से परिवार मे पूर्णतया सतुष्ट थे लेकिन भगवान की लीला अपार ह। वह बठे बठे न जाने किस किसके बारे मे, क्या क्या सोचता रहता ह। कभी किसी को चिन्तामुक्त तो रहन हा नही देता। शिक्षा का समर्पित श्यामलदा के रिश्तेदारा ने दीपाली की माग करना प्रारभ कर दी जिसस व बहुत पशोपेश मे पड गय। दीपाली की सुदरता दीपाली का कठ दीपाली के उत्तम सस्कारा का जो भी दखता या सुनता वही उस पर मुग्ध हा जाता। इतनी शात

आर सुशील कन्या को सभी अपने घर की लक्ष्मी बना लेने को लालायित हो उठते। सच ही तो है जब चमन में गुलाब खिलता है तो उसकी सुरभि पूरे उद्यान में अपने आप फैल हो जाती है यही हुआ दीपाली के साथ।

येन केन प्रकारेण श्यामलदा सबको टालते ही रहे। किसी से सविनय कहते— बच्ची अभी छोटी है तो किसी से उसके पूरे शिक्षित हो जाने की बात कहकर पीछा छुड़ा पाते। इनका कथन सुन सुनकर कुछ लोग उनसे रुष्ट हो गये तो कुछ बात में सच्चाई को समझ कर चुप रह गये फिर समय के साथ साथ एक दिन ऐसा भी आया कि ग्रेजुएट होते ही दीपाली की धूमधाम से शादी हो गई और वह ससुराल चली गई। मां बाप सूने रह गये— बेटा होता ही है पराई आखिर उसे कब तक रखा जा सकता है यही सोचकर हर माता पिता की तरह उन्होंने भी धैर्य धारण कर लिया।

श्यामलदा का समय तो स्कूल की व्यस्तताओं में कट जाता और शाम से लेकर रात तक अपने कमजोर विद्यार्थियों को जो उनके घर आ आकर पढ़ना चाहते थे- उन्हें पढ़ाया करते थे। रह गई मृदुहासिनी उनकी पत्नी वह भी घर के कामकाज अध्ययन और लेखन आदि में अपना काटे न कटने वाला अकेलापन वह भी किसी तरह गुजार ही लेतीं। इस तरह साल पर साल हवा के पंख लगाकर उड़ते रहे भागते रहे और ये लोग उसके पीछे-पीछे घिसटते रहे। ऊब ऊबकर जीने को घिसटना ही कहेंगे न ?

दीपाली को संगीत में निपुण मृदुहासिनी ने ही बनाया था। सितार, तबला हारमोनियम सभी तो था उनके घर में। श्यामलदा भी अच्छी मृदंग बजाना जानते थे। कई बार मूड में आ जाते तो संगीत समारोहों में स्वयं ही मृदंग को सम्हाल लेते। यदि गायक जरा सा भी बेसुरा हुआ नहीं कि ये फौरन वहां से उठकर मुस्कुराते हुये अपनी खाली कुर्सी पर आ बैठते। वे कहते तो कुछ नहीं पर जानने वाले भी तो कयामत की नजर रखते थे वे स्थिति को फौरन समझ जाते। श्यामलदा की मुस्कुराहट में अपनी मुस्कुराहट मिला देते फिर दोनों ओर मौन छा जाता और कार्यक्रम चलता रहता।

परन्तु जबसे बेटी विदा हुई थी इन वाद्यों की ओर किसी ने आंख उठाकर देखा तक भी नहीं था। उन पर ज्यों का त्यों मखमली कवर चढ़ा हुआ था। बस कभी कभी इन पर जमी धूल की परत अवश्य हटा दी जाती थी वह भी बमन से। मृदुहासिनी का मन अब किसी भी काम में रम नहीं पाता था। दिनभर बुझी सी रहतीं। अकेलापन उन्हें खाये जा रहा था दीवारें काट खाने को दौड़ती रहतीं। कभी-कभी रोटी का गस्सा (कौर) गले में अटक कर रह जाता। मन हुआ तो पूरा भोजन बनाया नहीं तो केवल भात बनाकर दही या घी से खा लिया। मछली तो उस गांव में मिल पाना एक असंभव सी बात थी।

देखा जाय तो प्रत्येक व्यक्ति बहुत दिनो तक न तो ज्यादा अकेलापन सहन कर पाता है और न ज्यादा भीड़ भाड़ ही। अन्दर खिसकते होता है इसान म। रह रहकर मृदुहासिनी को दीपाली की याद सताती रहती सोचती कि कितना अच्छा हो यदि दीपाली और रमेश बाबू आकर कुछ दिन हम लोगो के साथ रह जाय। इस बाबत उसने जब तब कलकत्ता पत्र भी लिखे थे। —दीपाली के सास ससुर से भी विनती की थी।

दीपाली की शादी को तीन वर्ष बीत चुके थे, इस बीच उसने प्रथम प्रसव म ही दो कन्या रत्नो (जुड़वा) को जन्म दे दिया था। मृदुहासिनी ने गगापूजन के अवसर पर अपनी सामर्थ्य के अनुसार सामान भेज दिया था लेकिन दीपाली की सास रगमाला ने बजाय तारीफ करने के या सतुष्ट होने के, पता नही क्या-क्या उलाहने और कमिया निकाल कर इन लोगो को मानसिक चोटे पहुचाई थी। इन दोनो पति पत्नी ने चुपचाप सब कुछ शिरोधार्य कर लिया था। इस प्रकार के अनेक किस्से वे अपने कलेजे म छिपाये बैठे थे फिर भी समय शातिपूर्वक गुजर रहा था। बस कभी-कभी बेटी की यादो की लहर जोर मार जाया करती थी तो दोनो पति पत्नी आपस म बात करके शात हो लेते।

रिटायर होते ही श्यामलदा को अपने गाव वाले पैतृक मकान की याद आई जहा इनका बचपन बीता था। कच्चे पक्के आम अमरूदो इमली और बेरो को इनकी बाल मडली कभी सही सलामत न रहने देती थी। श्यामलदा की पढ़ाई की वजह से ही इनके पिताजी इन्हे लेकर मिदनापुर चले आये थे। इसी बाप दादा के गाव म आकर इन्होने उस खण्डहरनुमा मकान को इसाना के रहने लायक बनवाया था फिर उसम रहे लेकिन इस बार जिन्दगी के ताम झाम इतने ना रहे जितने पहले रहा करते थे।

श्यामलदा अपने गाव की स्थिति देखकर कई बार आश्चर्यचकित रह जाते कि इस बीसवीं शताब्दी म भी उनका गाव गाव ही कैसे रह गया। न यहा बिजली न पानी न स्कूल और न रोजमर्रा की पूर्ति हेतु दुकाने— कैसा गाव है यह ? इस ओर सरकार का ध्यान क्यो नही गया— ? क्या वे इन गाव वालो से वोट नही लेते— या इन लोगो (गाव वालो) ने ही कभी अपनी जरूरी आवश्यकताओ को उनके सामने पेश नही किया ?

कहा गई इनकी चेतना ? कैसे जीते है ये लोग। लगता है मुझे ही इस गाव के बारे म कुछ करना पडेगा। पानी बिजली स्कूल और दवाखाना तो मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओ म है— ये तो हर गाव म होना ही चाहिये। पानी और बिजली का काम हो जाने पर सड़को और बसो के बारे म भी सोचूगा। म कल ही जाकर सबधित अधिकारियो से सम्पर्क करूगा।

बेचारी ग्रामीण बालाय दूर-दूर स पानी लकर आती हे चाह धूप हो या वर्षा जाडा हो या आधी-तूफान। पानी नही तो कुछ भी नही। गाव के सारे मर्द कोई तागा चलाता ह ता कोइ ऊटगाडी कोइ शहर म जाकर मजदूरा करके आत ह। पाच सात घर तो यहा सपेरा के भी ह य लोग भी अपने अपन पिटार ल लेके दर व दर घूमते रहते ह। बेचार क्या कर सबके साथ पट जा लगा हुआ ह___ इस पेट के पीछे ही सारे दद-फ्द दुनिया को करने पडते ह।

कई दिन स श्यामलदा की आख बुरी तरह से फड़क रही था व किसी अनिष्ट की आशका स मन ही मन बहुत परेशान हो रहे थे कि आज अचानक उन पर वज्रपात ही हो गया। उनके दामाद खगेन घोष का सुरग दुर्घटना मे निधन हो गया। दोना पति-पत्नी छाती पीटकर राते रहे फिर विचार आया कि चलकर दीपाली को सम्हालना चाहिय। पता नहीं उस बेचारी पर क्या बीत रही होगी। आनन-फानन म कुछ सामान थला मे ठूसा गया आर रवाना हो गये।

उबाऊ लम्बी यात्रा का एक एक पल भोगकर दीपाली के माता पिता समधी के द्वारे जा पहुचे। सकडा की भीड़ आगन म जुड़ी हुई थी। इन्ह आया देख रुदन आर सिसकारियो को दार चल पडा। बेटा पर निगाह जाते ही इन दोना का कलेजा फट पडा। इन तीन दिना म दीपाला की पूर्णतया काया ही पलट चुकी थी। चाडे ललाट से तपते सूरज जेसा सिंदा सदा सदा के लिए गायव हो चुकी थी। श्वेत वस्त्रा म लिपटी हुई वह जिदा लाश स कम नही लग रही थी उसे श्री हीन देखकर ये दोनो बुरी तरह से विलख पडे।

जो कोई भी खगेन के बारे मे सुनता वही दाडा चला आता। सभी खगेन के बारे मे अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थ। कोई कहता खगेन बहुत ही सीधा लडका था___ कोई कहता बहुत साम्य था, तो किसी बुजुर्ग ने कहा - बेचारा सवा साल का था तभी उसकी माता का निधन हो गया था___ कितने दु ख भोगे थे उस नन्ह मासूम बच्चे ने।

दीपाली की सास आई तो मृदुहासिनी से चिपक कर रोने लगी। तभी मृदुहासिनी को मालूम पडा कि धनबाद मे कोयले की खान म पानी भर गया था पता नही सकडा आदमी कहा लापता हो गये। आज तीन दिन हा गये खगेन बाबू का कही भी पता नहीं चला। जा शव निकाले गये थे वे पहिचान मे नही आय इतने फूल गये थे कुछ मत पूछो। बाकी सब कहा गये किसी का भी किसी का खबर नही।

मृदुहासिनी के जी म आया कि वह दाड़कर खदान तक जाये आर अपनी आखो से खगन का तलाशे। पर मजबूर___ जसा सब कर रहे थ वसा ही उसे

भी करना पड़ा। किसी तरह से रोते कलपते तरह दिन रात गये। दूर दराज से आये हुए सभी एक एक करके लौटने लगे। अब श्यामलदा भी वापस जाना चाहते थे इसलिए उन्होंने अपनी समधिन से आज्ञा मांगी।

रंगमाला और मन्दिरा (दीपाली की सास व ननद) खाना ही नौकरों से करवाये हुए ब्राह्मण भोजन का शेष बचा भोजन और बिखरे सामानों को यथा स्थान रखवा रही थीं____ श्यामलदा की बात सुनकर बोली बियना जी (समधी जी) हम लोगों ने एक विचार किया है कि__ अब खगेन तो रहा नहीं__ दीपाली यहां रह कर क्या करेगी_ न हो तो अब आप ही उसे ले जाये। हमारे लिये अब इसका होना या न होना कोई मायने नहीं रखता। __मैं समझूंगी कि बेटे के साथ-साथ_।

रंगमाला के मुख का भाव उस समय देखने लायक था। सच भी है- रोगी भोगी और योगी नेत्रों से ही पहिचाने जाते हैं। जो नेत्रों की भाषा समझने की योग्यता रखता है वह इन तीनों को सरलता से पहिचान लेता है। मृदुहासिनी समझ गई थी रंगमाला मन की रोगी है_ वरना दीपाली को इतने ताजा घाव के बाद इस तरह से त्यागती नहीं? _लगता है पीछा छुड़ाना चाह रही है। अब इसके सामने रोने और गिड़गिड़ाने से कोई फायदा नहीं। _जिसमें मानवता नहीं_ संवेदनाएं नहीं भला वह किसी के समझाये समझता है क्या?

मृदुहासिनी ने अपने क्रोध को छुपाते हुए एवं अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए, मन में यह जानते हुए कि समधिन की भले ही गलती हो पर उससे नम्रता से ही पेश आना चाहिये वर्ना बेटी का भविष्य अंधकार से और भी अंधकारमय हो जायेगा_ वे सहमी और दुःखी सी बोलीं- जैसी आपकी आज्ञा आप कहती हैं तो हम ले जाते हैं इसे। आपकी जब इच्छा हो तब बुलवा लेना। मृदुहासिनी की बात सुनकर रंगमाला ने दो टूक कहा अब दीपाली का यहां क्या काम? इस बात को सुनकर झरना (दीपाली की जिठानी) को बहुत दुःख हुआ था लेकिन वह अपनी सास का विरोध भला कैसे कर पाती।

औरतें जब आपस में बात कर रही थीं तब वहां की आवाज श्यामलदा के कानों में टकरा कर घन की सी चोट कर रहा थी। वे स्वयं की और अपनी जेब की स्थिति से भलीभांति परिचित थे। एक स्कूल मास्टर भला अपनी जिंदगी में कितना कुछ बचा पाता है। जो कमाया वही परिवार के __ परण आदि आदि में निरंतर गंवाते रहे। __फिर साथ में दो-दो अबोध बेटियां भी आ जुड़ीं करूं मैं मुझे कैसा दण्ड दे रहा है तू। है
दिमाग की नस फटने को हो आ

(समधी) से एकात मे जाकर सलाह मशविरा कर लिया जाय देख व क्या कहते है। यही सोचकर वे उनके कमरे की ओर चल दिये। लेकिन वहा का नजारा देखकर उन्हे उल्टे पैरो वापस लौट कर आना पडा।

भवतोष जी हर समय मदिरा पान किये रहते थे जिसकी वजह से उनकी आख गूलर की तरह लाल रहा करती थीं। वे हमेशा मौन रहते अत्यत आवश्यकता पड़ने पर ही बोलते। वह भी जब उनकी स्वय की मर्जी होती तब। उनका रहन सहन और वेश भूषा किसी पुराने जमाने के रईस जमीदारो जैसी थी। उगलियो मे कीमती रत्नो की अगूठिया। गले म तीन लड़ी वाली स्वर्ण श्रृखला (चेन) सिल्क का कुर्ता ब्रासलेट की धोती नागरा जूते। गौरवर्ण, काले घुघराले केश दमकता चमकता चेहरा और उम्र यही कोई साठ पैसठ के आस पास।

ये था भवतोष जी का मोटा मोटा परिचय। मदिरा म हर समय मस्त रहने की वजह से ही उनकी पत्नी रगमाला पूर्णतया उद्दण्ड और निर्भीक हो गई थी। उस पर यह कहावत पूर्णतया चरितार्थ होती थी कि 'परम स्वतत्र न सर पर कोइ।" श्यामलदा उस घर की सारी स्थिति को एक क्षण म ही भाप गये थे कि अब दीपाली का यहा कोई रोल शेष नही बचा। जब खगेन को ही विमाता का प्यार नहीं मिला तो दीपाली को उस घर से स्नेह मिलना असभव है-_ और भवतोष जी ? वे तो होते हुए भी न के बराबर थे किसी ने सच ही कहा है कि जब मा दूसरी हो जाती है तो बाप तीसरा पहले ही बन जाता है। यदि बाप ने ही ध्यान दिया होता तो खगेन समय से पूर्व कैसे टूट कर बिखर जाता ?____ इतने लोग जो बात बना रहे थे वे मन से थोड़े ही गढ़ रहे थे। सच है जहा आग होती है वही धुआ उठता है।

श्यामलदा बेटी और बेटी की दोनो बेटियो को लेकर गाव आ गये। समय धीरे-धीरे रेंगने लगा। बेटी के वैधव्य दु ख से मा बाप का बुढ़ापा बिगड चुका था। घर मे श्मशान की सी गहरी चुप्पी हमेशा छाई रहती।

एक दिन श्यामलदा की चुप्पी देखकर मृदुहासिनी भयभीत हो उठी- बोली क्या बात है बहुत दिनो से देख रही हू__ हमेशा गहरे चिन्तन म खोये रहते हो__ न ढग से हसते बोलते हो न ढग से खाते पीते हो__ कब से परोसी थाली सामने रखी हुई है। चिंता करने से कभी फायदा हुआ है क्या ? जैसे देवी मया रखेगी बस ही सब जा लगे। __आ जाओ___ पहले चैन से भोजन कर लो। मृदुहासिनी के लहजे मे खुशामद का पुट था। वे नहा चाहती थीं कि परिवार का एक मात्र पालक पुरुष इतना उदास और चिन्ताग्रस्त रहे। वे मन ही मन भयभीत रहती थी सदा अपने सुहाग की मगलकामना देवी मया के सामने किया करती थी कि परिवार के एक मात्र पुरुष को हम सब की उम्र लग जाए।

भी करना पड़ा। किसी तरह से रोते कलपते तरह दिन बीत गये। दूर-दराज से आये हुए सभी एक एक करके लौटने लगे। अब श्यामलदा भी वापस जाना चाहते थे इसलिये उन्होंने अपनी समधिन से आज्ञा मांगी।

रगमाला और मदिरा (दीपाली की सास व ननद) दोनों ही नौकरों से कल हुए ब्राह्मण भोजन का शेष बचा भोजन और बिखरे सामानों को यथा स्थान रखवा रही थी____ श्यामलदा की बात सुनकर बोली बियनी जी (समधी जी) हम लोगों ने एक विचार किया है कि__ अब खगेन तो रहा नहीं__ दीपाली यहा रह कर क्या करेगी__ न हो तो अब आप ही उसे ले जाय। हमारे लिये अब इसका होना या न होना कोई मायने नहीं रखता। __मै समझूगी कि बेटे के साथ-साथ__।

रगमाला के मुख का भाव उस समय देखने लायक था। सच भी है- रोगी भोगी और योगी नेत्रों से ही पहिचाने जाते हैं। जो नेत्रों की भाषा समझने की योग्यता रखता है वह इन तीनों को सरलता से पहिचान लेता है। मृदुहासिनी समझ गई थी रगमाला मन की रोगी है__ वर्ना दीपाली को इतने ताजा घाव के बाद इस तरह से त्यागती नहीं? __लगता है पीछा छुड़ाना चाह रही है। अब इसके सामने रोने और गिड़गिड़ाने से कोई फायदा नहीं। __जिसमें मानवता नहीं__ संवेदनाये नहीं भला वह किसी के समझाये समझता है क्या?

मृदुहासिनी ने अपने क्रोध को छुपाते हुए एवं अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए, मन में यह जानते हुए कि समधिन की भले ही गलती हो पर उससे नम्रता से ही पेश आना चाहिये वर्ना बेटी का भविष्य अंधकार से और भी अंधकारमय हो जायगा__ वे सहमी और दुखी सी बोली- जैसी आपकी आज्ञा आप कहती है तो हम ले जाते हैं इसे। आपकी जब इच्छा हो तब बुलवा लेना। मृदुहासिनी की बात सुनकर रगमाला ने दो टूक कहा अब दीपाली का यहा क्या काम? इस बात को सुनकर झरना (दीपाली की जिठानी) को बहुत दुख हुआ था लेकिन वह अपनी सास का विरोध भला कैसे कर पाती।

औरते जब आपस में बात कर रही थी तब वहा की आवाज श्यामलदा के कानों में टकरा कर घन की सी चोटें कर रही थी। वे स्वयं की और अपनी जेब की स्थिति से भलीभांति परिचित थे। एक स्कूल मास्टर भला अपनी जिंदगी में कितना कुछ बचा पाता है। जो कमाया वही परिवार के जनम मरण परण आदि आदि में निरतर गवाते रहे। __फिर दीपाली अकेली तो नहीं था__ साथ में दो-दो अबोध बेटिया भी आ जुड़ी थी__ मैं क्या करूं? हे ईश्वर, यह बुढ़ापे में मुझे कैसा दण्ड दे रहा है तू। कैसी परीक्षा ले रहा है? सोचते सोचते उनके दिमाग की नस फटने को हो आई। तभी उनकी इच्छा हुई कि भवताप जा

(समधी) से एकात मे जाकर सलाह मशविरा कर लिया जाय देख व क्या कहते है। यही सोचकर वे उनके कमर का ओर चल दिये। लेकिन वहा का नजारा देखकर उन्हे उल्टे पैरो वापस लौट कर आना पड़ा।

भवतोष जी हर समय मदिरा पान किये रहते थे जिसका वजह से उनका आख गूलर की तरह लाल रहा करता थी। वे हमेशा मौन रहते अत्यत आवश्यकता पड़ने पर ही बोलते। वह भी जब उनकी स्वय की मर्जी होती तब। उनका रहन सहन और वेश भूषा किसी पुराने जमाने के रईस जमींदारो जैसी थी। उगलिया मे कीमती रत्नो की अगूठिया। गले मे तीन लड़ी वाली स्वर्ण श्रृखला (चेन) सिल्क का कुर्ता ग्रासलेट की धोती नागरा जूते। गौरवर्ण काले घुघराले केश दमकता चमकता चेहरा और उम्र यही कोई साठ पैसठ के आस-पास।

ये था भवतोष जी का मोटा मोटा परिचय। मदिरा मे हर समय मस्त रहने की वजह से ही उनकी पत्नी रगमाला पूर्णतया उद्दण्ड और निर्भीक हो गई थी। उस पर यह कहावत पूर्णतया चरितार्थ होता था कि "परम स्वतत्र न सर पर कोइ।" श्यामलदा उस घर की सारी स्थिति को एक क्षण मे ही भाप गय थे कि अब दीपाली का यहा कोई रोल शेष नही बचा। जब खगन को ही विमाता का प्यार नहीं मिला तो दीपाली को उस घर से स्नेह मिलना असभव है-_ और भवतोष जी ? वे तो होते हुए भी न के बराबर थे किसी ने सच ही कहा है कि जब मा दूसरी हो जाती है तो बाप तीसरा पहले ही बन जाता है। यदि बाप न ही ध्यान दिया होता तो खगेन समय से पूर्व कैसे टूट कर बिखर जाता ?____ इतने लोग जो बात बना रहे थे वे मन से थोड़े ही गढ रहे थे। सच है जहा आग होती है वहीं धुआ उठता है।

श्यामलदा बेटी और बहू की दोनो बेटिया को लेकर गाव आ गये। समय धीरे धीरे रेगने लगा। बेटी के वैधव्य दुख से मा बाप का बुढापा बिगड़ चुका था। घर मे श्मशान की सी गहरी चुप्पी हमेशा छाई रहती।

एक दिन श्यामलदा की चुप्पी देखकर मृदुहासिनी भयभीत हो उठी बोली क्या बात है बहुत दिनो से देख रही हू_ हमेशा गहरे चिन्तन मे खोये रहते हो_ न ढग से हसते बोलते हो न ढग से खाते पीते हो_ कब से परोसी थाली सामने रखी हुई है। चिंता करने से कभी फायदा हुआ है क्या ? जैसे देवी मैया रखगी वैसे ही सब जी लेगे। __आ जाओ__ पहले चैन से भोजन कर लो। मृदुहासिनी के लहजे मे खुशामद का पुट था। वे नहीं चाहती थी कि परिवार का एक मात्र पालक पुरुष इतना उदास और चिन्ताग्रस्त रहे। वे मन ही मन भयभीत रहती थी सदा अपने सुहाग की मगलकामना देवी मैया के सामने किया करती थीं कि परिवार के एक मात्र पुरुष को हम सब की उम्र लग जाए।

आगन म खुलने वाले दरवाजे का खालकर आसमान की आर निहारन लगी। घटाटाप बादल घिर हुए थ। वषा की तज बौछारा न उसका अभिनदन किया। छाट उस पर पड़ते रहे आर वह वषा की बूदो का सगीत बेमुध होकर सुनता रहा। ...उसे महसूस हुआ जस य बूद हवा क साथ आड़ी तिरछी हा उसम कुछ कह रही हा... दापाला अपन का बदल डाला...... अपन लिए न सही अपना बटिया के लिए जिओ...... हसा बाला।

मन म व्यापे श्मशान क से सन्नाटे को वषा की प्रथम झड़ी ने अनजान हा तिरोहित कर दिया। मन म शशव की कल्पनाय फिर स जाग्रत हो उठीं दीपाली उनम खो गई। उसी धुन म वह धीर-धीरे कदम बढ़ाती हुई आगन के बाचा बीच जा खड़ी हुइ। वषा की बाछारा ने उसका तन मन सभी भिगो दिया उस लगा जस विषाद की परत जा उसक मन म आठ महीना स जमा हुई थी व अपने आप एक-एक करक पिघलती चली जा रही ह। गहरी जड़ जमाय विचारा न चुपके स करवट बदल डाली।

मनुष्य ही एकमात्र एसा प्राणी ह वह कब क्या निर्णय ल ल यह ता समय हा बताता ह कभी-कभी किसी इलाज क लिए बड़ बड़ वैद्य डाक्टर हार जात ह आर एक छाटी सा भभूत की पुडिया से रोग ठीक हो जाता ह यही हुआ था दीपाली क साथ। अगिम जावन जान के लिए दीपाली का एक नया जन्म लेना ही पड़ा।

वषा का रिमझिम अब पूण रूप स थम चुकी थी। वृक्षा क पत्त नहा धाकर साफ सुथरे नजर आ रहे थी दीपाली ने कपड बदले। सुबह हा चली था आकाश साफ हो गया था। उसने दर्पण मे जाकर अपना चेहरा दखा। आज उस अपना चेहरा अनजाना सा लगा। तभी उसे अपने माता-पिता का ध्यान हा आया जो दीपाली के दुखी रहने की वजह से मान आर सहमे सहमे से रहा करते थे।

दापाली अपन पापा-मम्मी के कमर म गई जहा दोना अभी सा रह थ। उसे महसूस हुआ कि बेचारे मरी वजह से...। म अगर किसा को प्रसन्नता नहा दे सकती तो दुखी भी क्यू रखू? जो कुछ मरे साथ घटना था सा घट चुका। अब तो खगेन लाट कर नहीं आयगा। क्यो न म अब अपने आपको बदल डालू इतने दिना तक मने अपने आपको छिजाया... मुझे क्या मिला... नही एस काम नही चलगा... मुझे कुछ करना चाहिए। इन दोना न जा पाठशालाय चला रखी ह उनमे हा म अपना पूरा यागदान दूगी, मेरे खुश आर व्यस्त रहने स हा इन बचारो का बुढापा बोझिल हाने स बच जायगा। इनी मिना भी स्वाभाविक जिदगी जा सकगा। वर्ना मुझे गुस्सल चिड़चिडी आर उदास देखकर इनका

भविष्य बिगड़ भी सकता है। उसने तरह तरह से अपने आपको समझाया बहलाया और फुसलाया।

बरखा के शीतल जल ने उसके मन के विषादों की उष्णता को बहा कर तिरोहित कर दिया था उसने सोचा कि वैधव्य की मोहर तो अब भाग्य में लग ही चुकी है। उसे तो किसी भी प्रकार से मिटाया नहीं जा सकता। व्यर्थ में रोने और कलपते रहने से अभी तक क्या मिला? अब काम नहीं चलेगा। खुद की जिंदगी और बिटिया के भविष्य के बारे में भी सोचना पड़ेगा अन्यथा बाबूजी कब तक और कितना भार ढो पायेंगे। —मुझे आंसू पोछकर आगे की पढ़ाई करनी चाहिये ताकि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकूं। और खगेन की दी हुई प्यार की सौगात को पाल पोस कर किसी लायक बना सकूं— अब मुझे अपने लिए नहीं इनके लिए जीना चाहिए— ।

संसार के साथी तो सब झूठे होते है। पल दो पल का साथ निभाकर किनारा कर जाते है। सच्चा साथी तो व्यक्ति का अपना ही गुण होता है— यही मुझे भी निर्भय बनायेगा। फिर क्या खुद भी दुखी रहूं और मां बाप की हंसी छीनूं, नहीं अब ऐसा नहीं करूंगी।

वह उलटे पैरों लौट आई और उस कमरे की ओर मुड़ गई जहां पर वाद्य रखे हुए थे। सितार के ऊपर ढके कवर को हटाकर वह मौन पड़े तारों को झंकृत करने लगी। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसके अंदर किसी साहसी महिला ने जन्म ले लिया हो— जो हर संकट का सामना करने के लिए अब उठ खड़ी हुई हो। आज कितने लम्बे समय के पश्चात् उसके ओठों पर स्मित हास्य उभरा था ——— कैसे दुःख के अथाह सागर में डूब जाने से अपने आपको बचा पाई थी।

■ ■ ■

तलाश घर की

जिन्दगी के प्रति हर व्यक्ति का अपना अपना नजरिया होता है। लेकिन विरला ही एसा कोइ नजर आता है जिसने अपनी इच्छानुसार पूरी जिंदगी जी ली हो। उस दिन महिला सम्मलन म काव्य गोष्ठी चल रही थी। अनक कवयित्रिया वहा मोजूद थी। पुष्पा जी माइक पर आइ और अपनी 'जिंदगी' नामक कविता सुनान लगी। कविता इस प्रकार थी।

पल पल कटती ह जिंदगी हर पल घटती ह जिंदगी।
सुबह झड़ती ह जिंदगी शाम की चादर सी खिलती ह जिंदगी॥
चाय की भगौनी म चम्मच सी घूमती ह जिंदगी
दिन भर धूप म रोटी सी सिकती है जिंदगी॥
फिर भी नसीब नही पल दो पल की जिंदगी....।

पुष्पा जी अपनी कविता सुनाने म व्यस्त थी लेकिन तरलिका जिसका बचपन का नाम तरु ह न जान अतीत की किन तग गलियो क बीच डूबने उतराने लगी। उस पुष्पा जी की कविता की प्रत्यक पक्ति जानी पहिचानी सी और अपनी जिंदगी से मल खाती हुई सी लगी। इतनी बडी भीड म होत हुए तरु उस परिवार म खो गई जिसे कि लोग तरु का घर समझत ह लेकिन तरु को तो उसस कटुताय ही कटुताये मिली थी। अपने और पराया न सिर्फ दश ही दश डाले थ उसकी झोली म। उसने अक्सर लोगो को कहते हुए सुना था कि सब दिन एक समान नहीं बीतत। आज दुख की पराकाष्ठाए ह तो कल थोड़ा सा ही सही सुख अवश्य मिलेगा। लेकिन तरलिका के साथ एसा कुछ भी नही हुआ कभी भी नही हुआ।

तरु की जन्मपत्री म कुछ ग्रह ऐसे ही पड़े थे कि यावत्जीवन सब कुछ उसके प्रतिकूल ही चलता रहा। एक साधारण स परिवार मे जन्म लेना और फिर अभावो म जीना जहा व्यक्ति को पीडाए सहन करन की शक्ति प्रदान करता ह वही वह व्यक्ति निरतर अपनी इच्छाओ के कुचल-रोद जान पर खोखला भी हो उठता ह। वह समाज के साथ हसता-रोता उठता-बठता अवश्य ह। लेकिन अपन को दीन-हीन लावारिस सा महसूस करके। नन्ही तरलिका के सम्पन्न

परिवारो की सखिया जब जब नय वस्त्रो का पहनकर उसके सामन स गुजरता थीं तो कोइ भी अन्दाजा लगा सकता ह कि तरु के हृदय पर क्या गुजरती हागी। उच्चाकाक्षाआ से भरी हुइ तरु का भी जी चाहता था कि वह भी रग बिरगी सुदर डिजाइनदार फ्रॉक पहन कर परियो की रानी की भाति इधर उधर चहकती फिरे।

लेकिन उसके भाग्य म जोड-तोड एव राशन के सस्ती छींटा वाल कपडो से ही वचपन गुजारना लिखा था। माता पिता का घर जन-धन की सम्पन्नता से किसी बालक को आत्मबल प्रदान करता ह ता वही श्रीहीन घर, उसे न जाने कितनी-कितनी कुठाओ से आतप्रोत भी कर, निरतर दहलाता आर चुभता सा रहता ह। वह कभी बाल-भाव के कारण अपने पिता से जिद भी किया करती थी कि मुझे भी फला वस्तु लाकर दो तो बदले म हमेशा यही उतर उसे मिलता जब अपने घर जाओ तभी अपनी समस्त इच्छाआ की पूर्ति कर लना। बच्ची तरलिका का मन तब यह समझ नही पाता था कि अपना घर कानसा होता ह? जन्म तो मैंने यहा लिया ह फिर यह घर मेरा क्यो नही हे? — तो क्या यह मरा घर नहीं। मरा घर कानसा होगा कहा हागा आदि-आदि कई प्रश्न दिमाग म बनते आर बिगडते रहते।

तरलिका के पूरे दूध के दात भा न झड पाये थे कि उसका शादी हो गई। उसका इच्छाआ आर अनिच्छाआ के दमन का अटूट सिलसिला यहीं से चल पड़ा जिसका कोई आदि था न अत। उठने बठने हसने बोलन खलने मचलने आर ओढ़ने पहिनने तक की आजादी उससे छीन ली गई थीं। जिस लड़की ने अपनी मा के घर सिफ फ्राक ही पहनी हो अभी पूरी तरह स आख भी न खुल पाई थी कि एक सुबह उसे भारी साड़ी के साथ-साथ मोटी चादर (ओढनी) से भी ढक दिया गया था। जसे वही एक मात्र दुनिया की सबसे भद्दी आरत हो। बात यहीं तक रहती तो भी चलता। लेकिन उसकी तो अब शामत आ गई थी जब उसको ठोड़ी से नीचा घूघट कढ़वा कर, जनाने मरदाने सभी क सामने पर्द में रहने की सख्त हिदायते दे दी गई थीं। बीसवी शताब्दा म भी मध्ययुगीन विचारधारा रीति रिवाज आर परम्पराओ से ग्रस्त परिवार पाकर वह हक्की बक्की रह गई। 'इधर गिरो तो कुआ उधर गिरो तो खाई' वाली स्थिति था। दाता के बीच जीभ जिस तरह रहती ह उस तरह उसे रहना पड़ रहा था।

मन बहलाने वाले क्षण उसकी पकड से दूर बहुत दूर होते चल गये। कुछ हमउम्रा ने उसे कभी अपनाया नही उन्हे हर पल यही अहसास होता कि हमारे घर यह कानसा कीड़ा आ घुसा जबरदस्ती अधिकार जमाने। फिर पूछा मत ऐसे लोगो ने कान कान से षडयन्त्र उसके खिलाफ नहीं किये। तरलिका के अलावा

सारे सदस्य उसी घर म थ उन सभी बातो की आजादी भी थी। शामत तो तरलिका की थी जो कि ग म नामा पहने हुए इस घर मे आइ थी आर ग्ह का काम सिर्फ ऐसी मशीनी नमा हाता ह जिसे खान, पहनन को मिल जाय वस इसक अलावा उस आर कुछ भा अधिकार नहीं। अपनी मर्जी से न कहा आना न कहीं जाना। यहा तक कि अपन मर्जी स किसी म बतिया लन तक का स्वतत्रता भी उससे छीन ली गइ था। बड़-बड़े पहर आर पहरदारा की मडलिया भी आई डी वालो को भी मात द दे एसे माहाल मे उसक दिन रात कस बीतत हाग इसको कोई सहदय आर विवका व्यक्ति ही समझ सक्ता ह।

एसी स्थिति मे तरलिका को घुटन सी महसूस हाती रहती। जिस मायके म उसके मिष्ठ भाषण आर तमीज की धाक थी- वही ससुराल म आकर उन सब बातो के अर्थ बदल गये थे। उसकी प्रत्यक बात का अर्थ का अनर्थ निकाला जाता। उसकी चुहलबाजिया को अश्लीलता का जामा पहनाया जाता। उसक प्रत्यक लफ्ज पर भूकम्प सा आ खडा होता। हर बात पर दमन चक्र चलाकर उसे रादा जाता। उसक आत्मविश्वास को कुंठित किया जाता। निरीह निस्सहाय सी वह चुपके से रो धोकर स्वय अपने आचल स आसू पोंछ फिर सामान्य दिखने का प्रयास करती। सच ह बाल विवाह किसी का भी मालिक रूप पूर्णतया छीन लता ह आर ऐसी स्थिति ला देता ह कि उसका कोई स्वतत्र अस्तित्व नहीं रह जाता। तरु इसका ज्वलत उदाहरण थी।

तब उसे अपन मायक की बहुत याद आती। दूसरा के द्वारा का गई ज्यादतियो आर अभद्र भाषा की प्रतिक्रियाय तरलिका मे गहरी हाता गई। एकात पाते ही विचारो की गहरी गुहा म अक्सर वह खो जाती। उस छोटी सी ब्याहता बच्ची को बहुत ही डरावन सपने आत। आतकित सी डरा सहमा सकुची सिर्फ रोकर ही अपना जी हल्का कर पाती। नन्ही तरलिका क दिमाग मे पूरी तरह से पठ चुका था कि यहा अपना कोई सगा नहीं ह। नाकरानी सा तरलिका दोना प्रहरा की राटा आर सिर पर छत बनं रहन की आशा म सबका गुलामा करती रहती व्यग्य बाणा को सहती रहती आर विवश सी एक क बाद एक सताना का जन्म देती रही। इस प्रक्रिया से गुजरने के कारण, उसकी शक्ति प्रति प्रसव क्षीण होती चला गई उस पर इस घर म परायपन का आधिया क थपडे अलग से।

वर्ष पर वष यू ही गुजरत रहे नित नये पारिवारिक हादसो म बढोतरी होती रही। उसकी भावनाओं का कचूमर निकलता रहा। कभा कभी तरलिका सोचती कि स्वभाव का भावुक हाना आर बोल मे मिठास तथा व्यवहार म शिष्टता का हाना इस घर क लिए अनिवाय नहीं था। यहा तो अशिष्टता भाषा का अक्खडपन आर बदमिजाज व्यक्ति का ही जाड़ रहता। लेकिन कोई अपना

स्वभाव कैसे बदल सकता है। जिसका जैसा स्वभाव पड़ जाता है वह उसके जीव (जिन्दगी) के साथ ही खत्म होता है। कड़वा व्यक्ति कड़वा ही रहता है जैसे नीम। उस नीम को आप चाहे जितना भी घी और गुड़ से सींचा वह कभी भी मीठा हो ही नहीं सकता आप के सारे प्रयास निष्फल चले जाएगे। उसकी तरह शिष्ट और सतुलित बोली वाला व्यक्ति हजारो प्रयासो के पश्चात भी अक्खडपन नही स्वीकार कर पाता जो चीज खून मे ही नही है भला वह कहा से आ सकती है ?

सम्मान और महत्व की भूखी तरलिका के हृदय मे हजारो सुनहरे सपने भरे पड़े थे कि वह अपने घर को ऐसे सजायेगी इस तरह के परदे होगे। अपने निजी कक्ष के बारे मे तो उसने न जाने क्या-क्या कल्पनाये सजा रखी थी। लेकिन उस अपने नाम की कहीं भी कोइ जगह नहीं मिली। सब कुछ सम्मिलित हर वस्तु पर दूसरो का हस्तक्षेप।___ उसे जो कुछ भी मिला वह जूठन ही कहलाएगी।

तरलिका को उन सभी औरतो मे विशेष डाह होती है जो सचमुच मे अपने पूरे घर की मालकिन होती है जहा वे एकछत्र राज्य करती है। अपनी मर्जी से साज सजावट अपनी मर्जी से उठना बैठना। लेकिन तरलिका के भाग्य मे पूरा घर छोड़ एक कमरा भी नसीब नहीं हुआ। कहने को लोगो का यह भ्रम है कि यह घर, घर है। लेकिन तरलिका जानती है कि यह घर कैसा घर है ? इसमे कैसी कैसी भट्ठिया दहका करती है जिनमे कोई कच्चा जलता है तो कोई जलकर खाक हो जाता है। ऐसे चारो तरफ भट्ठिया वाले मकान मे जीने का मजा भला किसी को कैसे आ सकता है ? तरलिका इस सराय मे चार दिन रहकर, जैसे तैसे समय पार कर चल जाने की तमन्ना मन मे दबाये रहती थी।

लेकिन तरलिका उस दिन तो ज्यादा ही टूट गई जिस दिन उसके अपने जाये ने ही उसे घर से निकल जाने को कहा था। यह घर मेरा है मै चाहू तो एक मिनट मे तुम्हे निकाल सकता हू। उसे ऐसे ही अनेक प्रसग एकबारगी और याद हो आये। एक बार तरलिका की ननद प्रभजन कौर ने भी उससे कुछ ऐसा ही कहा था कि यह मेरे बाप का घर है ज्यादा चू-चपड़ करोगी तो चोटी पकड कर गेट आउट कर दूगी" तबसे तरलिका सब कुछ समझ गई थी। अपशब्द कहने वाला व्यक्ति कितना स्तरीय और कितना सस्कारित है किसी को कुछ बताने की आवश्यकता ही शेष नहीं बची थी। तरलिका के मन मस्तिष्क से दोनो व्यक्ति सदा के लिये गिर गये थे उसने इस युग की हवा को समझा। उसने कहीं पढ़ा भी था- 'ए सन इज सन टिल वाइफ ए डॉटर इज डॉटर टिल लाइफ।' तब वह अपनी दिवगत लड़कियो को याद करके बहुत रोई थी।

सारे सदस्य उसी घर क थ न्ह सभी जाता की आजादी भी थी। शाम तरलिका का थी जा वि ज्ह का नामा पहन हुए इस घर म आई थी आर का काम सिर्फ ऐसा नाकरानिया जमा हाता है जिसे खान पहनने को मिल बस इसक अलावा उसे आर कुछ भा अधिकार नहीं। अपनी मर्जी स न आना न कहीं जाना। यहाँ तक कि अपन मर्जी से किसी म जनिया लन तक स्वतत्रता भी उससे छीन ली गइ थी। बड़े-बड़े पहर आर पहरदारा की मडलि सी आई डी वाला का भी मात द दे एस माहाल म उसक दिन रात कस जा होग इसका कोइ सहृदय आर विवकी व्यक्ति ही समझ सकता ह।

एसी स्थिति म तरलिका को घुटन सी महसूस हाती रहती। जिस माय मे उसके मिष्ठ भाषण आर तमीज की धाक थी वही ससुराल म आकर उन स जातो क अथ बदल गये थे। उसकी प्रत्यक बात का अथ का अनर्थ निकाल जाता। उसकी चुहलवाजियो को अश्लीलता का जामा पहनाया जाता। उसन प्रत्यक लफ्ज पर भूकप सा आ खड़ा हाता। हर बात पर दमन चक्र चलाक उसे रादा जाता। उसक आत्मविश्वास का कुठित किया जाता। निराह निस्सहाय सी वह चुपके स रा-धाकर स्वय अपन आचल स आस पाछ, फिर सामान्य दिखने का प्रयास करती। सच ह बाल विवाह किसी का भी मालिक रूप पूर्णतया छीन लेता ह आर ऐसा स्थिति ला देता ह कि उसका काई स्वतत्र अस्तित्व नहीं रह जाता। तरू इसका ज्वलत उदाहरण थी।

तब उस अपने मायक की बहुत याद आती। दूसरा क द्वारा की गइ ज्यादतियो आर अभद्र भाषा की प्रतिक्रियाय तरलिका मे गहरी हाती गइ। एकात पाते ही विचारा की गहरी गुहा मे अक्सर वह खो जाती। उस छोटी सी व्याहता बच्ची को बहुत हा डरावन सपने आत। आतकित सी डरी सहमी सकुची सिफ रोकर ही अपना जी हल्का कर पाती। नन्ही तरलिका के दिमाग म पूरी तरह से पठ चुका था कि यहा अपना कोइ सगा नही ह। नाकरानी सी तरलिका दोनो प्रहरो की रोटा आर सिर पर छत बनी रहने की आशा म सबकी गुलामा करता रहती, व्यग्य वाणा को सहती रहती आर विवश सी एक के बाद एक सताना का जन्म देती रही। इस प्रक्रिया से गुजरने के कारण उसकी शक्ति प्रति प्रसव क्षीण होती चली गई, उस पर इस घर म परायेपन का आधियो के थपेड अलग स।

वष पर वष यू ही गुजरत रह नित नये पारिवारिक हादसो म बढोतरी होता रही। उसकी भावनाआ का कचूमर निकलता रहा। कभी कभी तरलिका सोचती कि स्वभाव का भावुक होना आर बोल म मिठास तथा व्यवहार म शिष्टता का होना इस घर के लिए अनिवार्य नहा था। यहा ता अशिष्टता का अक्खडपन आर बदमिजाज व्यक्ति का ही-जोड़ रहता। लेकिन काई

सांझ सांवली

मनुष्य सोचता कुछ ह आर उसे प्राप्त कुछ आर हो जाता ह। इसे भाग्य ा विडम्बना न कहा जाय तो आर क्या कहा जाय। सुनीता ने बताया था जब ह कुवारी थी तब उसने अपनी ससुराल के बारे मे कुछ सुनहरे सपने बुने थे। लेकिन मन ही मन। कॉलेज मे वह हमेशा सहेलियो से घिरी रहती थी, सभी उसकी सहृदयता के कारण उससे दोस्ती करना चाहती थी। सबकी वह प्रिय थी। लेकिन ससुराल म उसका यही मिष्टभाषण विपरीत परिस्थितिया पाकर, न जाने कहा लुप्त हो गया? चारा ओर खीझ, झुझलाहट, तनातनी ही उसे देखने को मिली।

किसी भी सवेदनशील पाधे को अगर उसकी जमीन से उखाड़ कर, अन्यत्र कहा रोपा जाता ह तो उसे अपनी जड़े जमाने म अनेक आपदाओ को झेलना पड़ता ह जिसका वह पाधा कभी अभ्यस्त नहीं रहा होता ह। उस नयी भूमि मे अन्या के समीप रहने पर जो उसके अपने नही हे परिचित भी नही ह ऐसे मे उसे तरह-तरह के अनुभव होते ह। अक्सर कटु अनुभव ही ज्यादा तो सभी जानते ह।

किस तरह से रखता ह सींचता ह— सवारता ह। उसके प्रकार की पड़ जाया करती ह। यदि सवारने वाला नासमझ होता ह तो वह पाधा एक बार तो मुरझा ही नही ह, मरती ह केवल उसकी कोमल भावनाय जहा शिकार होना पड़ता ह। स्थितिया यदि प्रतिकूल होगा।

लिये जीवन भर की धरोहर बन जाते ह। दी ह उसे किस प्रकार से खाद पानी निर्भर करता ह।

की खबर सुनकर पूरे घर म ए। लेकिन सुनीता जो इस घर की भी उन रोने वाला क समीप मस्तिष्क म आगत और

हा ता आज जब अपना से ही उसन एसे अल्फाज सुने ता गहरे साच म डूब गई। आखिर मरा घर कान सा है? भविष्य की शप यात्रा कसे गुजरगा? आशकाआ का महाप्रलय उसक मस्तिष्क का झकझारता रहा उस लगा कि वह सारी जिदगी बफ की उन सीढ़िया पर ही चढ़ती-उतरती रही, जा दूर स बहुत सुदर आर चमकदार दिखाई दता ह। बीती हुई स्मृतिया के दश ता गुल्लक म रखे सिक्का की तरह होत ह जा कि खर्च नहीं निरतर बढ़त ही जात ह। तभी तालिया का जारदार गड़गड़ाहट हाल म गूज उठी। तरलिका विचारा की दुनिया से लाट आई, पास बठी दिव्या न उसस पूछा कहा खा गई थी? मेम साब, तब तरु सिफ इतना ही बाल सकी थी 'घर की तलाश म।'————

■ ■ ■

सांझ सांवली

मनुष्य सोचता कुछ ह आर उस प्राप्त कुछ आर हो जाता ह। इसे भाग्य की विडम्बना न कहा जाय तो आर क्या कहा जाय। सुनीता न वताया था जव वह कुवारी थी तव उसने अपनी ससुराल के वारे म कुछ सुनहरे सपने वुने थे। लेकिन मन ही मन। कॉलेज म वह हमशा सहेलियो से घिरी रहती थी, सभी उसकी सहृदयता के कारण उसस दोस्ती करना चाहती थी। सवकी वह प्रिय थी। लेकिन ससुराल म उसका यही मिष्टभाषण विपरीत परिस्थितिया पाकर, न जान कहा लुप्त हो गया? चारा आर खाझ झुझलाहट, तनातनी ही उसे दखन को मिली।

किसी भी सवेदनशील पाधे का अगर उसका जमीन से उखाड़ कर, अन्यत्र कहा रोपा जाता ह तो उसे अपनी जड़े जमाने मे अनेक आपदाआ को झलना पड़ता ह जिसका वह पाधा कभी अभ्यस्त नही रहा होता ह। उस नयी भूमि म अन्या क समीप रहने पर जो उसके अपने नही ह परिचित भी नही ह ऐसे माहाल म उसे तरह-तरह के अनुभव हाते ह। अक्सर कटु अनुभव हा ज्यादा होते हे यह तो सभी जानते ह।

माली उसको किस तरह से रखता ह सींचता ह.... सवारता ह। उसके भविष्य की नीव उसी प्रकार की पड़ जाया करती है। यदि सवारने वाला सम्हालने वाला अविवेकी नासमझ होता ह तो वह पाधा एक वार तो मुरझा ही जाता ह लेकिन वह मरता नही ह मरती ह केवल उसकी कोमल भावनाये जहा उसे पग-पग पर उपेक्षाआ का शिकार होना पड़ता ह। स्थितिया यदि प्रतिकूल रही हा तो सोचो भला कसे जिंदा रहा होगा।

पूर्वार्द्ध के अनुभव ही किसी के लिये जीवन भर की धरोहर वन जाते ह। आस-पास वालो ने उसे कितनी छत्र छाया दी ह उसे किस प्रकार से खाद पानी दिया गया है वहुत कुछ इन्ही सव वातो पर निर्भर करता ह।

उस दिन सुकात जी के शात हो जाने की खवर सुनकर पूरे घर म एक तहलका सा एक हाहाकार सा मच गया था। लेकिन सुनीता जो इस घर की एकमात्र वहू थी चाहकर भा न रो सकी आर ना ही उन रोने वाला के समाप वैठकर उन्ह किसी प्रकार का ढाढस दे पाई। उसके मन-मस्तिष्क मे आगत आर

हा ता आज जब अपना स ही उसने ऐसे अल्फाज सुने तो गहरे साच म डूब गई। आखिर मग घर कान सा है ? भविष्य की शष यात्रा कैसे गुजरगा ? आशकाआ का महाप्रलय उसक मस्तिष्क का झकझारता रहा उस लगा कि वह सारी जिदगी बफ का उन सीढ़िया पर ही चढ़ता उतरती रहा जो दूर से बहुत सुदर आर चमकदार दिखाई देती है। बीती हुई स्मृतिया के दश तो गुल्लक म रख सिक्का का तरह हात ह जा कि खर्च नहीं निरतर बढ़ते ही जात ह। तभा तालियो की जारदार गड़गडाहट हाल म गूज उठी। तरलिका विचारा का दुनिया स लाट आइ, पास बठी दिव्या न उससे पूछा कहा खो गई थी ? मम साब तब तक सिर्फ इतना ही बाल सकी थी 'घर की तलाश म।'———

■ ■ ■

एमे ऐसे पडयत्र वह करती थी कि बड़ बड़ राजनीतिज्ञ भी दाता तले उगली दबा ले।

शुरू-शुरू म छोटी छोटी बाता म उसने अपना मा के कान भरन चालू किये। तीर निशाने पर फिट होता देख और कामयाबिया का सहरा बधता पा उसके हासले आर भी बुलद हाते चले गये। स्वय ही कहा न कहा अपना आर पराई चीजा को छुपा देती आर स्वय ही हगामा मचा देती कि मम्मी मरी अमुक चीज यहा रखी थी न जाने कहा चली गई? म ता यही सोचकर लाई थी कि यहा तो सुरक्षित रहेगी_ पर_ यहा पर भी मरी जान के दुश्मन आ घुसे।

काई भी इस वात को अच्छी तरह से समझ सकता ह जिस घर म कोई नौकर चाकर न हा आर ना ही कोई सप्ताह भर से आया गया ही हो उस घर म भला चोरी कैसे हो सकती ह? हा अगर शक की झूठी सच्ची कहा गुजाइश ह तो सिफ बहू पर हा नजर जा सकती ह। तो मा जी का सारा वहम वहू पर ही चला गया। फिर क्या था लगी अपनी पनी जीभ चलान। आर यह तो सभी जानते हैं कि पनी जीभ जब चलना शुरू कर देती ह तो वह आगा-पीछा कुछ भी नहा सोचती _फिर वहू रूपी तुच्छ जीव से भला कसा सकोच ? _वह तो उस घर म पलने वाली नाकराना जो ठहरी_ आर नाकरानी की कोई मान मर्यादा थोड़े ही होती है।

हा तो दिल खोलकर माता जी अपनी भडास रात दिन बहू पर निकालता रहती। सुनीता का कलेजा धक से रह जाता_ कि इस घर म ऐसा भा होता ह? _क्या ननदा की चीज भाभिया चुराकर रख भी सकती ह? लकिन लाछन तो लाछन ही होते ह व चाहे एक रुपये के नक्ली टॉप्स क हा या परा म डालने वाली पाच रुपल्ली की चप्पला के सुनीता समझ गइ कि अब इस घर की खर नहीं। किसी न किसी दिन दीवार चटकगी घर टूटेगा। यदि ऐसा रवया रहा तो हा सकता ह किसी दिन घर के तीन तेरह भी हो जाय। हा तो उस दिन उस सुनीता को ऐसा लगा जसे किसी ने उस नग्न करके बीच चौराह पर खड़ा कर दिया हो।

अब सुनाता की सास जो भी वात कहती उसकी शुरुआत व्यग आक्षेप आर ताना स ही पूर्ण विराम पाती। बात चाहे कोई सी भी हो सुनीता को एक बात यह हमेशा सुननी पड़ती कि आजकल की वहुओ को ननदे फूटी आखा भी नहा सुहाती बचारी दो दिन के लिये आती है। _राम राम_ एक हम थ_।

तब सुनाना के मुह तक बात आते आते रुक जाती थी कि वह भी हाथा मे कह द कि ननद जसी ननद हो तो वह किसी को सुहाये भा मगर बाइ

विगत के कड़ तूफान साय-साय करने लगे। वह उनकी गिरफ्त में जकड़ सी गई।

उस एक एक घटनाये चलचित्र की भांति याद आने लगीं। जब चपला यहां आती थी तो आपस में कैसा कलेश करवा कर जाया करती थी। दिन भर ससुराल वालों की बुराइयां ही बुराइयां गिने सुन सुनकर सुनीता का दिल अन्दर ही अंदर सुलगता दहलता रहता था। वह अब तक यह बात तो अच्छी तरह से समझ चुकी थी कि यह औरत अपने घर परिवार को बांधकर कभी बैठ नहीं सकती क्योंकि जिसे अपने अलावा सभी में दुगुण ही दुगुण नजर आते हों साचो भला वह व्यक्ति कितना निर्मल हृदय का हो सकता है इसे तो कोई भी पहिचान सकता है। अपनी छोटी छोटी ननदों और प्यारी-प्यारी देवरानियों पर वह गढ़-गढ़ कर चोरियों के इल्जाम लगाया करती। लेकिन सुनीता को तब बहुत ताज्जुब होता जब माजी ने उस एक बार भी नहीं टोका कि बिटिया तू काहे को ऊल जुलूल बोलती रहती है? उल्टे वे उसकी हां में हां ही मिलाती रहतीं। इससे चपला को प्रोत्साहन मिलता रहता।

चपला जिन चीजों की चोरी अपनी ननदों और देवरानियों पर लगाया करती थी भगवान जाने वे कितनी झूठ या सच थीं। परन्तु एक बात उसे समझ में बिल्कुल भी नहीं आ पा रही थी कि माजी क्यों नहीं उसकी ससुराल में जाकर सब बातों की तहकीकात करतीं हैं कि आखिर सचाई क्या है? उल्टे वे अपनी हसियत के मुताबिक नये नये गहने गढ़वा कर चपला के तन की शोभा बढ़ाती रहती हैं। अपने प्रति मां का यह अंधविश्वास पा चपला की चपलताये दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही गईं। चुपड़ी और दो दो खाने में उसे आनंद आने लगा।

धीरे-धीरे उसकी यही आदत जोर पकड़ती गई। अब तो उसने अपना गऊ जैसी भाभी पर भी लांछन लगाने शुरू कर दिये। इसका भी एक मनोवैज्ञानिक कारण था। वह यह कि सुनीता एक अच्छे घर और अच्छे संस्कारों वाली लड़की थी। इसलिये सास-ससुर उसे बहुत ज्यादा प्यार करते थे। सारा प्यार और विश्वास का एकाधिकार चाहने वाली कुंठित चपला यह सब सहन न कर सकी उसका नारी सुलभ मन ईर्ष्या से दग्ध हो उठा। उसे लगा कि यदि मां का प्यार पाना है तो सुनीता को मां के चित्त से पहले गिराना होगा। इसके रहते मैं पांचों उंगलियां घी में नहीं रख पाऊँगी यही सोचकर उसने टेढ़ी उंगलियों से घी निकालना प्रारम्भ कर दिया। इसके लिये उसने न जाने किन किन घर फोड़ुओं से शिक्षा ले-लेकर, कुटिल नीतियों का सहारा अपनाया। राजनीति में रहकर इन्सान को कुछ आये चाहे न आये लेकिन फूट डालने का गुण, बहुत जल्दी आ जाता है और इसमें चपला पदाइशी ही माहिर थी।

एस ऐसे षडयत्र वह करती थी कि बड़े बड़े राजनीतिज्ञ भी दाता तले उगली दवा ले।

शुरू-शुरू म छोटी छोटी बातो म उसन अपनी मा क कान भरन चालू किये। तीर निशाने पर फिट होता देख आर कामयाबिया का सहरा बधता पा उसके हासले आर भी बुलन्द होते चले गय। स्वय ही कहा न कहा अपना आर पराई चीजा को छुपा देती आर स्वय ही हगामा मचा देती कि मम्मा मरी अमुक चीज यहा रखी थी न जाने कहा चली गई? मैं ता यहा साचकर लाई था कि यहा तो सुरक्षित रहेगी— पर यहा पर भी मेरी जान के दुश्मन आ घुसे।

कोई भी इस बात को अच्छी तरह स समझ सकता ह जिस घर मे कोई नौकर चाकर न हा आर ना ही कोई सप्ताह भर से आया गया ही हो, उस घर म भला चोरी कसे हो सकती ह? हा अगर शक की झूठी सच्ची कही गुजाइश है तो सिफ बहू पर ही नजर जा सकती ह। तो मा जी का सारा वहम बहू पर ही चला गया। फिर क्या था लगी अपनी पनी जाभ चलाने। आर यह तो सभी जानत है कि पैनी जीभ जब चलना शुरू कर दती ह ता वह आगा पीछा कुछ भा नहा सोचती, —फिर बहू रूपी तुच्छ जीव से भला कसा सकोच ? —वह तो उस घर म पलने वाला नौकरानी जो ठहरी— आर नाकरानी का कोई मान मर्यादा थोड़े ही हाती ह।

हा ता दिल खोलकर माता जी अपनी भडास रात दिन बहू पर निकालता रहती। सुनीता का कलेजा धक से रह जाता— कि इस घर म ऐसा भी होता ह? —क्या ननदा की चीज भाभिया चुराकर रख भी सकती ह? लेकिन लाछन तो लाछन ही होते है वे चाहे एक रुपये के नकली टॉप्स के हा या परा म डालने वाली पाच रुपल्ली की चप्पला के सुनीता समझ गइ कि अब इस घर की खर नहा। किसी न किसी दिन दीवारे चटकगी घर टूटेगा। यदि एसा रवया रहा तो हा सकता ह किसी दिन घर के तान तेरह भा हा जाय। हा तो उस दिन उस सुनाता को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे नग्न करके बीच चाराहे पर खडा कर दिया हो।

अब सुनाता की सास जो भी बात कहती उसकी शुरुआत व्यग आक्षेप और ताना से ही पूर्ण विराम पाती। बात चाहे कोई सी भी हो सुनीता को एक बात यह हमेशा सुननी पड़ती कि आजकल की बहुआ को ननद फूटी आखा भा नहा सुहाती बेचारी दो दिन के लिये आती ह। —राम राम— एक हम थ—।

तब सुनीता के मुह तक बात आते आते रुक जाता थी कि वह भी हाथा हाथ कह दे कि ननद जसी ननद हो तो वह किसा को सुहाय भी मगर कोई

आततायी की तरह पेश आयगा तो भला कैसे सुहायगा? परन्तु वह कभी इतना छोटी सी भी बात मुह से नही निकाल पाई। न जाने उसकी जीभ को लकवा कैसे मार जाया करता था। संस्कारित होने का मतलब उसे प्रतिक्षण भुगतनी पड़ रहा था। इस घर में तो जितना अभद्र व्यक्ति होगा वही टिक पायेगा — मा ही जो मुहफट थी। साम्य और सज्जन व्यक्तियो को इस घर में लल्लू संबोधन दिया जाता था और सुनीता सचमुच में संस्कारित लल्लू ही थी।

सारे सिलसिले एक बार चालू हुए तो निरंतर चलते ही रहे। उनमें घटनाये और उपघटनाये समय समय पर आ आकर और जुड़ती रही। सुनीता का पति दब्बू किस्म का था और सच पूछा जाय तो उसमें गांठ की अक्ल भी कम थी कि यदि परिवार में कोई समस्या सिर ऊंचा करके खड़ी हो जाय तो उसका निवारण कैसे किया जाना चाहिए, नही जानता था। पत्नी के दुख और आसू देखकर भी उसका कलेजा कभी नही पिघलता कभी एकाध बार उसने कुछ कहने का साहस भी किया तो मा और बहिन के द्वारा यह कह कर उसे दबा दिया गया कि जोरू का गुलाम है।

चपला एक बार अपने पति से झगड़ा करके जलती लाय (भरी दुपहरी) में अपनी तीनो बेटियो को समेट कर अपने मायके आ बैठी थी। मा से अपनी सास का रोना रो रोकर पीहर में ही वह जमकर बैठ गई। मा ने पुचकार-पुचकार कर उसे ढाढस बधाया और बोली- यहा चैन से रह चिड़िया उन्हे गरज होगी तो वे दौड़े आयगे। सब सालो को तेरे अनुकूल न कर दिया तो मेरी नाक काटकर रख देना। बस फिर क्या था उसी दिन से वे प्राणपण से जुट गई उन सालो को झुकाने में। मा जो चाणक्य की शिष्या थी उस पर घर की सर्वसर्वा इसलिये जीत उन्ही की हुई। और होती भी क्या न सारी वाक्पटुता रणनीति भला फिर किस दिन काम आती? सबसे बड़ी लायर जो थी।

सुकांत को अपनी इच्छा के विरुद्ध एक नया मकान किराये पर लेकर रहना पड़ा। यद्यपि वह नहीं चाहता था कि अपने मा बाप को इस बुढ़ापे में अकेला छोड़। फिर मा बाप संतान पैदा किसलिये करते है? बुढ़ापे की असहाय अवस्था के लिये ही न जब उन्हे पग पग पर एक सशक्त सहारे की आवश्यकता होती है तभी के लिए। लेकिन स्वार्थ में अंधी बेटी की काया की संरक्षक चपला की मा यह सब कैसे समझ पाती। न तो उनका अभी बुढ़ापा था न ही जीवन में अभी कोई दुख झेल थे। ऊपर से भगवान ने उन्हे इतनी समृद्धि दी थी कि पीडाये क्या होती है वे समझ नही सकती थी। इकलौती बेटी जो थी चपला फिर वे क्यो चाहेगी कि उनका बेटा इतने आदमियो की सेवा सुश्रुषा करे। जरूरत से ज्यादा लाड़ में वे एक नहीं दो दो घरो को बिगाड रही थी।

अलग हो जाने म अब न कोई चिखचिख रही न परशानी सब कुछ मन चाहा जो हो गया था। कुछ दिना माजी भी चपला क उस घर का सजाने सवारने आर भरने म व्यग्न रही। न जाने इस घर की कितना ही वस्तुए उठ-उठकर उस घर की शाभा बढ़ान या अपन दुभाग्य पर रान क लिए चल दी।

कुछ दिना तो चपला अपनी नइ घर गृहस्थी म खुशा खुशा रमा रही फिर वही पुराना ढर्रा चल पडा अब तो नया घर आर भी पास आ गया था। सुबह वहा होती तो शाम मायक म। सुनीता के कार्यक्षेत्र आर जिम्मेदारियों म प्रतिदिन व्यवधान पड़ने लगा। मा बेटा एकात मे बठकर गपशप (षडयन्त्र) करती आर सुनीता को रसोई मे जुटकर ढेरो खाना बनाना पडता। यहा तक भा ठीक था यदि कोई चुपके से प्रेम से खा पी ले तो लेकिन चपला की तो वात ही अलग थी वह खाना तो ठूस ठूस कर खा लती... पर मीन मख निकालती हुई। —सब्जी बेस्वाद बनी ह— रोटिया ऐसी बनाई ह जस मजदूरा के यहा बनती ह —मोटी मोटी— कच्चा कच्ची— वाप रे जो खाये सा महीना बामार पडा रहे।— आदि आदि।

सुनीता क पर भारी थे। आज उसकी तबीयत बेचन थी। रात हाते होते दर्द का दारा ऐसा चला कि वह तडप कर रह गई। रात ग्यारह बजे क करीब उसन एक मृत बालक का जन्म दिया। बच्चा मर गया तो क्या हुआ जापे म दस दिन तो उसे लट-बठ ही खाना था। लकिन वह खाना भी चपला ने कभी चन से प्रेम से या सहानुभूति से नही दिया। जब भी कुछ देन आती तभी बोलती "लो महाराना जी फला चीज ले लो... लो महाराना जी अब फला चीज खालो। महारानी जी आराम फरमा रही ह— नाकर चाकर काम कर रह ह— आदि आदि।

यद्यपि महारानी शब्द सुनने आर पढने लिखने मे बडा सम्मानित सबोधन सा लगता ह लेकिन चपला का कहने का ढग आर मुख मुद्रा वडी ही आपत्तिजनक व्यग्यात्मक रहती थी। कोई भी व्यक्ति भाव और भाषा को अच्छी तरह से समझ सकता ह। खर जसे-तसे खून के कडवे घूट पी-पीकर उसने वे दिन भी किसी तरह स काट ही दिये।

एक बार की वात उसे भूले नही भूलती चपला ने किसी कोर्स का फॉर्म अपने पीहर से ही भरा था। सुनीता की भी इच्छा हुई कि म भी परीक्षा द दू। झाके मे आकर उसने भी माजी से कह दिया कि एक फॉर्म आर मगा दे। सुनते हा माजी ऐसी भडकी जसे कोई अपशब्द उसके मुह से निकल गया हो। चली ह मरा बटी की होड करने। आर तू सात जन्म भा ले लेगी तो उसकी होड़ नही

आततायी का तरह पेश आयेगा तो भला कस सुहायगा ? परतु वह कभी इतना छाटा सी भी यात मुह स नहीं निकाल पाइ। न नान उसकी जाभ का लकवा कस मार जाया करता था। सस्कारित हान का सजा उस प्रतिक्षण भुगतनी पड रहा था। इस घर म ता जितना अभद्र व्यक्ति हागा वहा टिक पायगा___ साथ ही जा मुहफट भी। साम्य आर सज्जन व्यक्तिया का इस घर म लल्लू सबाधन दिया जाता था आर सुनाता सचमुच म सस्कारित लल्लू हा थी।

सारे सिलसिल एक वार चालू हुए ता निरतर चलत हा रहे। उनम घटनाय आर उपघटनाय समय समय पर आ आकर आर जुडती रहीं। सुनीता का पति दब्बू किस्म का था आर सच पूछा जाय तो उसम गाठ की अक्ल भी कम थी कि यदि परिवार म कोई समस्या सिर ऊचा करके खड़ी हो जाय तो उसका निवारण कैसे किया जाना चाहिए, नही जानता था। पत्नी के दु ख और आसू देखकर भी उसका कलजा कभी नहीं पिघलता कभा एकाध वार उसने कुछ कहने का साहस भी किया ता मा आर वहिन क द्वारा यह कह कर उसे दवा दिया गया कि 'जोरू का गुलाम ह।

चपला एक वार अपने पति से झगड़ा करक वलती लाय (भरी दुपहरी) म अपनी तीनो वेटियो को समेट कर अपने मायके आ वठी था। मा से अपनी सास का रोना रो रोकर पीहर म ही वह जमकर वठ गइ। मा न पुचकार-पुचकार कर उसे ढाढस वधाया आर बोला- यहा चन से रह विटिया उन्ह गरज होगी तो वे दोड़ आयगे। सव साला को तरे अनुकूल न कर दिया ता मरा नाक काटकर रख देना। वस फिर क्या था उसी दिन से वे प्राणपण से जुट गई उन साला का झुकाने मे। मा जी चाणक्य की शिष्या था उस पर घर का सर्वसर्वा इसलिये जीत उन्ही की हुइ। आर होती भी क्या न सारी वाक्पटुता रणनीति भला फिर किस दिन काम आती ? सबसे वडी लायर जो थी।

मुकात का अपनी इच्छा के विरुद्ध एक नया मकान किराये पर लकर रहना पडा। यद्यपि वह नहीं चाहता था कि अपने मा वाप का इस बुढाप म अकेला छोडे। फिर मा वाप सतान पदा किसलिये करते ह ? वुढापे की असहाय अवस्था क लिये ही न जब उन्हे पग-पग पर एक सशक्त सहारे का आवश्यकता हाती ह तभी के लिए। लेकिन स्वार्थ मे अधी वटी की काया की सरक्षक चपला की मा यह सब कस समझ पाती। न तो उनका अभी बुढापा था न ही जावन म अभा कोई दु ख झेले थे। ऊपर स भगवान ने उन्हे इतनी समृद्धि दी थी कि पीड़ाये क्या होती है वे समझ नही सकती थी। इकलाती वटा जा था चपला फिर वे क्यो चाहगी कि उनकी वेटी इतने आदमियो की सेवा सुश्रुषा करे। जरूरत स ज्यादा लाड़ मे व एक नहा दो दो घरो का बिगाड़ रही थीं।

अलग हा जान म अब न कोई चिखचिख रही न परशानी सब कुछ मन चाहा जो हो गया था। कुछ दिना माजी भी चपला क उस घर को सजाने सवारने आर भरने म व्यस्त रहा। न जाने इस घर की कितना ही वस्तुए उठ-उठकर उस घर की शाभा बढ़ाने या अपने दुभाग्य पर रान के लिए चल दा।

कुछ दिना तो चपला अपनी नइ घर गृहस्थी म खुशा खुशी रमा रही फिर वही पुराना ढरा चल पडा अब ता नया घर आर भी पास आ गया था। सुबह वहा होती ता शाम मायके म। सुनीता के कायक्षत्र आर जिम्मदारियों म प्रतिदिन व्यवधान पड़न लगा। मा बेटी एकात म बठकर गपशप (षड्यन्त्र) करता आर सुनीता को रसोई मे बठकर ढरा खाना बनाना पड़ता। यहा तक भी ठीक था यदि काई चुपक से प्रम से खा पी ल तो लेकिन चपला की तो वात ही अलग थी वह खाना ता ठूस ठूस कर खा लती... पर मान मख निकालती हुई। ...सब्जी वेस्वाद बनी ह... रोटिया ऐसी बनाई ह जस मजदूरा क यहा बनती ह ...मोटी मोटी... कच्ची कच्ची... बाप रे जो खाय सा महीना बीमार पड़ा रहे।... आदि आदि।

सुनीता क पर भारी थे। आज उसकी तबीयत बेचन थी। रात हाते होत दद का दारा ऐसा चला कि वह तड़प कर रह गई। रात ग्यारह बजे क करीब उसन एक मृत बालक का जन्म दिया। बच्चा मर गया तो क्या हुआ जापे म दस दिन तो उसे लटे-बठे ही खाना था। लेकिन वह खाना भी चपला ने कभी चन स प्रेम स या सहानुभूति स नहीं दिया। जब भी कुछ देन आती तभा बोलती "लो महारानी जा फला चीज ले लो... लो महाराना जी अब फला चीज खालो। महारानी जी आराम फरमा रही ह... नाकर चाकर काम कर रहे ह..." आदि आदि।

यद्यपि महारानी शब्द सुनने आर पढ़ने लिखन म बड़ा सम्मानित सबाधन सा लगता ह लेकिन चपला का कहने का ढग आर मुख मुद्रा बड़ी ही आपत्तिजनक व्यग्यात्मक रहती थी। कोई भी व्यक्ति भाव आर भाषा को अच्छी तरह से समझ सकता ह। खर जसे-तसे खून के कडवे घूट पी पाकर उसने वे दिन भी किसी तरह से काट हा दिये।

एक बार की बात उसे भूले नही भूलती, चपला ने किसी कोर्स का फॉर्म अपने पीहर से ही भरा था। सुनीता की भी इच्छा हुई कि म भी पराक्षा दे दू। झोंके म आकर उसन भी माजी से कह दिया कि एक फॉर्म आर मगा द। सुनते ही माजी ऐसी भड़की जैसे कोई अपशब्द उसके मुह से निकल गया हो। चला ह मेरा बटी की होड करने। आर तू सात जन्म भा ले लेगी तो उसकी होड़ नहा

कर पायेगी आर एसा कहकर दाना मा नटी न एक क्रूर अट्टहास स परा कमरा गुंजा दिया था। कोमल मन की सुनीता कड़वे वचनो से आहत होकर बुरी तरह से छिद चुकी थी। एकान्त में फूट-फूटकर रो लेने के अलावा उसके पास अन्य कोई चारा भी नहीं था। किससे क्या कहे— नक्कारखाने में तूती की आवाज सुनने वाला वहा कोई नहीं था।

उसकी पढ़ाई को लेकर जैसे सारे घर वालो ने एक मुहिम सी छेड़ रखी थी सभी एकमत से सुविधाये न साधन ऊपर से हजारो व्यवधान खड़े किये जाते रहे। ऐसी विपरीत परिस्थितियो से जूझकर भी उसने कुछ कर ही लिया। सच पूछा जाय तो कहा लग पाता था उसका पढ़ाई मे मन— मन तो अटक कर रह जाता था उन वाग्बाणो मे जो उसके कलेजे को जब तब बींध कर चले जाया करते थे। —पुस्तक सामने रखी रह जाती और मन में द्वद्व चलता रहता— छोटे मुह बड़ी बात सुनने की वह कभी आदी नहीं रही थी लेकिन यहा पर उसे यह सब सहना पड रहा था।

कई बार सुनीता सोचती कि मुझे तो मेरी मा ने सदा भाभियो की इज्जत करना सिखाया था। मा कहा करती थी कि बेटा भाभियो से ही पीहर होता है सदा भाभी का हित चाहो— उनके हित के ही काम करो— उनके हित की ही सोचो—हमारा क्या है आज है कल नहीं— उसकी दादी भी अपनी बहुओ के पास मिलने आने वालियो का जी खोलकर स्वागत किया करती थी। उस घर की बहुए अगर किसी कार्य मे व्यस्त होती तो उन्हे छुट्टी देकर वे स्वय उसका कार्य भार अपने कधो पर लेकर उन्हे हसने बोलने का अवकाश दे देती। और यहा— यहा तो सब कुछ विपरीत— एकदम उल्टा पुल्टा— । किसी से बोल लो तो सबके मुह सूज कर कुप्पा हो जाते है। जैसे वह कोई जघन्य अपराध करके आई हो। चोर की दाढ़ी मे तिनका सोचकर वह अदर ही अदर हस लेती। जब कोई आदमी किसी के साथ दुर्व्यवहार करता है तभी तो डरता है।

सुकात जी के शात हो जाने की खबर सुन वह न जाने कितने झझावातो को सिर पर लादे मा जी को गाडी मे बैठाकर चपला के किराये वाले मकान की ओर चल दी। उस घर के द्वार पर पहुचते ही मा और बेटी लिपटकर गला फाड़ फाड़ कर बुरी तरह से रोई। सुनीता एक ओर औरतो की भीड मे जा बैठी। आस पास की औरते धीरे-धीरे कानाफूसी कर रही थीं। उनकी बातो से ही उसे पता चला कि रात मे चपला और सुकात जी मे भयकर वाक्‌युद्ध हुआ था इसी से बेचारे का ब्रेन हेमरेज हो गया।

'आखिर बेचारा माटी का पुतला ही तो था— किससे क्या कहता— घुटता रहा जिन्दगी भर। कर्कशा पत्नी ने आखिर प्राण लेकर ही उसका पीछा छोड़ा।

रोज रोज का झगड़ा रोज रोज की कलह— तभी दूसरी औरत धिक्कारता हुई सी बोली— न जाने कैसा शिक्षा दी है मा बाप न ? वहा बठी सारी औरत उस ताजा ताजा पतिहीना का अपन अपने प्रकार से धिक्कार रही था। सुनीता का स्थिति गुड भरे हसिये जसी हो रही थी न कुछ उगलत बन रहा था और न ही निगलत। अब क्या होगा ? कहा मिलगी मुझ शाति सुनीता का पाड़ा एक अलग ही प्रकार की थी जिसे कोई भी समझ नही सकता था।

सुकात जी का शुद्ध स्नान करवा दिया गया था। उनक पार्थिव शरीर का नय वस्त्रा और पुष्पा से सजाया जा रहा था। सुनीता यह दृश्य देखकर हिचक पड़ी। उसके मन म एक बात कौंधी कि ज्यादातर टूर पर रहना पसद करने वाला यह व्यक्ति आज कभी न लौटने के लिए कितनी शाति स सज धजकर अतिम यात्रा पर जा रहा है। उसने मन ही मन कहा - यह क्या किया तुमन सुकात भाई तुमन मर कर मुझे भा जिदा ही मार दिया काश तुम्हार बदले म मर जाती मरे भाई— जाना तो मुझे चाहिय था ताकि रोज रोज मरकर जाने स तो पीछा छूट जाता।

सुनीता को लगा अब अपनी इस कच्ची गृहस्थी का लेकर चपला हमेशा के लिय ही भायक आ बठेगी— पहले ननदोई जी की आड़ तो था पर अब— अब 'परम स्वतत्र न सर पर कोई—।' भीड़ बढती जा रहा थी महाप्रस्थान की तयारिया हो चुकी थी। सुनीता का सोच न उसक मस्तिष्क क रक्त प्रवाह म अवरोध उत्पन्न कर दिया उसक परा स जान सी निकलने लगी। उसने महसूस किया कि जहा वह बठी है वहा की जमीन बुरी तरह से हिल रही है— दीवार टूट टूटकर गिर रही है—— और वह इन सबके नीचे दबी बुरी तरह से छटपटा रहा है— वह जोर जार से चीखना चाहता है पर आवाज है कि उसका साथ नहा दे पा रही। दिन ढल चुका था चारो तरफ अधेरा फलन लगा था पक्षी बसरा लने क लिए वृक्षा क इर्द गिर्द शोर मचा रहे थे।

■■■

रेत पर लिखा नाम

तेज हवा के कारण उड़ती हुइ साड़ा क पल्ल का सम्हालते हुए लतिका न कहा इतने ऊच से मत कूदो सलिल। नीचे बहुत गहरा पानी ह डूब जाओगे।"

'गहराइ म ही जाने की चष्टा कर रहा हू लतिका। तभी सरसराता हवा का एक झाका नदी के इस पार से उस पार तक फल गया। गहरे सन्नाट के बीच य दाना बहुत दर तक पानी स खिलवाड़ करते रह। पानी म भीगा हुआ सलिल उसे बहुत ही प्यारा लग रहा था। उसक काल घन रशमा बाल हवा म उड़-उड़ कर चहर पर आ झूमत। सलिल का गर्दन स एक विशेष प्रकार का झटका दकर बाला को पीछ कर लने का अदा लतिका को मन ही मन भा गई। उसका सुन्दर स्वस्थ शरीर, चचल आख मन का छू लन वाली मीठी मीठी बात सभी कुछ ता एसा था कि काइ भी चुपक से उसका तरफ आकर्पित हा उठ। तभी उसने सुना - अभी जाता हू। कहकर सलिल अपना तालिया उठाकर किसी पड की ओर म कपड बदलन चला गया।"

एकाकी क्षण मिलत ही लतिका अनजान ही अतात म जा पहुचा। एक साल पहल वह कितनी खुश थी। सास ससुर के लाड-चाव आर पति क स्नेह मे न जान कब इतना लम्बा समय निकल गया। तब प्रत्येक दिन नया उत्साह लेकर आते थे। शिरीप उसस प्यार करता था कि नही यह सब साचने समझन की उस जरूरत ही नहा पडा लेकिन इतना अवश्य था कि शिरीप क सरक्षण म एक सुख का अनुभव उसे अवश्य होता था। फिर न जाने क्या हुआ कुछ वर्पा क अन्दर परिवर्तन पर परिवर्तन होते ही चले गये।

शिरीप पहले तो अपने अध्ययन म खाया रहा फिर न्यायिक पराक्षा प्रतियोगिता म प्रथम आने के पश्चात उसकी पोस्टिग हो जाने के कारण उस ज्यादातर बाहर ही रहना पडता। इसा दरम्यान शिरीप के पत्र लतिका के पास आते जाते रहे परन्तु उनम आत्मीयता की गर्माहट या विछोह की वदना का किंचित अहसास भी लतिका का खोज न मिलता। पत्रा की भापा भी दिन पर दिन सक्षिप्त होती चली गई।

लतिका का मन इन सब बाता स दिन प्रतिदिन मुरझाता चला गया। कुछ

वर्ष तक स्वप्नलोक म रहने क पश्चात उसे एसा लगने लगा था कि शिरीष क मन म उसकी कुछ भी अहमियत न रह गई हो। उसे लगता जसे उसकी एक तालिये जसी उपयोगिता रह गई ह। जरूरत पड़ा मुह पाछा आर वापस खूटी पर टाग दिया। अभी तो उसन मात्र बाइसवा वसत ही तो पार किया ह।

इस तरह अचानक नीरस जीवन क गहन अधकार म समा जाना उसे तनिक भी न सुहाया। बाझिल आदर्शवाद आर उक्ता देने वाल सिद्धात उसे अच्छे नही लगते। उसे तो एस यावन की कल्पना पसन्द थी जिसम नवीनता आर प्रफुल्लता के अनगिनत चटकील रग भरे पड़े हा।

एकाकीपन से ऊब कर लतिका कुछ महानो से अपन माता-पिता के घर आ बठी थी। वहीं से उसे अपनी ममेरी बहिन का शादी म जाना पड़ा। यहीं उसकी मुलाकात सलिल स हुई। सलिल का लतिका के प्रति आकर्षण लतिका को भी अपना ओर झुकाकर ही माना। उन दिना लतिका के अन्तर्मन की चहल-पहल अधिक तीव्र थी। सलिल क बातचीत करन का अलग तरीका था उत्साह आर उमग तो मानो उसके नस नस से फूट पड़ रहे थ। विवाह म सम्मिलित सभी युवाआ का वह चहेता बना घूमता रहता।

मामा क घर लतिका अपने माता पिता के साथ पन्द्रह दिन पूर्व ही आ गई थी। इस बीच वे दोनो एक दूसरे की तरफ पूर्ण रूप से आकर्षित हो चुक थे। इसम प्रयत्न सलिल का कुछ ज्यादा ही रहा। लतिका क शरीर साष्ठव आर सुन्दर व्यक्तित्व की वह बार-बार प्रशसा करके उसने अपने लिए लतिका के मन मे स्थान बना लिया था। सलिल के साथ अधिक रहने के कारण लोग लतिका को सदेह की दृष्टि से देखन लगे थे लेकिन उन दाना ने इसकी रत्ती भी परवाह नही की।

शादी मे शिरीष भी आने वाला था लेकिन नही आ सका। लोगा ने यही कारण ढूढ़ा कि नये न्यायिक सेवा काय की व्यस्तता के ही कारण शिरीष को अवकाश न मिल पाया होगा। लतिका का मन उदास हो गया। उसके अन्तर्मन मे शिरीष की प्रतीक्षा जो थी। एक लम्बा अरसा हो गया था उसे देखे हुए। लतिका को उदास उदास आर बुझा-बुझा सा देख सलिल उसे नदी क किनारे तक घुमाने भी ले गया था लेकिन जब वे दोना लाट कर घर आए तो सलिल की निगाह शिरीष पर जा पड़ी, वह मामाजी से बाता मे व्यस्त था। सलिल ने लतिका का हाथ दबाते हुए कहा- "शिरीष तो आ गया ह। शिरीष का आना लतिका को अच्छा लगा। उसके चेहरे की उदासी गायब हा गई तभी उस अपनी मम्मा से मालूम हुआ कि मामाजी ने तार पर तार दिये थे इसीलिए शिरीष को दो दिन की छुट्टी लेकर आना पड़ा।

रात को लतिका शिरीष के बेडरूम में गई दिन भर उसको ऐसा लगता रहा था कि शिरीष उसको अपनी बाहों में भर लेने के लिए उतावला हो रहा होगा। अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े दरवाजे की ओर ही टकटकी लगाये देख रहा होगा। मन में यौवन का उन्माद भरे वह देव कन्या सी खड़ी दर तक चौखट पर खड़ी रही लेकिन शिरीष ने एक बार भी दरवाजे की ओर नजर तक न उठाई। बल्कि अपनी पुस्तक पढ़ने में ही तल्लीन रहा। लतिका का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया। उसकी इच्छा हुई कि जूड़े में लगी महकते फूलों की वेणी उतार, नोच कर उसके ऊपर फेंक दे।

लेकिन उसके मन ने उसे समझाया "अरी पगली यह भी तो हो सकता है कि शिरीष प्रतीक्षा करते-करते थक गया हो- तू ही अपनी उपस्थिति का अहसास करा दे न। उसने हल्के से चूड़िया खनखनाई, फिर दुबारा परों में पड़ी पायल बजाई लेकिन इन सब बातों का शिरीष पर कुछ भी असर न हुआ। पत्थर के बुत की तरह वह बिस्तर पर करवट लिए पड़ा रहा। लतिका का जी चाहा कि वह उल्टे कदमों वापस लौट जाए। ऐसे पत्थर से सिर फोड़ने से क्या फायदा। लेकिन चोट खाई सी लतिका साहस बटोरकर शिरीष के पलंग के एक कोने पर जाकर बैठ गई। शिरीष ने एक बर्फीली दृष्टि लतिका पर डाली और वापस किताब पढ़ने में तल्लीन हो गया।

औरत सब कुछ बर्दाश्त कर सकती है लेकिन अपनी उपेक्षा वह किसी भी कीमत पर सहन नहीं कर पाती। लतिका का हृदय अपमान की पीड़ा से झनझना उठा। उसकी सहन शक्ति जवाब दे गई। उसके मन में जो जो कड़ुवाहट आई उन्हें वह पागलों की भांति उगलती रहा।

लतिका की क्रुद्ध बात सुनकर शिरीष ने कहा ठीक है अभी तुम आवेश में हो इसलिए गलतियां कर रही हो लेकिन एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब तुम्हें बाद में पछताना पड़ेगा। लतिका यह सुनकर भभक उठी गुस्से में बोली अपने स्वभाव को डिफेन्ड करने के लिए यह तर्क दे रहे हो आश्चर्य है कि इस उम्र में भी पचास वर्ष वाले बूढ़ों जैसी बात करना तुम्हें शोभा नहीं देती सलिल भी तो आपकी ही हम उम्र का है लेकिन कितना खुशदिल और उत्साही है।

सलिल की प्रशंसा सुनकर शिरीष एक घृणाभरी दृष्टि लतिका पर फेंक कर बाहर निकल गया। लतिका अपमानित सी लौट गई लेकिन लौटते समय उसके विचार, आते समय के विचारों से बिल्कुल भिन्न हो चुके थे उसका विद्रोही मन किसी प्रतिशोध के लिए तैयार हो उठा था। उसे निश्चय हो गया कि शिरीष जैसा व्यक्ति किसी के मन की कोमल भावनाओं की कद्र कभी कर ही नहीं

मकता। म अपनी वसती भावनाआ का उसकी किताबा के काल अक्षरा म दफ्न नहा होने दूगी। वह चोट खाई सर्पिणी सा फुफ्कारती रह गई।

दूसरे दिन शिरीष चला गया।

नारी के हृदय क आकर्पण क लिए आदर्श नही चाहिये सिद्धाता का भार नहीं चाहिए, बस उसक निकटतम आन का लगन आर जीवन के गगन म उडने के लिए सरस आर हल्की उडान हा जरूरा ह। यही उन्मुक्तता भर गुण सलिल मे कूट-कूट भरे पड़े थे। घायल सर्पिणी सा लतिका ने सलिल स शिरीष क साथ हुई गर्मागम झड़पा का ज्या का त्या जिक्र कर दिया। सलिल भी शिरीष के आदशा से वोझिल जीवन का जी खालकर निन्दा म अपनी तरफ से भी पराग्राफ पर पराग्राफ जोड़ने लगा ताकि लतिका का मन शिरीष की तरफ से विल्कुल ही फट जाए।

सलिल मुम्वइ म रहता था। वहा की चहल पहल भर जावन आर समुद्र के उल्लास भर वातावरण की प्रशसा म कवितामय उल्लेख करने के साथ अत म वह यह कहना न भूलता पर लॉ क उन पोथा म सिर गड़ाये रखने वाले शिरीष के लिये ये सब होते हुए भी नहीं के बराबर है। उसकी वात सुन सुन कर लतिका की भी यही इच्छा होती कि वह कुछ दिना ससुराल के वाझिल आर उबाऊ वातावरण स निकलकर अपने लिए भी जी ले। लतिका क मन म मुम्वई देखन की इच्छा अदर ही अदर मचलती रहता उफनती रहती। हालाकि शिरीष ने जाते समय पूछा भा था लेकिन लतिका की इच्छा ही न हुई कि वह शिरीष के साथ जाए। उसे उसके साथ रहकर क्या मिलेगा भला। एक परिचित खामोशी आर भाय भाय करती दीवार ही न। नहीं वहा तो मेरा दम ही घुट कर रह जाएगा। शिरीष के सामन उसने कई वहान वना दिये थे।

अपन विचारा म खाइ लतिका छत की मुडर पर वठ किसी मगजीन के पन्नो मे खोये सलिल क पास जा पहुची। अचानक लतिका को सामने देख सलिल ने मैगजीन मोड़कर हाथ मे दवा ली। तुम यहा.... सलिल म भी तुम्हारे साथ मुम्वइ चलूगी। हा हा चलना आर कुछ दिना.... कहते कहते सलिल थोड़ा सा रुक गया। कुछ दिन क्या वोलो न? लतिका के स्वर म प्रेम पीड़ा का पुट था। फिर वापस यथार्थ की दुनिया मे लाटकर उसने कुछ विवशता से सलिल से पछा लकिन मुझे वहा शिरीष ने देख लिया तो... क्योकि वह भी वही रहता ह।

'तो तुम्ह कच्ची चबा जाएगा यही न। घबराओ नही मेरी जान वह तुम्हें देख नहीं सकता। वहा वह सिर्फ दो ही कामा म अटका रहता ह एक तो.... खैर, छोड़ो। दूसरा कानून का मोटी मोटा किताबो म।

विवाह समाप्त हो गया आए हुए मेहमान धीरे-धीरे कब विदा हो गये लतिका को पता ही न चला। आज लतिका के माता-पिता भी वापस कलकत्ता जाने के लिए तैयार हो रहे थे। यह देखकर लतिका परेशान हो उठी। सोचने लगी अब मुझे भी जाना पड़ेगा इन्हीं के साथ। मन में एक विचार कौंधा वह अपनी मां से बोली मम्मा कुछ दिन और नहीं रुक सकते ? फिर मामाजी के घर बार-बार आना भी तो नहीं हो पाता। मम्मी ने साफ मना कर दिया नहीं तेरे भाई बहनों की पढ़ाई का नुकसान हो रहा है और तेरे पापा की छुट्टियां भी खत्म हो चुकी है। "ठीक है मम्मी, आप जाइये मैं सलिल या सुदेश के साथ मुम्बई चली जाऊंगी। लतिका ने कहा। मां यह समझी कि शायद उसकी बेटा शिरीष के पास जाना चाहती है इसलिए उन्होंने खुशी-खुशी आज्ञा दे दी।

मम्मी-पापा के चले जाने के पश्चात तीसरे दिन लतिका सलिल के साथ मामाजी से आज्ञा लेकर मुम्बई के लिए रवाना हो गई। ट्रेन की तीव्र गति के साथ लतिका के मन में भी हजारों विचार आ और जा रहे थे। स्मृति पटल पर न जाने कितने चित्र बनते और बिगड़ते रहे। उन सैकड़ों विचारों में बस एक ही बात बार-बार मन में कौंध कर जहर घोल जाती कि माता-पिता को यह पता चल जाए कि मैं सलिल के साथ मुम्बई में घूम रही हूं, शिरीष के पास गई ही नहीं तो वे शायद ही मेरा मुंह देखें। मम्मी की तो खैर ज्यादा चिंता नहीं है पर पापा...... पापा तो जिंदा ही कब्र में गाड़ देंगे। ......खैर जो होगा सो देखा जाएगा। सलिल सब सम्भाल लेगा। इस विचार के आते ही वक्ष पर साये पड़ सलिल के चेहरे को वह गौर से पढ़ने लगा। उसे सलिल का चेहरा मासूम और निष्कपट लगा। वह भी बैठे बैठे ऊंघती रही।

दूसरे दिन रात्रि में वे दोनों मुम्बई पहुंच गये। गाड़ी से उतर कर सलिल ने एक भयभीत दृष्टि से चारों तरफ नजर डाली फिर गहरे सोच में पड़ गया। लतिका के समझ में न आया कि सलिल किस उधेड़बुन में पड़ा हुआ है। थोड़ी देर में उसने एक टैक्सी की और करीब आधा पौन घंटे पश्चात एक मोड़ पर जाकर ठहर गई। पूरा का पूरा शहर उस समय गहरी नींद में सो रहा था सारी सड़कें गीली पड़ी थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वहां कुछ समय पहले बरसात हो चुकी हो। शहर की रंग-बिरंगी लाइटें अब भी जल बुझ रही थीं। सब मिलाकर रात बड़ी सुहावनी लग रही थी। सलिल ने बहुत देर बाद मौन तोड़ा अब इतनी रात को घर तो क्या चलें। यहां मेरा एक दोस्त रहता है चलो रात वहां बिता लेते है, कल सुबह घर चल चलेंगे। तुम यहां सामान के पास खड़ा रहो मैं भाभी जी को जगाकर किवाड़ खुलवाकर आता हूं।

सामान के साथ लतिका नीचे सीढ़ियों के पास ही खड़ा रहा। सलिल

ऊपर चला गया। करीव आधा घटा तक लतिका अकेली खडा रहा। ऊपर म गरमागरम बहसा की तज आवाज लतिका क काना तक आती रही परतु सडक पर आते जात वाहना के तज हॉर्न न कुछ भा काना के पल्ल नही पडन दिया। सदेह के कारण वह सकपका गइ। उसका अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा स्वागत हागा उसने कभा सोचा तक भी न था। थोड़ी देर बाद सलिल नाच आया आर लतिका को लेकर ऊपर चला गया। तेज आवाज म वोलने वाली आरत फिर नहीं दिखाई दी। —लतिका न मालल को सुनाते हुए कहा बड़ी अजीव आरत ह— कान थी ? क्या बोल रही थी ? अच्छा होता अपन ही घर चले चलत।

कमरे म स्वच्छ विस्तर बिछे हुए थे। दीवारो पर कलात्मक अर्द्धनग्न बड़े-वड तलचित्र लगे हुए थे। लतिका न सोचा शायद इसके दोस्त का वडरूम होगा। फिर भी एक अनजाने व्यक्ति के साथ उस यह देखना अच्छा नहा लगा। लतिका ने सलिल स पूछा सच सच बताआ यह किसका मकान ह ? लतिका के प्रश्न का उत्तर सलिल ने प्रश्न म ही दिया क्या ? कुछ नहीं ऐसे हा पूछा। "यह मरे दास्त का मकान ह वे लाग आज किसी शादी मे पूना गये हुए ह। घर म सिर्फ एक क्रेक नाकरानी क अलावा कोई नहीं ह। उसे असमय म जगा दिया था न इसलिए बुरी तरह झुझला रही थी तुम भी वहुत थक गइ हागी अब आराम से सा जाओ—। हा चाय वाय कुछ पियागो ? लतिका का इच्छा नहीं हो रही थी कि कुछ खाया पिया जाये उसे सफर की थकान की वजह से वहुत जोरा की नींद आ रही था इसलिए उसन सो जाना ही उचित समझा।

सवेरे जब लतिका की आख खुली तो उसने देखा हल्का प्रकाश खिड़की स होकर कमर म चला आ रहा ह। वह अगड़ाई लेकर उठ खडी हुई। कमरे मे चारा तरफ निगाह डाली पर सलिल उसे कहीं भी नजर न आया। सोचने लगी शायद वाथरूम गया होगा। पर एक घटे बाद भी जब वह न लाटा ता लतिका उसे ढूढती हुई दूसरे कमरे म जा पहुची। कुर्सी पर वटी एक अधेड उम्र का औरत चाय पीती नजर आई। उसन उसी आरत से पूछा सलिल साहब कहा हे ? 'पुलिस कस्टडी म उसने खरखराई सी आवाज मे रुखा सा उत्तर दिया आर चुप हो गई। लेकिन उसकी पनी दृष्टि लतिका को ऐसी लगी जैसे वह अभी चीर फाड कर खा जाएगी। पुलिस हिरासत मे सलिल पर क्या ? उधर से उत्तर आया जानती हो वह मुम्बई का एक मवाली ह। सुनते ही लतिका को जोर का चक्कर आ गया वह वहीं रखे सोफे पर धम्म से वठ गई। जब कुछ आश्वस्त हुई तब फिर स पूछ वठी क्या बात ह साफ साफ बताओ ताकि मेरी समझ मे कुछ आए, सलिल आर मवाली ?'

वह बोली— सलिल एक धनी बाप का इक्लाता बटा ह लेकिन अपने

कुचरित्र के कारण वह वपा से अपने मा वाप को नाराज करता चला आ रहा था। इधर कुछ वर्षो स वह शराव म पसा उडाने लगा था यही नही वह घर का कीमती सामान भी वेच दिया करता था। इधर उसक दास्ता न भा उस लटना शुरू कर दिया था। मा वाप ने उसे सीधे रास्त पर लाने क सक्डा उपाय किय जिनमे से एक उपाय शादी भी था। वचारी इसकी व्याहता इसके एस लक्षणा को देख तग आकर भाग छूटी आर आज तीन साल से अपन मा वाप क घर वठी ह।' कहती हुइ वह कप रखन चली गई। रुमाल से हाथ पाछती हुई आई आर वोली- "इधर कुछ दिना से सलिल वाजारू लडकिया के चक्कर म था। उन्ही की आवश्यकताओ की पूर्ति क लिए वह पसे लेने अपने वाप के पास गया था। जब घर म काई नही मिला तो चुपक से आलमारी का ताला ताडकर रुपया की गड्डिया निकाल कर थेले म रख रहा था तभी घर क नाकर ने दख लिया। उसस यह हरकत वर्दाश्त न हुइ। उस पहल स ही आदेश मिला हुआ था कि हमारी अनुपस्थिति म सलिल वावू का घर म मत घुसने दना। जब उसन रुपय चुराते हुए देखा तो सलिल का विरोध किया। दाना म जमकर हाथापाई हुइ। एक नोकर का हस्तक्षेप सलिल को वर्दाश्त नहा हुआ क्रोध म सलिल न उसका गला घाट दिया आर ना जाने कहा भाग गया।

फिर क्या हुआ___? लतिका ने पूछा? 'कल जव वह रात का यहा आया तव मने उसे डाटा कि मेरा यह घर किसी खूनी हत्यार के लिए नहीं ह। लकिन उसने गिडगिड़ाकर मुझे तुम पर रहम खान क लिए कहा। मुझे भा अपना चिंता थी। पुलिस हत्या के दिन स वरावर इस घर के चक्कर काट रही था। मुझे मालूम पड गया था कि तुम उन खरीदा हुई लडकिया म से नहा हो, इसलिए रात का ही फान करके उस अरस्ट करवा दिया।"

इतना सव सुनते ही लतिका के परो तल से जमीन खिसक गई। आखो के सामन अधेरा छा गया। उसने स्वप्न मे भी कभी यह न सोचा था कि इतना सभ्य आर भाला दिखाइ देने वाला लडका इतने अवगुणा की खान निकलेगा। लेकिन अव उपाय ही क्या था। वह खिसिया कर वहीं रोने वठ गई। अव तो अपन आपको धिक्कराने के अलावा उसके पास काई चारा भी शेष नही वचा था।

तभी सामने स सस्ता मेकअप पोते राजी आती दिखाई दी। लतिका को समझते देर न लगा कि इसा की वजह से सलिल ने हत्या जसा अपराध कर डाला होगा लतिका का हृदय उसकी शक्ल सूरत हाव भाव देखकर नफरत से भर उठा। तभी रोजी लतिका के पास आई आर लतिका का पीठ को थपथपाती हुई वोली घवराओ नही। सलिल चला गया तो क्या मेर घर पर शहर के वड़े

स बड़े रईसजादे जवान जोधा आते रहते है और पैसा पानी की तरह बहाते है। तुम तो बहुत सुदर हो स्वस्थ हो- तुम्हारी दुकान तो ऐसी चल निकलेगी कि हम सबकी छुट्टी हो जायेगी। कहते हुये रोजी भद्दे अर्थ भरे ढग से मुस्कराई उसकी बाते सुनकर लतिका के मन म आया कि लपक कर उसका रग रोगन पुता चहरा नोच डाले लेकिन तभी किसी ग्राहक का न्योता आ पहुचने से रोजी उसके साथ चल पड़ी।

जाते जाते रोजी कह गई कि पूरा दिन पड़ा ह खूब सोच समझ लेना। रोजी की बात को अनसुना करके लतिका ने फिर उससे पूछा सलिल का क्या होगा? रोजी ने सूक्ष्म उत्तर दिया "फासी'... फिर ठहरकर बोली अभी तो मजिस्ट्रेट शिरीष मुखर्जी से उसके लिये रिमाड लिया गया ह। शिरीष मुखर्जी... लतिका के मुह से निकल पड़ा। उसे सलिल के बनावटी मुखौटे बार-बार याद आने लगे। मुम्बइ आन क प्रस्ताव पर वह क्या हिचकिचाया था? सारे रास्त (सफर म) मुह ढके क्या सोता रहा था? मुम्बई आकर नीचे लतिका को छोडकर कौन सी भाभी से मिलने ऊपर चला गया था ? उसे क्रोध तो अपने आप पर भी आ रहा था पर क्या करे....।

भयभीत लतिका बबई क विशाल जनसमूह क बीच अकेली ही तेज गति से न जाने कहा किस दिशा की ओर भागी चली जा रही थी। शायद रोजी की कुटिल नजरो से दूर बहुत दूर निकल जाना चाहती थी। उस अनजान शहर मे उसका अपना कोइ भी नहीं था। सिर छुपाये भी तो कहा? अब तक तो पिताजी को भी मालूम पड़ चुका होगा कि लतिका सलिल के साथ भाग गई ह। शिरीष तो मुझसे पहले से ही उखडा उखड़ा रहता ह अब तो वह मेरा मुह भी नहीं देखेगा मुझे पतिता समझेगा। वह दिन भर यू ही अपने आप से बाते करता हुइ भागती रही छुपती रही और शाम पड़े समुद्र तट पर जा बैठी। वहा बैठी बैठी अपनी किस्मत पर रोती रही आसू बहाती रही और न जाने क्या क्या सोचती रही उसका अतिम निर्णय यही था कि वह समुद्र म छलाग लगाकर अपना जीवन समाप्त कर देगी। ...अब अपना कलकित चेहरा किसी को भी न दिखाएगी। लेकिन..........

सवेरे का पहला कौआ दूर नारियल क पेड़ पर बैठा अलसाये स्वर मे काव काव बोल उठा। लतिका की भी तन्द्रा भग हुई। प्राची क भाल पर सिंदूरी टीका का उजास फैलने लगा था। कभी कभी सागर की लहरो मे हलचल सी मच उठती थी। लतिका ने पूरा एक दिन और एक रात उस नारियल के पेड क नीचे बिता दी थी। न जाने कितने भयावह विचारों न उसे वर्षो का बीमार जैसा बना दिया था। उसे शिरीष के शब्द जो वह जाते जाते क्रोध म कह कर गया

था याद आत रहे 'प्यार की गहराइया को उसको तुम नही जानती लतिका। उसके लिय तो हर लड़की एक खिलाना मात्र ह। एक दैहिक मनारजन का साधन भर —' पर शिरीष तुमन मुझ सब कुछ समझाया क्या नही? फिर लतिका का अन्तर्मन स्वय ही बोल उठा। क्या वह मुझ समझात ता म समझ हा जाती मर अन्तर्मन म तो उस समय विद्राह की ज्वाला भड़क रही थी। म ता उसक आदर्शवाद का विद्रोह करन उठ खड़ा हुइ थी। उनकी व्यस्तता को एक काली अधियारी खाई जा समझ रही था— लकिन अब म घर की रही और ना घाट की। अब मेरा क्या होगा। कहा जाऊगी— इतनी बड़ी जिंदगी कैसे कटगी?

जसा कि तुमने कहा था शिरीष कि दखो तुम्ह पछताना न पड़। देखो शिरीष म सचमुच म पछता रही हू। अपन ही विचारा की शृखला म निरतर जक्ड़ रहने से उसका सिर बुरी तरह स चकरान लगा। —क्या व मुझ माफ कर दग? नही— नही अब वापस म कहा भी नही जा पाऊगी। रात के सुनसान म इसी समुद्र म छलाग लगाकर सबकी नजरा से हमशा हमशा के लिए आझल हो जाऊगी।

यू ही दिन भर गुमसुम बठ रहने स कुछ लोगा न उस पागल समझा तो कुछ ने भिखारिन आर कुछ मनचला न कुछ आर ही। उसके परा क पास आने जान वाल लोगा ने सहानुभूति क सिक्क पटक दिये थ। उन सबके साथ एक कागज का पुर्जा भी पड़ा रह रहकर हवा क झाको क साथ कभी-कभी फड़फडा उठता था। लतिका ने धड़कत दिल आर कापत हाथा से उस उठाया उसे डर लगा कही राजी ने उसको डरावना आदेश न भज दिया हा फिर भी उसन धडक्ते दिल से उस कागज का खोला आर पढा-

लतिका खद ह कि म अपने आपको तुम्हे समझा न पाया मेरी व्यस्तता आर आदशा से घबराकर तुम इस नाबत तक आ पहुची हो। मरी व्यस्तता अपना जीवन उज्ज्वल करने आर तुम्हारा जीवन सुखमय बनाने क लिय ही थी। म जो कुछ भी सघर्ष कर रहा हू उस सबक पीछे तुम्ह ही ध्येय समझा ह। खर, सुबह सर का निकला था तुम्ह दखा तो स्तब्ध रह गया। बहुत कुछ आगे पीछे साचकर यह सदेश तुम्हारे लिय छोडे जा रहा हू - यदि जावन क आदशा क भारीपन को खुशी स सम्हाल सको तो मरे पास बेधड़क आ सक्ती हा। मकान ढूढन मे तुम्ह कोई कठिनाई नहीं होगी पता पीछ लिख दिया ह। निणय तुम्ह स्वय लेना ह— इसक लिए तुम पूर्ण स्वतत्र हो।

लतिका ने पत्र पढकर मुट्ठी म भाच लिया। क्या शिरीष मुझ स्वाकार कर

लेगा? हा हा तभी तो उसने अपने घर का पता भी लिखा ह। लतिका का जी चाहा कि वह शिरीष को इतना जोरा से पुकारे कि आकाश पाताल सब एक साथ गूज उठ। वह उसकी विशालता क आग मन ही मन नतमस्तक हा उठा। प्रभात सूर्य की प्रथम किरणे लतिका की माग म सिन्दूर भरने जा रही थी। पत्र अब भी उसकी गोद म पड़ा था। श्रद्धा आर पश्चाताप क आसुआ स उसका वक्षस्थल भीगा चला जा रहा था। उसने अपने बिखरे हुए बाला पर हाथ फेरा आर उठ खड़ी हुई।

हो ही गया होगा। जब भावना ही किशारावस्था से प्राढावस्था म आ गई ह तो वह क्यो नही वरिष्ठ हो गया होगा।

समय को जाते भला कितनी सी देर लगती ह। समय चलता रहता ह आर उम्र व्यतीत होती रहती ह। आर उम्र व्यतीत हो जाने से कोई दिमाग बूढा थोडे ही हो जाता है। उसके अनुभव वहा पर ज्यो ही त्यो सहेजे रख रहते ह। शरीर आत्मा नही ह यह तो पचभातिक नश्वर पदार्थो स बना हुआ ह। हा नाम... नाम हमारी जिन्दगी के लिये बहुत महत्वपूर्ण ह। एक पहचान के लिये नाम ही हमे खाने से बचाता ह। जिन्दगी म नाम आर गाव दोना ही जरूरी ह। वसे देखा जाये तो आज गाव की परम्पराआ आर मर्यादाओ को हम भूल गये है। हम धरती को देखना भूलकर आसमान को देखने लगे है। नित नये सूरज को उगा देखना चाहते ह। लेकिन कभी कभी पुराना सूरज ही हृदयो पर अपनी तीव्र आभा का अमिट प्रकाश बिखरा कर, दूर बहुत दूर चला जाता ह। बस उसी की चकाचाध म बहुत से लोग अपना जीवन गुजार देते ह। उसक प्रकाश की स्मृति सदा ताजा बनी रहती ह। जसे वर्षा पूर्व का सूरज आज भी उसी रूप मे उदय हुआ हो। पूरी वसुन्धरा को अपने रगा से सरावोर करने के लिये आर जीवनदान देने के लिये।

भावना उसी धरा पर उठी हुई दीवार पर, चिपके बोर्ड पर अटक कर रह गई। भूल गई अपना नाम आर गाव। यदि ये महाशय वही ह तो इनसे जरूर मुलाकात करके ही जाना चाहिये। उसने फिर बोर्ड पर देखा - हफ्ते मे तीन दिन, रविवार, मगलवार आर गुरुवार। इसका मतलब हुआ कि फिर एक बार यहा आना। लेकिन अब तो उसका ट्रीटमेट भी खत्म हो चुका है। फिर कैसे... क्या बहाना। खर कोई बात नही सोचती हुई मिलन की लालसा मे उल्लसित वह घर की ओर रवाना हो गई।

आज घर पर भी उसका मन नहीं लगा। सारे दिन एक अव्यक्त 'प्रिय वेदना' म वह जकडी रही। फुर्सत के क्षणो मे दर्पण से साक्षात्कार हो गया। बालो की सफेदी कनपटियो पर झाक रही थी, ललाट पर ताजा हो चली कुछ रेखाये भी अपने अस्तित्व को दर्शा रही थी। इन दोनो अप्रिय सत्यो को वह एक साथ झेल न सकी आर उसका मन बुझ गया। नही अब नही अब किसी से मिलना आर पुरानी यादो को दुहराना व्यर्थ हैं। कोई कुछ कहे या ना कहे, लेकिन सफेद बाल आर चेहरे पर पड़ी झुर्रिया ही मनुष्य को प्रेम डगर पर चलन पर स्वत ही बाधा डाल देती ह। इन दोनो के होते हुए भला किसकी मजाल ह कि छिछोरेपन के बारे मे सोच भी ले।

मन और मस्तिष्क के बीच बहुत देर तक सघर्ष चलता रहा। विचारो ने

लहरों का अंत

कितन वर्षो स भावना क मन म एक आस घर किये वठी थी लेकिन आज उसका भावनाओ पर एक प्रश्न चिह्न लग गया ह। समझ म नहीं आ रहा है कि यह जो पीड़ा आज उसन झेली ह उसके लिये हितकर हुई या अहितकर। उसे याद आ रहा ह वहुत वर्षो पहले जव वो वीमार पड़ी थी और ऑपरेशन के लिये अस्पताल म भर्ती होना पड़ा था वहा एक नया नया आया डाक्टर ही उसका इलाज कर रहा था। उसके व्यक्तित्व आर मिष्ठभाषा ने भावना के हृदय के मरुस्थल म एक नन्हा सा पाधा खिला दिया था। वह उस डाक्टर का श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगी थी। उसकी उम्र लगभग भावना के वरावर या उससे कुछ अधिक रही हागी। कितना स्नेह भावना ने उन सात दिना म उस डाक्टर पर न्योछावर कर दिया था। डाक्टर ने भी तो उस स्नह भरे अपनत्व से नहला कर सरावोर कर दिया था।

तव एक रात वरखा न अपना खूव रूप दिखाया था खूव रग जमाया था। धरती से साधी-साधी महक उठती रही थी। सड़के सुनसान थी। वृक्षो पर लगातार पानी गिरने से एक सगीत सुनाई दे रहा था। शाख शाख आकाश जल से नहा कर वर्षा का दिल खोलकर स्वागत कर रहे थे। पात पात ऐसे कपित हो रहे थे जैसे झूम-झूम कर नृत्य कर रहे हो। इस वरखा से वेला मोगरा के पुष्प रातभर सुरभित होत रहे। तव वातावरण मे वेचैन कर देने वाला एक नशा सा छा गया था। कितनी प्रसन्नता महसूस की थी उस शाम भावना ने।

उसी शाम की यादे मन मे सजाये उसकी जिन्दगी मे न जाने कितने दशक व्यतीत हो गये थे। शरीर ह तो पीडाये भी हागी और यदि पीडाय वलवती हो उठगी तो अस्पताल की याद आती ही ह। आज भा किसा पीडा के निवारण हतु उसे अस्पताल जाना पड़ा। पर्ची वनवाते समय अचानक उसका ध्यान दीवार पर चिपके वार्ड पर जाकर अटक गया। वरिष्ठ चिकित्सक— फला फला। नाम उसे जाना पहचाना सा लगा। पुन दूसरी वार पढा तो उसकी भूली विसरी याद एकदम ताजा हो उठी। कही यह डाक्टर वही तो नही ? नाम तो विल्कुल मिलता जुलता सा ह। दिमाग कम्प्यूटर की भाति चलने लगा। लेकिन वरिष्ठ— ? हा हा— क्या नहीं इन वीते हुए कई दशको म वह वरिष्ठ तो

हो ही गया होगा। जब भावना ही किशोरावस्था से प्राढ़ावस्था म आ गइ ह ता वह क्यो नहीं वरिष्ठ हो गया होगा।

समय को जाते भला कितनी सी देर लगती ह। समय चलता रहना ह आर उम्र व्यतीत होती रहती ह। आर उम्र व्यतीत हो जाने से कोई दिमाग बूढ़ा थोड़े ही हो जाता ह। उसके अनुभव वहा पर ज्यो ही त्या सहेजे ग्ख रहत ह। शरीर आत्मा नहीं है यह तो पचभातिक नश्वर पदाथो से बना हुआ ह। हा नाम_ नाम हमारी जिन्दगी के लिये बहुत महत्वपूर्ण ह। एक पहचान के लिये नाम ही हमे खाने से बचाता है। जिन्दगी मे नाम आर गाव दोना ही जरूरी ह। वैसे देखा जाये तो आज गाव की परम्पराआ आर मर्यादाओ को हम भूल गये हैं। हम धरती को देखना भूलकर आसमान को देखने लगे ह। नित नये सूरज को उगा देखना चाहते हैं। लकिन कभी कभी पुराना सूरज ही हृदया पर अपनी तीव्र आभा का अमिट प्रकाश बिखरा कर दूर बहुत दूर चला जाता ह। बस उसी की चकाचौंध म बहुत स लोग अपना जीवन गुजार देते ह। उसक प्रकाश की स्मृति सदा ताजा बनी रहती ह। जसे वर्षा पूर्व का सूरज आज भी उसी रूप मे उदय हुआ हो। पूरी वसुधरा को अपने रगो से सराबोर करने के लिये आर जीवनदान देने के लिये।

भावना उसी धरा पर उठी हुई दीवार पर चिपके बोर्ड पर अटक कर रह गई। भूल गई अपना नाम आर गाव। यदि य महाशय वही ह तो इनसे जरूर मुलाकात करके ही जाना चाहिये। उसने फिर बोर्ड पर देखा - हफ्ते मे तीन दिन, रविवार, मगलवार आर गुरुवार। इसका मतलब हुआ कि फिर एक बार यहा आना। लेकिन अब तो उसका ट्रीटमेंट भी खत्म हो चुका ह। फिर कसे_ क्या बहाना। खर कोई बात नहीं सोचती हुई मिलन की लालसा मे उल्लसित वह घर की ओर रवाना हो गई।

आज घर पर भी उसका मन नहीं लगा। सारे दिन एक अव्यक्त 'प्रिय वेदना' म वह जकड़ी रही। फुर्सत के क्षणा मे दर्पण से साक्षात्कार हा गया। बालो की सफेदी कनपटियो पर झाक रही थी ललाट पर ताजा हो चली कुछ रेखाये भी अपने अस्तित्व को दर्शा रही थी। इन दोनो अप्रिय सत्या को वह एक साथ झेल न सकी और उसका मन बुझ गया। नही, अब नही अब किसी से मिलना आर पुरानी यादो को दुहराना व्यर्थ ह। कोई कुछ कहे या ना कहे लकिन सफेद बाल आर चेहरे पर पड़ी झुर्रिया ही मनुष्य को प्रेम डगर पर चलने पर स्वत ही बाधा डाल देती ह। इन दोना के होते हुए भला किसकी मजाल ह कि छिछोरेपन के बारे मे सोच भी ले।

मन और मस्तिष्क के बीच बहुत देर तक सघर्ष चलता रहा। विचारा न

एक करवट ली। भावना ने सोचा कि अगर म इस स्थिति म हू तो वह भला कान सा खिला हुआ गुलाब ही रह गया होगा। वरिष्ठता का पद ऐसे ही थाड़ मिल जाता ह। उम्र आर अनुभवो की गहराइ म जाने पर ही व्यक्ति वरिष्ठ बन पाता ह। म उससे अवश्य मिलूगी। वह उन दिनो को भूला नहीं हागा। मेरा प्यार... मेरा कुआरा प्यार उसे अवश्य याद होगा। जब वह पहचान लगा तो प्रतिदिन फोन पर सुख-दु ख की बात हुआ करगी जिन्दगी जीन के लिये काई शगल तो चाहिये ही ताकि एक नशा बना रहे और दनिक एकरस ढर्रे म कुछ खुशहाली तो आ सके जो सिर्फ अपनी ही होगी। ... साचकर एक मद हास उसके होठा पर तर गया।

न जाने कितने रविवार, बृहस्पतिवार आर मगलवार आते रहे और जाते रहे। कुछ व्यस्तता आर कुछ उपापोह मे भावना का घर से निकलना ही न हो पाया। अचानक उसे एक दिन याद आया कि अद्यतन बीमारी के बिल अभी तक पडे ह क्या न जाकर इन पर ही दस्तखत एव मोहर लगवा लाऊ आर हो सका तो वरिष्ठ जी से भी मिलने का प्रयास भी कर लूगी। ऐसा सोचकर उसने चेहरे पर थोडी सी लीपापोती कर डाली सलीके से साड़ी बाधी आर बिलो को पर्स मे डालकर चल दी। अस्पताल के गेट पर ज्यो ही वह गाडी स उतरी कि उसके हृदय ने अपना ठिकाना छोड़ दिया आर बडी जोर-जोर से धड़कने लगा। वह चादनी की अभिसारिका नहीं बल्कि धूप की अभिसारिका बनी चली जा रही थी। हल्की सी मुस्कुराहट उसके कपालो को गरमा रही थी उसके हाठा पर खेल रही थी।

बिलो पर दस्तखत करा कर वरिष्ठ जी क केबिन की ओर बढी तो पता चला कि वरिष्ठ जी ग्यारह बज पधारते ह। जसे तसे ग्यारह भी बज। वरिष्ठ जी पधार। वही कद काठी वही व्यक्तित्व वही आख लेकिन सिर के सारे बाल एकदम सफेद, झक्क बगुले क पखो की तरह। उनको देखत ही नसा आर कम्पाउडरो ने सम्मान दने हेतु तत्काल अपनी अपनी कुर्सी छाड़ दी आर खड हा गये हाथ बाध कर। मरीजो की लबी लाइन की आर देखे बिना वो वरिष्ठता का मुखाटा लगाये अपने कमरे म चुपचाप घुस गये। भावना ने एक पर्ची भीतर भिजवाई महोदय बाहर आये। भावना ने मुस्कुराहट के साथ नमस्कार उन्हे किया। नमस्कार का उत्तर भी मिला। भावना को वरिष्ठजी के भाव शून्य चहर से ही पता चल गया था कि व उसे पहचाने नहा ह। इसलिये भावना न विस्तार से बहुत कुछ बताया लेकिन वरिष्ठ जी सब कुछ नकारत रह। फिर भी उन्हान मानवता के नाते इतना तो पूछ ही लिया कि आप कसे आई। दिमाग मे तुरन्त कुछ न उपज पाया इसलिये भावना ने हाथ म ली हुई पर्ची ही आगे बढ़ा दी। उन्होंने उसे पढ़ा गुड आर व भावहीन चहरा लिए अन्य मरीजो को देखने म व्यस्त हो गय। भावना के दिमाग म तत्काल दो बात आई या ना पुरुषा म

हृदय मे कोई घटना का विशेष महत्व होता ही नही या ये महाशय पहले वाले महाशय नही अथवा एक नाम के अनेक व्यक्ति भी तो हो सकते ह। वह बाहर निकल कर अपनी मूर्खता पर स्वय ही हसा।

भावना के हृदय पर क्या बीती वह बता नही सकती। उसके द्वारा वर्षा तक सजोये गये सारे सपने चूर चूर हो गये। वह घर लाट आई। इस बार जो मासम की पहली बरसात होगा वह भावना को सुखद नही लगेगी आर ना ही धरती से कोई सौंधी साधी सुगध ही उठेगी। वह बच्चा ता ह नही जो उमड़ते-घुमड़ते बादला को देखकर खुशी से सतरगी पखो को फलाकर झूम उठे। वह भी अपने परिवार की वरिष्ठतम हो चुकी ह। आर वरिष्ठ होते ही खून का रग भी सफेद पड जाना चाहिये क्योकि वहा किसी लालित्य रहस्य या रोमाच के लिये जगह नही रहती।

उस रात खिड़की से दिखाई देने वाले वृक्ष के सारे पीले पत्ते अपने आप झड़ गये। वृक्ष एकदम खाली सा हो गया। पता नही वह खुश था या नाखुश या पतझड़ स समझाता कर बैठा था।

धरती में धंसे पख

उसका घर हमारे घर से तीसरा या चौथा रहा होगा। पेशे से वह हलवाई था और नाम था शिखरचद लस्सी वाला। क्या गजब की लस्सी बनाता था वह। गिलासनुमा कोरे कुल्हड में। पैसे मात्र छोटे के आठ आने और बड़े के बारह आने। ठडी मीठी गाढ़ी लस्सी और ऊपर से बादाम पिस्ते की कटी हुई हवाइया साथ में गुलाब जल या केवड़ा छिड़की हुई एक परत तथा दही की मलाई भी। आज के युग में ये सब बाते स्वप्न सी नजर आती है। लेकिन ये सब बात उतनी ही सच है जितनी कि सूरज और चद्रमा धरती और आकाश।

उस शहर मे ऐसा कोई मुहल्ला या मुहल्ले वाले न होंगे जो शिखरचद की लस्सी स्वाद न ले चुके हों। जो भी उसके हाथ की बनी लस्सी एक बार पी लेता था उसका मन दूसरे दिन फिर से उसी दुकान की ओर जाने को लालायित हो उठता।

उसकी दुकान में पूरी गरमी ऐसी ही भीड लगी रहती थी जैसी कि आजकल सार्वजनिक नलो पर या राशन आदि की लाइनो पर।

जितनी उसकी दुकान की शहर भर में ख्याति थी उतना ही उसका घर उस मुहल्ले में बदनाम था। इसका अदरूनी कारण चाहे कुछ भी हो परतु प्रतिदिन रात्रि को दुकान बढ़ाकर जाने के पश्चात उसकी पत्नी की चीखो की आवाजो से और कुछ उस परिवार की महिलाओ के मिले जुले अस्पष्ट स्वरो से रात्रि की नीरवता भग हो जाया करती थी। सारे मुहल्ले वाले प्रतिरात्रि की इस चिल्ल-पो के आदी बन चुके थे।

उस युग मे पुरुष वर्ग अपनी पत्नियो को पीटने का महान् कार्य अवश्य करता रहता था। मुहल्ले वाले बुजुर्ग कहते कि भाई मर्द का बच्चा है (तब मर्दानगी का शायद यही मापदण्ड होता होगा) हा तो किसी किसी दिन ये आवाजे नही भी आती थी तो बहुत सूना--सूना सा लगता। पडोसिने किवाडो की ओट से विमुख लौट जाती। उस दिन कुछ छज्जे सूने रह जाते। ऐसा लगता था जैसे कुछ अधूरा रह गया हो... जैसे नमक के बिना सब्जी।

कभी कभी मे सोच मे पड जाती कि इतनी ठडी ठडी मीठी गाढ़ी लस्सी

पिलाकर लोगा के क्लेजे ठडे करने वाल व्यक्ति के अदर एसा कानसा ज्वालामुखी दहका करता ह ? वह भी क्यो नहीं प्रतिदिन एक गिलास मलाईदार लस्सी गटक लता ताकि उसक जलत भभकते क्लेज म भी ठण्डक पड जाये आर उसका स्वभाव एव व्यवहार पत्नी के प्रति मीठी लस्सी की भाति हो जाये। दिन भर ग्राहको को खुश करने वाले व्यक्ति का आखिर ऐसी कानसी मजबूरी है जो उसे घर म कदम रखत ही उसे क्रूर वना दती ह ? बिल्कुल जगली।

इधर कई वार शिखर चन्द की पत्नी शोभा सोचती कि कहा गया मेरे सपना का राजकुमार जिसके खयाला म म कुवारेपन म खोई रहती थी। क्या मुह दिखाऊगी अपनी सहेलियो को जिनके सामने म हमेशा अपने होने वाले पति की डींगे हाका करती थी। क्या मुह लेकर जाऊगी अपने मा वाप के सामने—क्या अपने शरीर पर— अपनी आत्मा पर नीली लकीरे दिखाने के लिय ? —म अवश्य ही पापा को ये लकीरे दिखाऊगी ताकि वे अपनी अन्य वेटिया के साथ ऐसा न होने द।

मुझे पढाया लिखाया क्या था ?—मेरे सपना का चूर करने म उन्हे क्या मिला ?—रमेश भी तो उन्हीं की जाति का था। पापा की इज्जत भी करता था। उसके माता पिता के प्रस्ताव को पापा ने कितने छोटे से कारण की वजह से ठुकरा दिया था।—आर वह कारण था गरीबी। उसकी शालानता सज्जनता की तो लोग कसम खाते थे। आर सबसे वड़ी वात तो यह थी कि वह मुझे कितना आदर देकर चलता था।

जानती हू पिताजी की इसम कोई गलती नहीं ह। भला अपनी वेटी का वुरा कान सोचता है ?—शायद उन्होने भी यही सोचा होगा कि शिखर चन्द के पिता का नाम रईस सेठों की गिनती मे आता था। सात पीढ़ियो से लक्ष्मी की उनके परिवार पर अटूट कृपा थी।

—परन्तु जिनके घर मे पसा होता ह उनके घर के अदर की वात कोई नहीं जान पाता— वहा न आपसी प्यार होता ह न सहानुभूति। सव कुछ *ऊपरी—सब कुछ वनावटी। —अव जसा भी ह मुझे भी अपनी आत्मा को मार* कर, दोना कुलो की लाज तो रखनी ही है। वाहर वालो मे तो इस घर का बड़ा नाम ह। आर मै इस घर की वहू हू। आगे मुझे ही सव कुछ सम्हालना है। जो कुछ मेरे साथ होता है होने दो—अपना अपना भाग्य।

अभी वह कुछ आगे आर सोच पाती कि सासजी रिक्शे से उतरी आर वोला ठोली मारती हुई —'लो ये महारानी जी अभी तक अपने कमरे मे ही शृगार पट्टा कर रही ह। आर चूल्हा ठडा पडा हे। क्या आज तेरे वाप के घर से खाना आयेगा ?—जो हाथ पर हाथ धरे वेठी है महारानी जी।

"—अजी सुनते हो—आर पता नही वे किसको क्या सुनाने क लिये वहा स चल दी। शोभा उठी आर चुपके से रसोईघर मे घुस गई। राज रात को मा, वहन एव भाभियो के सिखाये म आकर पति द्वारा पिट जाने पर भी दूसर दिन वह सामान्य होकर घर के काम-काज म जुट जाती। वह नहा धाकर, अपन एव परिवार के कपड़े सुखान सडक की ओर निकले छज्जे पर जाती तभी लोगा को पता चलता कि यही ह शिखर चद की वहू जा सही सलामत ह। हड्डी पसलिया सव यथा स्थान हे। कुछ लोग शिखरचद के इस व्यवहार का उसकी ज्यादती मानते तो कुछ सास ननदा आर जिठानिया की काली करतूते। लेकिन असली कारण कोई भी नही जान पाया। कारण यह कि उस घर का रिवाज था कि उस घर की वहुए हाथ भर का घूघट निकालकर सिर्फ रसोईघर मे ही घुसी रहे तव कामो का अत थोड़े ही हुआ करता था। आज पापड बन रहे ह ता क्ल बड़ी-मगोडी कभी इस चीज का अचार तो कभी उस चीज का मुरब्वा। आज इसका गाना ह ता क्ल उसका गाना आदि आदि। पूरे दिन खटकने के पश्चात सास के पर आर कमर दाव-दूव कर ही वहू अपने कमरे म कदम रख पाती थी। पति महोदय चाहे क्तिना भी इन्तजार क्या न कर जव तक सास की अनुमति नहा मिल जाती तब तक उनके पास से सरक्ने का वहू को साहस नही होता था तव वेटे मा से डरते थे।

पत्नियो क कमर मे आ जाने के पश्चात उस घर के पुरुष वर्ग हिसाव किताव पूरा करके छत पर जाकर सो जाया करते थे। लेकिन आरता को चाहे कितनी भी गर्मी आर घुटन क्या न महसूस हो उन्हे अपने अपने कमरे म ही सोना पड़ता। एक रात की वात ह दिन भर गृहस्थी की चक्की म पिसी पिसाइ शिखरचद की वहू निढाल हाकर सो गई। लेकिन आधी रात के समय उसकी आख खुल गई। उसे अपने कमरे मे हल्की सी खटर-पटर की ध्वनि महसूस हुई। पहल ता उसने समझा कि शायद उसका पति हा कमरे मे आया होगा आर कुछ देर मे उसे जगायेगा भी। लेकिन ऐसा कुछ भी नही हुआ। वह पडे पड़े श्वास रोके ही परिस्थिति का जायजा लेती रही तभी उसे किसी अपरिचित व्यक्ति का हाथ अपने गले म महसूस हुआ। आगन्तुक न गल म पडी सोन की मटरमाला टटालकर निकाल लना चाहा। अपरिचित स्पर्श से वह डर गई।

शिखरचद की पत्नी को अव साग मामला समझ म आ चुका था। उसने उस वढे हुए हाथ को ऐसे पक्डा कि वह मर्दजात लाख प्रयत्न के पश्चात भी अपने को छुड़ा न सका। वह उसे हाथो से जकड़े हुए मुह से जोर जोर स चीखे चली जा रही थी—चोर — चोर। चिल्लाने की आवाजे सुनकर पास के कमर म

सोई पड़ी अन्य जेठानिया भी वहू के स्वर मे स्वर मिलाकर आर जोर जोर से चिल्लाने लगी। तव तक शिखरचद की वहू अपनी तरफ से चोर की काफी धुनाई कर चुकी थी।आज पड़ासिया ने महिला क चीखने रोने की आवाज की वजाय किसी अन्जान पुरुष को चीखते चिल्लाते सुना तो पूरा मोहल्ला माजरा देखने के लिये चाक्ना हो उठा। वाद मे पता चला कि शिखरचद के घर मे आज चोर घुस आया था।

छत पर सोये पुरुष भी हड़वड़ाकर नीचे उतर आय। राशनी की गई तो पता चला कि शिखरचद की वहू चडिका का रूप धारण किये पीतल के लोटे से ही उस चोर के दनादन दिये चली जा रही थी। पुरुषो के आ जाने पर चोर अव उनके हाथो मे जा चुका था। फिर तो उसकी जो सामूहिक दुर्गति हुई उसका पता तो कोई भी लगा सकता है। अच्छी खासी धुनाई के पश्चात उस जिदा अर्द्धवेहोश सी लाश को सड़क म फक दिया गया जेसा कि आजकल फिल्मा मे होता है। वाद म पुलिस वाल आये आर दो चार भारी भरकम गालियो का भजन सुनाकर उसे जूता की ठोकर मार, घसीटते हुए लेकर चलते वन।

शिखरचद ने उस घटना क दूसरे दिन दुकान खोली लेकिन उसका मन आज लस्सी वनान म विल्कुल भी नहीं लगा। कारण यह कि चोर अकेला नही था उसके साथी हो हल्ला आर जाग सुनकर अन्य कमरो का माल लेकर चम्पत हो चुके थे। लेकिन शिखरचद की तिजोरी पत्नी की सूझबूझ आर सतकता के कारण खोले जाने से वच गई थी। तिजोरी म सिर्फ उसी का माल हाता तो कोई वात नहीं लेकिन उसके पास तो न जाने कितने व्यवसायियो की सम्पत्ति भरी पड़ी थी। वह लन-देन का धधा जो करता था। अगर अन्यो के जेवरात चले जाते तो क्या होता? या तो उसका हार्ट अटक हो जाता या फिर दुनिया को मुह दिखाने के लायक भी नही रहता। कसे उतारता दुनिया का इतना सारा वोझ।

इस सभावित आशका के साथ ही उसे एक वात आर भी आश्चर्य मे डाल रही थी कि उसके द्वारा रोज पिटने वाली पत्नी जो कभी उफ तक नहीं करती थी आज उसी ने किस वहादुरी से अच्छे खासे जगली से मर्द का भुरता बना कर रख दिया। चाहती तो किसा भी दिन मेरे उठते हुए हाथो का भी ऐसे ही जकड़कर पकड़ सकती थी। हो सकता ह वह मेरे पतित्व को आहत नहीं करना चाहती हो। म भी कैसा मूर्ख हूँ जो उसे रुई की तरह धुनकर रख देता हूँ। मरे इस कार्य से उसे कितनी पीड़ा पहुँचती होगी? मैं भी कितना खुदगर्ज हूँ कि उसकी चोटो को सहलाना तो दूर रहा कभी शाब्दिक मरहम भी नही लगा पाया। हाथो से मथनी चलाता रहा दही विलोता रहा ग्राहको को निबटाता रहा। लेकिन मस्तिष्क पत्नी पर ही केन्द्रित रहा।

परतु म भी क्या करू दिन भर का थका मादा जब दुकान वढाकर चन से दो कोर निगलना चाहता हू तो अम्मा भाजी (भाभी) या वहिना म से काई न कोई उसकी एसी चुगली कर वठती ह कि मेरा खून खाल उठता ह। जब मरा हाथ उठ जाता ह तभी उन चुगलखोरा क कलज को ठडक पहुचती ह। हादस क दूसरे दिन उसे विल्कुल चन न आया। न जान कितने विचार आत जात रहे।

उस चोर के कदम उस घर म कुछ ऐसे भाग्यशाली पडे कि उस रात के बाद से उसकी पत्नी की हड्डिया कभी नहीं दुखी।

सरे राह

दो दिन कसे आर क्ब फुर्र से उड गये इसका पता ही नही चला। सम्मेलन रात ग्यारह वजे समाप्त हो गया आर एक घटे क अदर रात्रि भोज भी। दिनभर की मेहनत आर थकान के कारण सारे कार्यकर्ता (पार्टीसिपेट्स) निर्धारित की गइ जगहो (मतलब होटलो आर धर्मशालाओ) पर न जाकर वहीं उसी हॉल मे निढाल होकर (आगतुको के जाने के बाद) सोने को उद्यत हो गये। महिलाओ को जब अपने लिए अनुकूल इतजाम नजर नहीं आया तो वे सभी एक राय होकर उतनी रात गये ही घर लाटने को तयार हो गई।

चूकि अधिकाश लोग एक ही शहर से आये थे महिलाओ की खुसर-पुसर से उनके भी कान खडे हो गये। वे भी साथ चलने को तेयार हो गये। ड्राइवरो से पूछा गया कि भइया रातो रात तुम लोगा को चलने मे काई परेशानी तो नहीं होगी। इस पर जीप वाले चालक ने कार डाइवरो से जाकर सलाह-मशविरा की। उनम जो सरदारजी थे वे वडी जिदादिली स वोल- तक्लीफ का क्या वात ह जी रात विरात चलना ता हमारा धधा ही ह। उस ड्राइवर की बात सुनते ही खुशी की लहर सबक चेहरो पर व्याप गई।

सारे के सारे जसे आये थे वैसे ही भर गये गाडियों म कुछ आगे आर कुछ पीछे हा एक दो साथ आर लग लिये जबर्दस्ती...पर आगे वालो को कोई परेशानी तो थी नही साथ लगे व्यक्ति तो वठेगे तो पीछे ही जाकर। वसे देख जाये तो इतनी रात गये इन लोगा का साथ रहना भी आवश्यक था। क्याकि राता को ही समाजकण्टक सक्रिय हो उठते ह। ऐसे व्यक्ति निशाचर कहलाते ह ओर उनकी आखा मे उल्लू की आखा का घोल मिला रहता ह।

उस पर तो ट्रक ओर बस चालक तो वाप रे कुछ मत पूछो... वाहन चलाते चलाते ही सोमरस का पान करते रहते है। रात मे चलने वाले ये बडे वाहनो के ड्राइवर सारी की सारी सड़कों को अपने वाप की मानकर ऐसे अधिकारपूर्वक चलते है कि कुछ मत पूछो। उनकी चपेट मे आने से यदि कोइ बच जाय तो उसकी किस्मत ना बच पाये तो उसकी क़िस्मत। इन वड़े-वड वाहनो की लाइटे अच्छे भले की आखो को चौंधिया कर रख देती ह।

शुभागी आर रेशमा को डीन साहब का आदेश प्राप्त हुआ था कि वह

आगे वाली सीट पर जाकर बैठ। बाकी सब जो डबल आकार (मोटे) का महिला और पुरुष थे वे पीछे की सीट पर बठाये गये। रात्रि के गहन अधकार को चीरती जीपे आर कार निरतर आग की आर बढ़ रही थी।

सडक क दोना ओर खड़ वृक्ष उस नीरवता म कभी कभी एक डरावनापन सा पदा कर रहे थे। कभी वे भयानक लगते तो कभी तपस्वी से। शुभागी उन वृक्षो की उदारता और तपस्याओ के पृष्ठो म खो गई। रेशमा को शुभागी का इस तरह मान धारण कर लना शायद बर्दाश्त नहा हुआ तो वह बाल उठी- 'कहा खो गई मार्लिन मुनरो ?" रशमा की बात का शुभागी ने कोई जवाब नहीं दिया बस सिर्फ मुस्कुरा कर रह गइ। फिर थोड़ी सी देर मे बोली देख देख तू ही देखकर बता ये वृक्ष तुझे कसे लगते हे ? आते जाते वाहनो की लाइटे वृक्षो पर पड़ने से वे कभी डरावने तो कभी हठयोगी से एक पर पर खड़ नजर नही आ रहे ह ?— शुभागी की बात पर रेशमा बाली - तू ही देख तुझे ही अधेरे म देखन की पुरानी आदत ह।" उसके इस कथन पर न सिर्फ वह हसी आर भी सब हसने लगे। रेशमा ने अप्रत्यक्ष रूप से श्लेष म बात कही थी। सब मिलाकर उस समय का माहाल बहुत ही खुशनुमा था। सभी एक दूसरे के सवादो का भरपूर आनद ल रहे थे।

जनवरी का आखरी सप्ताह हाथ पर कुल्फी से जमे जा रहे थे। लेकिन भेड-बकरिया की तरह सटे बठ हाने के कारण उन्ह इतनी सर्दी नही सता रही थी जितनी कि सतानी चाहिये थी।

पीछे बठे हुए लोग चूकि कम्बल ओढे हुए थे इसलिये झपकिया लेने लगे आर ऊघ-ऊघ कर उनके सिर एक दूसरे पर लुढके जा रहे थे। चालक ने स्तब्धता देखी तो स्वय मस्तिष्क को चेतन्य बनाय रखने हेतु जेब से पान पराग का पाउच निकाला और पूरा का पूरा मुह मे उडेल लिया।_यह कहा नहीं जा सकता कि वह पाउच पूरा भरा था या आधा रीता। लेकिन उसकी खुश्बू स पास बैठे लोगा को आनन्द अवश्य आ गया। इसके पश्चात उसने एक कसेट निकाल कर टेप मे लगा दिया। टेप बज उठा।

एक गाढी भारी आवाज उस सन्नाटे म व्याप गई। आवाज थी नाना पाटेकर की। एक फिल्मी कलाकार की। चिकने चुपड़े चेहर वाला नहा बल्कि एक रफ एड टफ व्यक्तित्व के धनी आवाज के जादूगर की। सम्मोहित थी शुभागी उसके किसी फिल्म के बोल को जा वह बोल रहा था सुनने लगी। नाना पाटेकर अपनी पूरी बात कह लेने के पश्चात बार बार कह रहा था - एक मच्छर आदमी को हिजडा बनाकर रख देता है।'—

उपरोक्त डायलाग का एक विचित्र आवाज म दुहराव सभी को अच्छा लग

रहा था। सभी हस रहे थे। उसके शब्द गहराई मं जाकर कुछ सोचने को विवश कर रहे थे । शुभागी के होठो की मुस्कुराहट गायब हो गई उसे लगा सचमुच म ही मनुष्य की जिदगी म कई ऐसे तत्व आ जुड़ते ह जिन्हे उसे जबर्दस्ती न चाहते हुए भी बर्दाश्त करना ही पड़ता ह। अनचाहे व्यक्ति किसी अच्छे भले व्यक्ति की जिदगी तबाह करके रख देते हे। ठीक इसी तरह से उसे शाश्वत की याद आ गई _ वह ह क्या_ एक डाक्टर ही न। न सूरत का न शक्ल का न कद न काठी_ एकदम रूखा सूखा_ लट्ठमार सा व्यक्तित्व। सिर्फ अपने विषय का ज्ञाता अस्थि रोग विशेषज्ञ, इसके सिवा कुछ भी नहीं । वह जिन सुख सुविधाआ म पला बढ़ा ह अगर ऐसी सुख सुविधाए किसी रिक्श वाले या झल्ली वाले को भी मिल जाती तो वह भी आज कही का कही पहुच जाता। इसमे कौन सी बहादुरी कर डाली साहबजादे ने। सारा ससार विशेषज्ञो से भरा पड़ा है।

कौन स पति पत्निया म आपस मे कहा सुनी नही होती ? लेकिन सिद्धान्त तो यही कहता है कि उम्र म बड़ होने के नाते पति को ही हमेशा पत्नी को मना लेने म पहल करनी चाहिये_मान मनुहार कर लने म कोई आकात तो घट नही जाती_उल्टे उससे प्रेम आर विश्वास की बेल अधिक सबल हो लहलहा उठती है।

पुराने लोग कहा करते थे - "रूसे (नाराज) को मनाओ आर फटे को (फौरन) सिलो। समय पर लगाया गया एक टाका नौ टाका का बचा लेता ह। लेकिन आजकल खून मे अक्खडपन इस प्रकार समाया रहता ह कि दोनो म से कोई भी झुकने को तयार नही होता। तू भी रानी मै भी रानी फिर कौन भरे सास का पानी।

यह तो सभी जानते है कि हर क्रिया की कुछ न कुछ प्रतिक्रिया होनी अवश्य प्रारम्भ हो जाती ह। आवेश मे लिये गये निर्णय न जाने कितने कितने मोड़ ले लेते ह आर उन्ही निर्णया क वशीभूत हो व्यक्ति न जाने क्या-क्या कर गुजरता है। वास्तव मे दाम्पत्य जीवन खेल नही ह तलवार की धार ह ___

नाना पाटेकर बोल चुका था एक मच्छर आदमी को हिजडा बना कर रख देता ह। इसमे उसने कुछ भी तो गलत नही कहा। अचानक टेप मे कुछ गड़बड़ी पदा हो जाता हे। चालक केसेट पलटने के लिये हाथ बढ़ाता ह, उसका हाथ शुभागी के बदन से छू जाता हे। एक विचित्र सी झुरझुरी उसके बदन मे फल जाती हे।

सड़को पर दौड़ते हुए वाहनो की जब जब तेज लाइट जीप पर पड़ती तो शुभागी चालक का चेहरा गार से पढ़ लेती। चेहरा सुदर था सलोना था विकार

रहित। चूंकि पीछे बठे बुजुर्गो से आदेश प्राप्त हुआ था कि रेशमा आर शुभागी तुम दोना सुगध को सोने मत देना । उससे बात करती रहना। बस फिर क्या था चुपडी आर दो दो। बातूनी रेशमा बाते करती रही आर शुभागी उसकी हा हू म जवाब देती रही।

बात ही बात मे सुगध (बालक) ने बताया कि बचपन म उसका मन पढाई मे बिल्कुल भी नही लगा। तीन बार मे किसी तरह से हायर सकण्डरी, वह भा सप्लीमेंटरी दे दे कर पास कर पाया। इसके पश्चात उसने सदा के लिये पढ़ाई स मुह मोड लिया। बडा भाई एम डी है, दूसरा इर्जीनियर, बहिने लक्चरार है। घर मे म ही सबसे छोटा हू। पिता का फार्म है कोठी ह आर घर मे दो-दो जीपें है।— इतना कहकर वह चुप हो गया आर कान में लपटे हुए मफलर को ठीक करने लगा।

उसकी बात सुनकर शुभागी को बहुत दु ख हुआ। सोचने लगी इसका बचपन अवश्य ही किसी ना किसी कारण से उपक्षित रहा होगा जबकि फैमिली बकग्राउड तो पूण शिक्षित ह— मालदार भी है फिर — फिर कहीं इसे माता के स्नेह का अभाव तो नही रहा लेकिन इस बात को कुरेद कर पूछने का साहस शुभागी नही कर पाई।

उसे मालूम ह कि विद्या तो मा सरस्वती की कृपा से प्राप्त होता ह विधाता जा जो छठीं की रात क अक माड़ देता ह वही जीवन भर के लिये मड जाते ह। इसी पढाइ-लिखाई की बात को लेकर एक बार कॉमन रूम मे इदिरा जी से उसकी अच्छी खासी बहस हो चुकी थी। इदिरा जी नई कविता का पक्षधर थी तो वह (शुभागी) छद लय वाली कविताआ की। इसी तरह बहस के कई मुद्दे थे उस दिन वोट बराबर के थे इसलिये हार-जीत निष्कर्ष का कोई मसला तय नही हो पाया।

उसका कथन था कि आज कोन किसकी नव कविताओ की एक भी पक्ति याद रख पाता ह लेकिन प्राचीन साहित्यकारो की रचनाए आज भी अजर अमर ह वे ही ऊचे सिहासनो पर चिरकाल तक आसीन भी रहेगी - गीत तो उसे कहते ह जो लोक के कठ मे बस जाये। समाज का स्वर हो जाये। उनम चाहे सयोग हो या वियोग गीता आर कविताओ मे यदि लय ताल होगी तो वे जुबा पर फारन चढ़ पायेगी। आर भी न जाने क्या-क्या वह बालती रही थी उस दिन उसे अपने आप पर आश्चर्य आ रहा था कि वह इतनी मुखर कस बन गई? कहा से फूट पड़े उसके जबान से इतने तक-वितर्क?

हा तो शुभागी का ध्यान उस सुदर-सजीले नवयुवक की आर फिर चला

गया उसने वताया कि उसके पिता के पास पहल एक ही जीप थी। वह शाकिया उस जीप को चलाया करता था। फिर अपन खेत की उपज बोरियो में भर-भर कर ले जाने लगा। उसने वताया मुझे वह जीप वहुत प्रिय थी। यदि दखा जाये तो युवावस्था म तेज गति से दाड़ना हर नवयुवक की कमजोरी होती है। इसी का वह भी शिकार वन गया था।

उसने वड़े गर्व से वताया कि उसने दूर दूर तक की यात्राए भी इसी जीप से कर डाली है। अपने माता पिता व परिवार वालो को वह तीर्थ यात्रा करा लाया ह। अभी कुछ दिन पूर्व ही वह अपने मित्र के परिवार को साथ ले कश्मीर भी घूम कर आया ह । अगले साल वैष्णो देवी जाने का इरादा ह।

उसकी साहस भरी बाते सुनकर शुभागी को वहुत अच्छा लगा। ये हुई ना मर्दों वाली वात। वह पुरुष किस काम का जो अपने शरीर को आरता के माफिक (आजकल ऐसी औरत नहीं ह) अपने शरीर को धूल, धूप, धुआ से वचाता रहे। ना कही आये और ना कही जाये। सीमित दायरो मे श्वास लेने वाला की सोच कभी भी विस्तृत नही हो पाती।

शुभागी को याद आये वे दिन जव उसकी नइ-नइ शादी हुई थी। उसकी दिली तमन्ना थी कि शाश्वत उसे सारी दुनिया की सेर करा दे। लेकिन शाश्वत को इतना सव कुछ सोचने की कहा फुर्सत थी। वह तो हमेशा वर्तमान को जीता था। उसे तो अनायास ही ससार क समस्त सुख नसीव हो गये थे। इसीलिये अभाव सुख दु ख त्याग तपस्या सवेदनशीलता के स्थान पर उसमे अह क्रोध, स्वार्थ आदि कूट कूटकर भर गये थे। भूख की कद्र समझने से पहले ही जिसके समक्ष छप्पन भोग परोस दिये गय हा ऐसा व्यक्ति भला प्याज रोटी की कद्र कहा समझ सकता हे ?

सामने से आती किसी वस की तेज लाइट फिर जीप पर पड़ी। चालक ने फिर कसेट वदल दिया। शुभागी ने उसके हाथा का स्पर्श पुन महसूस किया फिर वही झुरझुरी पूर शरीर मे सनसनी फला गई। उसी प्रकाश मे उसने चालक का चेहरा पुन पढा। चहरा निष्कपट था। चेहरे पर स्वाभाविकता थी। लेकिन शुभागी को अपने आप पर आश्चर्य आ रहा था उसे क्या हो गया ह वह ता काल्ड हो चुकी थी सर्द अहसासा से।....फिर यह क्या ? इस व्यक्ति का अनजाना, अनाम स्पर्श उसे सुखद क्यो लग रहा ह ? वह अपनी मूर्खता पर स्वय हसी कि आगे की सीट पर दो की बजाय तीन बैठेंगे तो स्पर्श तो होगा ही। कोई वेचारा क्या करे। वह अपनी मूर्खता पर पुन मुस्कुराई।

मिडवे आ चुका था शुभागी सुख की दुनिया स उतरकर यथार्थ के

धरातल पर आ चुकी थी। सारी दुनिया वाकई क्षणभंगुर है अभी जो दृश्य आखो के सामने हे कुछ देर बाद वो सब विलीन हो जायगे और उनकी जगह नये दृश्य आ जायगे। जिनके साथ दो दिन हसी खुशी मे व्यतीत हो गये वे देखते देखते न जाने कहा छिटक कर चलते बनेगे। कौन जाने ये सारे परिंदे कहा-कहा से आये हैं___।

सुगंध ने फिर से कैसेट बदल दिया है। 'परदेशी_ परदेशी जाना नहीं', गाना बज उठा। शुभागी को इस गाने के बोल और धुन दोनो ही पसंद है। उसकी इच्छा हुई कि जल्द से जल्द जाकर उस पिक्चर को देख डाले। ऐसा तो शुभागी के साथ कई बार हुआ है, किसी गाने की वजह से उसने कई फिल्मे कई बार देख डाली है। जैसे रजिया सुल्तान 'ऐ दिले नादा_ आरजू क्या है – जुस्तजू क्या है।' कुछ गाने सुनकर वह अनजाने ही उदास हो जाया करती है। क्या उदास हो जाती है उसे खुद भी नही पता। शायद दिल की किसी तह को छू लेते है उनके बोल____ उनकी धुन।

कैशार्य की सीढ़ी पर कदम रखते ही कुछ व्यक्ति अपने भविष्य के बारे मे कुछ सुनहरे सपने सजो डालते है, किसी कारणवश यदि वे पूरे नहीं हो पाते बड़ी पीड़ा और घुटन के बीच से होकर उसे गुजरना पड़ता है। वैसे शुभागी बच्ची नहीं है वह अच्छी तरह से जानती है कि सपने कभी किसी के पूरे होते ही नहीं।

अचानक जीप रुकी। शुभागी ने देखा कि उसका घर आ चुका है। उसका मन बोझिल हो उठा। काश यह यात्रा कभी समाप्त न होती तो कैसा रहता। बोझिल कदमो से हाथ मे अटैची लिये वह जीप से उतर पड़ी सर्द हवा का झोका उसे सिहरा गया। सबसे विदा लेकर वह बरामदे की सीढ़िया चढ़ने लगी मन मे कोई उत्साह नहीं था। घर तो इसान को तब ही अच्छा लगता है न जब उसकी अगवानी मे कोई पलके बिछाये स्वागत के लिये बैठा हो। यह अहसास तो उसका कभी का चूर चूर हो चुका था।

फिर भी घर तो घर ही है जहा सुख है सुविधाए है शांति है, और सबसे बड़ी बात सुरक्षा की है इसलिये वह सबको प्रिय लगता है।

■■■

मौत का शेष एक वर्ष

मासम कुछ अजीब-सा हो रहा था। घटाटोप बादल बरसने की तयारी मे थे। शायद वर्षा होगी यही देखने के लिए म बरामदे मे जा बठी। बादल गहराये अवश्य, पर बिना बरसे ही तरसाकर न जाने कान-सी दिशा की ओर उड़ गये। मै थोड़ी सी मायूस होकर उठने ही वाली थी कि अचानक सामने वाले नीम में कुछ फड़फड़ाहट की आवाज गूंजी। पेड़ बहुत घना था इतनी दूरी से कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। तभी ध्यान आया पेड़ पर से जाते हुए बिजली के तारो की। मन नहीं माना आर भला मानता भी क्यो बचपन मे दादी आर नानी के द्वारा मस्तिष्क मे बाये गये सस्कार के बीज कभी इतनी आसानी से निकल पाते हे ? जमे तो एसे जमे कि कुछ पूछो मत। उन बीजा मे स एक बीज कुलबुला उठा- लगा कोई पक्षी सकटग्रस्त ह शायद इसलिए सहायतार्थ पर उस ओर उठ खड़े हुए। वृक्ष के ठीक नीचे जाकर ऊपरी टहनियों मे नजर जमाई तो पाया कि एक कावा दम्पति प्रेम लीला म निमग्न ह।

उस ओर से मन हटा ही था कि बचपन मे दादी के द्वारा बाए गये बीज अपना सिर ऊपर उठाये नजर आने लगे। तत्काल एक जोरदार झन्नाटा मस्तिष्क के तारा को झकृत कर गया आर मे भारी मन से सोफे मे जा धसी। दादी से ही सुना था कि कावे को क्रीडारत देख लेने से उसी साल के अदर-अदर मृत्यु अवश्य हो जाती ह।

बस फिर क्या था—अपनी मौत सन्निकट देखकर गृहस्थी का तिनका-तिनका और भी प्यारा तथा कुछ दिनो के पश्चात हाथ से फिसलता हुआ सा नजर आने लगा। पहले तो मन उदास हुआ। फिर दिन प्रतिदिन निराशा भरने लगी। दिमाग मे एक फितूर का अभ्युदय हुआ। सोचा अब तो मरना ही है फिर जाते-जाते क्यों न कुछ यश अर्जित कर लिया जाये। जिन रिश्तेदारो और मिलने वालो से कतराते सारा जीवन बीता था-- वे ही अब बहुत खूबसूरत आर प्राणो से प्यारे लगने लगे। सबके अवगुण भी जब गुण से नजर आने लगे। उन सबकी तीमारदारी, बीमारदारी और मेहमानदारी मेरे द्वारा दरियादिली से होने लगी। ऐसा करने मे मेरा एक स्वार्थ निहित था कि अपने पास का जमा पैसा खूब लुटाऊ ताकि मेरे मरने के बाद मुझे लोग याद करके एकाध आसू आखो मे अवश्य तेरा सकं।

मेरे अचानक वदल इस व्यवहार पर लोग मनगढ़त वहमा आर शको के शिकार होने लगे। कोई लॉटरी खुल जाने का मुझ पर शक करता तो काई गडा धन मिल जाने का वहम पाल वठा। काई-कोई तो साफ कहने मे भी नहीं चूकता कि —भई जन्मपत्री मे लात कसे मारी जा रही है ?_ पर म तो अपन इरादा म अटल थी— सवकी वात इस कान स सुनती आर उस कान से निकाल देती। क्याकि यमराज क भैसे की आवाज का सायरन (खतरे की घटी) मुझ अच्छी तरह से सुनाई दे चुका था। अपने महाप्रयाण की तैयारी को मने गुप्त ही रखा। कहीं किसी ने झूठी ही सही अगर अपनी सहानुभूति दिखा दी तो मुझ खुद के लिए आसू ना बहाने पड़ जावे। आसू भी तो इस अकाल मे वड़े काम की चीज है ना। मात के बाद जहा जाना पड़ेगा वहा अगर पानी पीन को ना मिला तो आसू पीकर ही काम चला लगे।

मृत्यु का भय मन पर इतनी बुरी तरह से समाया हुआ था कि मैन सार क सारे नायलोन के वस्त्र उठाकर अडरग्राउड कर दिये आर दनादन कॉटन की साड़ियाँ खरीद डाली। घर मे केरोसिन तो पहले से ही नहीं था वाद म उसके खरीद कर लाये जाने की सख्त मनाही करवा दी। सोचा कहीं ऐसा न हो सास-वहू, ननद-भौजाई या पति-पत्नी म किसी भी बात को लेकर तकरार हो जाये क्योकि लडाई की सा फासदी सभावनाय इन्हीं रिश्तो म ज्यादा हुआ करता ह। ये रिश्ते आपस म विना मुलाहजा या विना आगा पीछा साचे वहुत आसाना से झगड लेते ह क्याकि इनम आपस म खून का रिश्ता तो हाता नही जो तू तू म-म करते समय एक दूसरे का लिहाज अथवा मान-अपमान का भय महसूस किया जा सके। इसम तो अक्सर माका पाते ही खून कर दने का रिश्ता होता ह। तो इस तरह से घर से केरोसिन माचिस आर नायलोन आदि के वस्त्र गायब कराकर मात की कुछ प्रतिशत सभावनाओ को तो टाला गया।

यद्यपि एक दिन तवे की रोटी तवे पर ही रह गई आर गस सिलेण्डर अतिम हिचकी लेकर खत्म हो गया। केरोसिन तो था नहा। चूकि पहली रोटी में ही यह हादसा गुजर गया था इसलिए सारा मडा-मडाया आटा ढ़क कर ज्यों का त्यो रख देना पड़ा। दोपहर तक तो भूख को किसी तरह वहलाते रहे पर बाद मे पट में एठन शुरू हो गई और थोड़ी देर के बाद मे गुडर-गुडर की आवाजे पट मे से वाहर आने लगी। समस्या पेट के विशाल गड्ढे को भरने की आ खड़ी हुई—जिसे कभी बेताल भी नहीं भर पाया था। इसलिए 'लाला भिखारीदास, कजूसमल एण्ड नो सस की दुकान से पनीली सब्जी आर खकड़ (पत्थर सी) रोटिया मगाकर मर साथ साथ घर वालो ने भी किसी तरह चबा ली।

ऐहतियात के लिए पेड़ पर चढ़ना भी इन दिनो वद कर दिया गया चाहे

कितना भी मीठा फल क्या न लटक रहा हो मेरे दिल वे सब खट्टे अगूर के समान थे। सीढ़ियाँ पर धीरे से चढ़ती उतरती बिल्कुल जापायत वहू की भाति। स्टार म अगर कोई सामान ऊचा रखा हो तो मेरा बला से। भले ही उसके बिना मेरा कितना ही काम क्या न अटक रहा हो पर स्टूल पर चढ़न से रही।

यहा तक कि बाजार से राशन पानी लाने के लिए किसी ज्योतिषी से दिशासूल, चन्द्रमा के दाय बाय आदि आदि अनेक शकाओ का निवारण करक ही शुभ मुहूर्त म रिक्शे पर सवार होती। फिर भी रक्षार्थ मन हो मन हनुमान चालासा का पाठ बुदबुदाती रहती। कई रिक्शे वाला न मुझे हाफ क्रक' समझा था। _ समझा करे, मेरी बला से मुझे अगर वे फुल क्रेक भी समझे तो समझते रहें,_ मैं अगर बीच रास्ते म मर गई तो उनका क्या बिगड़ेगा ? पति आर बच्चे तो मेरे ही रोयेंगे ना ।

यही नही अब रात के अधर म म घर से वाहर पैर भी ना रखती कही कोइ साप बिच्छू ना काट खाये जा बिना पानी मागे राम नाम सत्त हो जाये। रात का वासी भोजन गरीबा आर कुत्ता को डाल दती इस तरह दान का दान और नाम का नाम पुण्य कमान का इससे बढ़िया और सस्ता सरल उपाय और क्या हो सकता था। इस तरह मरन क एक कारण फूड पॉयजन से भी बचती रही। फिर भी दादी नानी का बात याद ता रखनी ही थी वे लोग बहुत सारगभित आर सच फरमाती था। उन्हान अपने वाल धूप म थोडे ही सफ्द किये थे। अपने अनुभवा का निचाड़ अपन पूर्वजा से प्राप्त कर अपने वशजा को पिलाती रही। हा तो दादी न ही कहा था कि किसी का पेट भर देने से आशीष मिलता है। इस तरह ना जाने कितना का पट भरकर मैंने ढेरो आशाप अपने पास जमा कर लिया था।

इस तरह ये भयकर नाकबदी चकबदी तुकबदी आर सुरक्षा बरतते बरतत किसी तरह दस महाने तो बीत गये। अब जीने क लिए बहुत कम समय बचा था। आज मरे कल दूसरा दिन हाने म सिर्फ 60 दिन तीन घटे आर सात सैकिड वाकी बचे थे। एक शाम मन म वसीयत कर जान की इच्छा जाग्रत हुई। विरक्ति का अहसास तो रात दिन कचोटता ही रहता था इसलिए समस्त वस्तुओ को योग्य पात्रो म वितरण करने म मजा आने लगा। जब सारी आलमारिया और बक्से खाली हो गये तब जाकर कही मेरे कलेजे मे ठडक पड़ी। सोचा चलो अच्छा ही हुआ मरने के बाद मेरी आत्मा किसी चीज पर भटकगी तो नहीं। इस प्रकार भूत प्रेत और पिशाच बनने की सभावनाओ से भी मुक्ति मिल गई। यद्यपि जिनका कमाया हुआ मे इस तरह से जी खोलकर पानी की तरह रोज वहा रहा थी उन्होंने मरी इन वाहियात हरकतो पर खब नगामा भी

खडा किया था, पर करने दो – मुझे जब इस घर मे रहना ही नही ह तो मेरा चीजे भी क्या रहे ? ।

वर्ष का आखिरी महीना चल रहा था। कसे कटेगे ये दिन ? मेरे मन म समाया भय मिश्रित अधविश्वास मुझे दहला-दहला कर चटनी बनाये दे रहा था। एक दिन चलते टेविल फन म मेरी साडो का पल्ला जा फसा। पखे ने ऐसी पकड़ कायम रखी जसे दु शासन की चीरहरण के वक्त रही होगी। मेरे गले मे तेज खिचाव महसूस हुआ। वहा उपस्थित किसी कृष्ण ने फौरन पखा बद कर दिया तब मुझे अहसास हुआ कि विजली पानी भी मानव की मात का एक कारण बन सकते है।

यह तो अच्छा हुआ कि यह अहसास मात के चद दिनो पहले ही हुआ था वर्ना मेरे साथ-साथ घर वालो को भी साल भर तक अधेरे मे ही रहना पडता । मने शाति से बठ कर सालभर के विजली क विला की रकम जोडी ता आर भी दु ख हुआ कि सालभर अगर अधेरे म रह लेते तो कितनी मोटी रकम बच जाती। जाते-जाते घर वालो को कुछ तो फायदा हो जाता। पर सारा दोष मुए इस पखे का है जिसने आखिरी मे जाकर यह अहसास कराया। मात के तो लाखा वहाने हे कहा तक कोई वचे। किसी ने सच फरमाया ह कि 'मरत अचभ नाहि ह जियत अचभा होत। वही मुझे हो रहा था।

इस तरह से म अपने आपको प्रत्याशित आर अत्याशित घटनाओ से बचाती रही। अन्तत वर्ष का अतिम दिन आ ही पहुचा। सारा दिन अतिम निरीक्षण करते बीता। रात को नीद नही आई। सोचा रात को नीद तो गालिब को भी नही आती थी तभी उन्हाने कहा भी था कि "मौत का एक दिन मुकर्रर है नीद क्या रातभर नही आती। ?' खेर, तो मुझे लगा कि मे अगर सो गई तो सोती की सोती ही न रह जाऊ। कहीं यह रात्रि ही काल रात्रि न बन जाये। अचानक पलग पर लेटे-लेटे ही, ध्यान छत पर चला गया। सोचा यह छत भी तो भरभराकर मेरे ऊपर गिर सकती हैं। फिर खुद के ऊल--जुलूल विचारो पर हसी आ गई कि यह मकान कोई हाउसिग बोड वाला न थाड़े ही बनवाया है। फिर भी मात का क्या भरोसा मान लो गिर ही पड़े आर भेजे का कचूमर ही कर डाले। आर हम मान लो को मान गये। फारन विस्तर लपेटे और छत पर आकाश के नीचे जा सोये क्योकि आकाश को गिरते हुए कभी नही सुना था। करवट वदलते वदलते ना जाने कब नीद आ गई।

नये वर्ष की सुवह जब मैं सोकर सुरक्षित उठी तो मन वल्लियां उछल पडा। खिड़की से होकर सूरज की किरणे कमरे म पसर चुकी थी उन्हें दख मुझे

एसा लगा जैसे कह रही हो–"नया वर्ष मुबारक हो।" मेरे ऊपर छाया अंधविश्वास का गहन अंधकार, जो नंगी तलवार बनकर, सालभर से मुझे आतंकित किये जा रहा था इस भोर के आते ही शून्य में विलीन हो गया। मैं अपने अज्ञान पर मुसकुराये बिना न रह सकी। सबसे पहले जाकर अपनी रिक्त अलमारियां देखीं जहां अब मुझे इन्द्रधनुषी रंगों के नये वस्त्रों को लाकर रखना था। नये वर्ष की नई सुबह मुझे आल्हादित कर रही थी– जीने की एक मीठी ललक के साथ।

■■■

व का श्रोताओ की अगली पक्ति म सम्मान सहित बिठा दिया गया। मच पर कों भी थे तो कवयित्रिया भी। वे बड़ी शान से कविया की पक्तिया म बैठी अपनी अपनी रोचक कविताए सुना रही थीं। साथ ही साथिया आर श्राताआ की वाहवाही भी लूट रही थी।

अचानक कमला को न जाने क्या हुआ उस अपने आप पर बड़ी हिकारत सी महसूस हुई। साथ ही अपने दादा-दादी पर गुस्सा भी आया। दादा दादी के हिसाब से नारियो को शिक्षित होना आवश्यक नही था जबकि उसक माता-पिता आर चाचा हमेशा कहा करते थे कि बिटिया पढ़ ले जब तक मा-बाप के घर ह। पर फारन दादा-दादी उनकी बात काट दिया करते आर कहते अरे हमे कानसा बिटिया को जज बनाना ह ... या मास्टरनी ? बस इसान को इतना आना चाहिये कि वह अक्षर मिला मिलाकर रामायण पढ़ ले, आई-गई चिट्ठिया वो पढ़ ले आर कागज पर दस्तखत कर ले। देखना हम अपनी लाड़ो रानी को ऐसी जगह ब्याहेगे, जहा वह बैठी राज करेगी। आर सचमुच म ही दादाजी ने जैसा मन मे सोच रखा था वैसी ही जगह तलाश करके उसकी शादी कर दी थी सचमुच मे वह बैठी राज कर रही थी, वह भी ऐस-वैसे नही हाथ पर हाथ रख कर। कुवारेपन म, दादा दादी के द्वारा पक्ष लिया जाना आर वह भी बात बात पर उसे बहुत मीठा लगता था। तब वह मन म यह वहम पालकर बैठ गइ था क इन दोना के समान हितषी उसका इस ससार म कोई दूसरा नहीं ह।

ससुराल जाने पर जब उसे अपने पति के परिवार मे शिक्षा का बोल बाला नजर आया त उसे खुद पर शर्मिदगी महसूस होने लगी। लेकिन अब पछताने से क्या होता है जब चिड़िया चुग गई हो खेत। उधर दादा-दादी थे तो इधर, भयकर पदा था। इस तरह मे समय, खिसकता रहा ... खिसकता रहा। वह तेरह से बीस की हो गई। इस दारान उसे अपने पति के सच्चे अथा मे प्रिया बनने की कोशिश सालती रही।

एक दिन उसका छोटा सा देवर अखबार पढ रहा था- उसने बताया कि फूलनदेवी पढ़ना चाह रही ह। कमला के लिए एक नई सोच का विषय तयार हो गया था। वा मन ही मन हिसाब लगाने लगी कि जिस आरत ने इतने वर्षो बदूक थामे रखी वह अब कम से कम इस समय 40 45 से क्या कम होगी। जब वह पढ़ सकती ह तो म क्यों नहीं। म भी पढ़ूगी... इसान जब जागे तभी सवेरा समझ लेना चाहिए

— मैं पढ़ूगी, आगे बढ़ूगी आर ताकि पति की इतनी सरस कविताआ का

जो वह ऐसा जानती

आदमी क मन की दाड़ व्यर्थ नहीं जाती। सोची हुई सारी बाते पूरी हा सक्ती ह यदि वह पूरी तन्मयता के साथ उसके पीछे पड़ जाय तो। ऐसा हा हुआ था तेरह साल की कमला के साथ।

अनगढ अनपढ़ कमला जब बहू बनकर ससुराल गई तो उसे रा रहकर अपना निरक्षर होना बहुत खटकता रहता क्याकि उसका पति बहुत बड़ा विद्वान था आर समाज म उसका बहुत नाम था। यही नहीं पूरे भारत म संस्कृत आर हिन्दी के कवि के रूप मे उसका यशोगान चारो तरफ फैला हुआ था। इधर कमला मन म पश्चाताप क बोझ तल दबी किसी आहत पछी की भाति साल दर साल गुजार चली जा रही थी। सच ह जो आहत होता है वहा सोचता है आर जो सोचता रहता ह वही आहत भी होता ह। वही हाल कमला का हो रहा था।

अक्सर घर पर कविया आर विद्वाना क जमघट जुडे रहते थे। वे सब आपस मे एक-एक शब्द को लेकर, घन्टो बहस करते। कमला अलग थलग पड़कर सिर्फ उन लोगा के लिए कभी पानी के गिलासा से भरी ट्रे रखती तो कभी चाय नाश्ता बनाती रहती। इसस ज्यादा उसकी अहमियत इस घर मे कुछ भी ना थी। घर की अन्य सजावटी वस्तुआ म उसकी भी गिनती मानी जाता।

जो व्यक्ति आरो क साथ इतना हसता बोलता ओर बाते करता रहे वही कमला का आमना सामना होने ही बिल्कुल चुप्पी साध ले इससे बड़ी पीडा का बोध किसी पत्नी को भला आर क्या हो सकता है? कमला को बिना बताय ही अपनी कमिया का भान होता चला गया। पर मजबूर थी। ऐसे ही एक बार किसी कवि सम्मलेन म डा. त्रिपाठी को दिल्ली जाना पड़ा। त्रिपाठीजी अपन साथ कमला को भी ले गये। शायद यही सोचकर कि इस बहाने यह भी दिल्ली घूम लेगी।

कवि सम्मेलन वाला हॉल श्रोताओ से खचाखच भरा पड़ा था। मच पर कवि आर कवयित्रिया विराजमान थीं। डॉ त्रिपाठी को आया देख सम्मान मे कुछ लोग अगवानी के लिए खड़ हा गये ता कुछ मच पर ही बठे रहे। कमला

जे को श्रोताआ की अगली पक्ति म मम्मान सहित त्रिठा दिया गया। मच पर की भी थे तो कवयित्रिया भी। वे वड़ी शान से कवियो की पक्तियो म वठी अपी-अपनी रोचक कविताए सुना रही थी। साथ ही साथिया और श्रोताआ की वाहन्वाही भी लूट रही थी।

अचानक कमला को न जाने क्या हुआ उसे अपने आप पर त्रड़ी हिकारव-सी महसूस हुई। साथ ही अपने दादा-दादी पर गुस्मा भी आया। दादा-दादी के हिसाव से नारियो को शिक्षित होना आवश्यक नही था जत्रकि उसके ताा-पिता आर चाचा हमेशा कहा करते थे कि विटिया पढ ले जत्र तक मा-वापके घर है। पर फारन दादा-दादी उनकी वात काट दिया करते और कहते अरे हमेक्रानसा विटिया को जज त्रनाना हे _ या मास्टरनी ? त्रस इसान को इतना आा चाहिये कि वह अक्षर मिला मिलाकर रामायण पढ़ ले आई गई चिट्ठिया ये पढ़ ले आर कागज पर दस्तखत कर ले। देखना हम अपनी लाड़ो रानी को सी जगह व्याहेगे जहा वह वटी राज करगी। आर सचमुच मे ही दादाजी ने त्रसा मन मे सोच रखा था वसी ही जगह तलाश करके उसकी शादी कर दी थी सचमुच मे वह वैठी राज कर रही थी वह भी ऐसे-वसे नही हाथ पर हाथ रर कर। कुवारेपन मे दादा-दादी के द्वारा पक्ष लिया जाना आर वह भी त्रात-वातपर उसे वहुत मीठा लगता था। तव वह मन मे यह वहम पालकर त्रठ गई थी क इन दोनो के समान हितपी उसका इस मसार म कोइ दूसरा नहीं ह।

` ससुराल जाने पर जत्र उसे अपने पति के परिवार म शिक्षा का बोल-वाला नजर आया त उसे खुद पर शर्मिदगी महसूस होने लगी। लेकिन अत्र पछताने से क्या होताह जव चिड़िया चुग गई हो खेत। उधर दादा-दादी थे तो इधर, भयक्र पर्दा प्रा। इस तरह से समय खिसकता रहा _ खिसकता रहा। वह तेरह से वास वी हो गई। इस दारान उसे अपने पति के सच्चे अथा म प्रिया वनने की कोशिश सालती रही।

एक दिनउसका छोटा सा देवर अखवार पढ़ रहा था- उसने वताया कि फूलनदेवी पढन चाह रही ह। कमला के लिए एक नई सोच का विषय तयार हो गया था। वा मन ही मन हिसाव लगाने लगी कि जिस आरत ने इतने वर्षो वदूक थामे रखी वह अव कम से कम इस समय 40-45 से क्या कम होगी। जब वह पढ़ सकती है तो मै क्यो नहीं। म भी पढूगी_ इमान जव जागे तभी सवेरा समझ लो चाहिए

_ मै पढूगी आगे वढूगी आर ताकि पति की इतनी मरस कविताआ का

रसपान कर सकू... उन कविताओ पर खुलकर सच्चे हृदय से बातचीत कर सकू वे मुझे भी अपनी कविताए सुनाए औरो की भाति। मुझसे भी सलाह मशविरा ले।

पति का अवकाश था नही इसलिये अपने छोटे से देवर को 'पट की' बात समझा कर पढ़ाने को तैयार कर लिया। इस प्रकार वह धीरे-धीरे अपनी लगन और मेहनत से प्रतिदिन आगे बढ़ती गई। खाना बनाते समय नहाते धोते समय वह कठिन शब्दो के अर्थ हमेशा रटा करती। धीरे-धीरे सभी के सहयोग से उसने फॉर्म भरकर कई परीक्षाए भी पास कर ली।

समय ने करवट बदली। अब कमला खुद भी पढ़ लिख गई। साथ ही एक योग्य अध्यापिका बन प्रौढ़ा को शिक्षित करने लगी। वह अक्सर लोगो से कहा करती कि ससार में इतना ज्ञान भरा पड़ा है कि जिसका आनद बिना पढ़े उठाया नहीं जा सकता। लड़किया घर गृहस्थी भी सीखे तो साथ मे पढना लिखना भी। दोनो के सतुलन से ही जिंदगी सुचारू रूप से चल पाती है और दोनो ही जीवन के आवश्यक अग भी है।

उसका परिश्रम रंग लाया। इस सब प्रक्रिया से गुजरने मे यद्यपि समय बहुत लग गया फिर भी अब कमला बहुत खुश थी कि उसके मन से अज्ञानता की कालिमा दूर हो चुकी है। शक और वहमो का कोहरा छट चुका है। कुठा और तनावो के महासमुद्र मे डूबने से वह बच गई है और सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि अब वह सच्चे अर्थो मे अपने पति की प्रिया बन चुकी है।

■ ■ ■

रजाई चोर

जनवरी की कड़कड़ाती सर्दी के दिन थ। ढ़रा कपड़ पहन लेन के बाद भी सद हवाए शरीर को हिला देने के लिये आतुर हो रही था। ऐसा लग रहा था जसे चारा तरफ वर्फ ही वर्फ का साम्राज्य छा गया हो। ऐसे ठडे माहाल मे रात तो रात दिन म भी रजाई म ही दुबके रहने को जी चाहता है। धूप के कतरे-कतरे को निगल जाने को जीव आतुर हो उठता ह।

गातम अपने कमर म बठा गहरे साच म डूबा हुआ था कि वह आज स्कूल जाये या न जाय। पापा भी तो टूर पर गये ह। सरकारा गाड़ी वाला के कितने मजे है। तयार हुए उठकर चल दिये। न स्कूल जाने का झझट न होमवर्क करने की पीड़ा। जब मै वड़ा होऊगा तब पापा की तरह ही इजीनियर बनूगा और पूरी इडिया घूमूगा। पापा जब लाटते ह तो कितने मजेदार किस्से सुनाते रहते ह। सुन सुनकर कितना मजा आता ह।

तभी उसे याद आया कि आज तो घर की भी गाड़ी नही ह। मम्मी सुवह से ही किसी पशट को दखने गई हुई है। अभी तक नही लाटी। वह खुद से ही बोल उठा- चल बेटे गौतम आज तो तुझे पदल ही स्कूल जाना पड़ेगा। ऐसा तो रोज ही होता है- मम्मी-पापा अपने वैग उठाते है आर चल देते ह उससे टाटा करके। किसी को भी मेरी परवाह नहीं। अगर घर मे टॉमी न होता तो कसे मेरा मन लगता? तभी अचानक टॉमी उसके पास न जाने कहा से आ गया। उसने टॉमी को प्यार किया। फिर सोचने लगा म भी तो चला जाता हू, फिर बेचारा यह भी अकेला रह जाता है। श्यामू के मम्मी-पापा भाई-बहन सभी घर पर ही रहते हे फिर मेरे ही यहा ऐसा क्यो होता ह...?

तभी उसका ध्यान दीवार घड़ी की ओर चला गया। वाप रे, साढ़े ना वज गये। वह बोल पड़ा- भाग बेटे गौतम यहा अकेले पड़े सड़ते रहने से तो अच्छा है स्कूल में रहकर दिन काट ले । वह तयार तो था ही जूते मौजे जल्दी-जल्दी पैरों म पहिन वस्ता पीठ में लाद महाराजिन (खाना वनाने वाली) से टिफिन ले गेट की ओर भाग छूटा। गौतम को भागते देख टॉमी ने भी उसका पीछा किया। टॉमी को सग लगा देख गौतम ने वगीचे का फाटक झट से वद कर दिया ताकि वह बाहर न निकल सके। टॉमी ने भाक पर मानो उससे कुछ कहा तो वह उसे पुचकार कर उससे टाटा करके आगे वढ़ गया।

स्कूल से लाटते समय गोविंद भी उसके साथ हो लिया। दोना ही वात करते हुए आगे वढ रहे थे कि अचानक सडक पर ज्यूस का एक खाली डिब्बा पड़ा दिखाई दे गया। दोना ही उस डिब्ब का 'किक' करते हुए सड़क की पटरी पटरी पर चलते रहे। इस खेल मे उन्ह वहुत आनद आ रहा था। अचानक *डिब्वा उछला आर आखो स अदृश्य हो गया। दोनो ने इधर-उधर तलाश करना* शुरू किया। तभी एक छोटा सा अनजान वच्चा जो गातम गोविन्द की ही उम्र के वरावर का था न जाने कहा से डिब्वा ढूढ लाया आर गातम क परो के पास रख दूर जा खड़ा हुआ।

गोतम गोविंद फिर जुट गये उसी डिब्वे के साथ खेलने मे। वह लड़का डिब्बा ढढ-ढूढकर ला-ला देता ओर ये खेलते रहे। अव खेल पहले से ज्यादा तेज गति से चलने लगा। डिब्वा अव की वार उछला तो सडक के बीचो-वाच जा गिरा तभी वहा से गुजरते टक के पहिये के नीचे आकर चपटा हो मोटा कागज सा वन गया। अव खेल खत्म हो चुका था इसलिए गातम का ध्यान उस वालक पर चला गया जो मात्र चिथडे जसा लेकिन साफ धुली हुई कमीज पहने वहा खडा था। उसे देखते ही गातम बोला 'क्या नाम हे तेरा? उसने सकुचाते हुए कहा- 'राधे।' इतना-सा कहकर वह उन दोना सूटेड बूटेड लडको के सामने से भाग खडा हुआ। गातम घर आया तो उसकी मम्मी हॉस्पिटल से आ चुकी थी आर सोफे पर लटी मग्जीन पढन म व्यस्त थी।

गातम को आया देख उसकी मम्मी लेटी-लटी ही वाल उठीं-वेटा ड्रस उतार कर, हाथ मुह धोकर, पहले नाश्ता कर लो टेविल पर रखा ह। गातम ने एक आज्ञाकारी बालक की भाति वे सभी काम कर लिए जो डाक्टरनी साहब को पसद थे। फिर वह टॉमी को साथ ले वगीचे मे गेद खेलने चला गया। गातम को देख टॉमी जजीर सहित भागा चला आया।

इस तरह से पाच सात दिन आर बीत गये। आज सभी की छुट्टी थी। गातम वगीचे म माली काका के पीछे-पाछे घूम रहा था। तभी उसके घर के दरवाजे पर कुछ आवाजे एक साथ उभरी। उसने देखा कि एक फट हाल आरत लाठी का सहारा लिये रो-रोकर कुछ खाने को माग रही ह। गौतम उसके पास गया तो देखा उस आरत के पीठ के पीछे राधे भी खडा ह जिसकी गोद मे कोई दो या ढाई साल की वच्ची भी है। आरत ठडी वासी रोटी की माग कर रही थी। उसके स्वर म गिड़गिड़ाहट थी।

गातम की नजर ज्यो ही राधे पर पडी तो वोला- राध तुम भीख माग रहे हो क्या भिखारी हो? राधे ने शरमाते हुए कहा-- नहा हम लाग भिखारा नहीं ह ... हमारे वापू (वाप) नही है... इसलिए ...। वह मर गया...। मा क सिर पर

एक बार चोट लग गई थी इसलिए अधी हो गई। मीरा को बहुत जारो की भख लगी थी न इसलिए__।

टॉमी का नाकर टॉमी के लिए दूध रोटी लिये हुए खड़ा था आर जोर जोर से टॉमी को आवाज लगा रहा था। गातम ने लपक क" उसक हाथ स चारों रोटिया आर दूध का कटोरा ले लिया। फिर उसको हुक्म दत हुए ालाा- विरजू तुम अदर जाओ म टॉमी को खिला दूगा। विरजू के अदर जाते ही गातम ने दूध से भरा कटोरा और चारो मोटी रोटिया राधे को सोप दी और कहा जल्दी से आगे उढ जाओ राधे वरना मेरी मम्मी न देख लिया तो दोना की खर नहीं_ सुनते ही राधे की मा रोटिया टटोलती हुई आगे वढ़ गई।

दूसरे-दिन गातम स्कूल जाने को तयार हुआ। डाक्टरनी ने लच बॉक्स गातम के हाथ मे देते हुए कहा- "गातम इटरवेल मे जब खाना खाने बठो तो पहले रगड़-रगड कर हाथ अवश्य धा लेना आर हा लो ये जेत्र खर्ची_। देखो मुझे आज शाम को घर लाटने मे देर हो जायेगी। इच्छा हो तो रीना वटी के घर चले जाना। चलो जल्दी से कार मे वठो म तुम्ह स्कूल छोड़कर हॉस्पिटल चली जाऊगी।" गोतम सारा सामान ले उदास हो कार की अगली सीट पर वठ गया। उसकी उदासी का कारण यह था कि वह पढ़कर लाटेगा तो उसे आज भी अकेले ही घर पर रहना पडेगा।_ मन ही मन सोच रहा था कि मम्मी को वह सत्र वताने की क्या जरूरत थी सारा मूड़ खराव कर के रख दिया।

रास्ते मे आदत के मुताविक वह कार की खिड़की से बाहर का दृश्य देखता रहा और मम्मी की वाता का उत्तर हा या हू म देकर चुप रह जाता। रास्ते मे उसे राधे माथे पर सूखी लकड़ियों का छोटा-सा गट्ठर लादे नजर आया। राधे को देखकर उसे अच्छा लगा लकिन वह उससे चाहते हुए भी बोल न पाया क्योकि मम्मी का अमीराना रुआत्र आर राधे की गरीवी। इन दोनो के बीच गोतम फसकर रह गया। थोड़ी देर म स्कूल का गेट आ गया वह कार से उतर पड़ा। गाड़ा दूसरे माड़ से टर्न लकर धुआ छोड़ती हुई आगे वढ़ गई।

इटरवेल की घटी त्रज उठी थी। गातम ने अच्छी तरह से नल पर जाकर हाथ धोये आर टिफिन खोलकर पहला कार उठाया ही था कि उस राधे की याद आ गई। पता नही उसे आज कुछ खाने को मिला कि नही? उसने तोड़ा हुआ कार वापस डिब्बे मे रख दिया ओर वापस अपनी क्लास मे जाकर बैठ गया।

छुट्टी होते ही वह पैदल ही घर की ओर चल दिया। मन ही मन डर रहा था कि कहीं गोविन्द न मिल जाय। लम्बे-लम्बे डग भरते हुए वह उसी पेड़ के पास जा पहुचा जहा उसे पहले दिन राधे अपनी मा आर मीरा के साथ वठा हुआ मिला था। गोतम को आया देख राधे वहिन के साथ खेलना छोड़

उठ खड़ा हुआ। जसे वह जानना चाह रहा हो कि क्या बात ह ... आज इसका क्या खो गया ?

गातम ने राधे क पास पहुच जस्ते म से लच बॉक्स निकाल कर राधे क हाथ मे दे दिया आर बोला ला यह तुम लोगो के लिए लाया ह। राध न वह डिब्बा अपनी मा के हाथा मे साप दिया। राधे की मा ने आलू के पराठे का आधा भाग करके मीरा को पकड़ा दिया। खाने की वस्तु दखत हा मारा की आखा म खुशी की चमक फल गई।

गातम पास पड़े हुए एक बड़े पत्थर की धूल झाड़कर वहीं बठ गया। फिर राधे से बोला 'आ मेरे पास बठ तुझसे कुछ बाते करनी ह। राधे वहीं पत्थर के नजदीक जमीन पर उकडू बठ गया। गौतम ने कहा— "यह तो मै जान चुका हू कि तुम लोग भिखारी नही हो पर कोई काम क्या नही कर लेते ?" राधे चुप। अच्छा चल यही बता दे कि तेरा बापू क्या काम करता था। उस मरे कितने दिन हो गये ?

बापू के बारे मे बताने से पहले ही राधे की बड़ी बड़ी आख आसुओ स डबडबा उठीं। आसुओ को पलको मे ही थाम राधे बोल उठा— "तब मैं छोटा था कक्षा पाच मे पढ़ता था। मेरे बापू कारीगर थे। इमारत बनाते थे। उन दिनो किसी सेठ की बहुमजिली इमारत बन रही थी। सकड़ो मजदूर वहा काम पर लगे हुए थे। उस दिन छत पर पट्टिया डाली जा रही थीं। पट्टिया चढाने के लिए बहुत ऊची मचान बनाई गई थी। शायद कोई पट्टी फिट नहीं उठ पाई थी अचानक वह खिसक गई आर बापू छत से सबसे नीचे की मजिल म जा गिरे, फिर कभी नहीं उठे... । दूसरे लोग ही बापू की लाश लेकर घर आये थे।

उस दिन के बाद हमारे ऊपर मुसीबतो का पहाड़ टूटता रहा। दुनिया भर के मकान बनाने वाले बापू ने कभी अपना घर बनान की कोई बात नहीं सोची। तब हम सभी किराये के मकान म रहते थे। छह महीने का किराया हम पर चढ़ गया था । मेरी मा ने सेठ के पास जाकर बापू का हिसाब मागा जो उस समय मिल जाता तो हम दर-दर की ठाकरे नही खाते ... सेठ ने मा को बहुत बुरा-भला कहकर फटकार दिया--बोला- बाबूलाल पेसे छोड़ता कहा था मेरे पास ? एक-एक पाई ले जाता था अपनी मेहनत का। ना विश्वास हो तो इन मजदूरो से पूछ लो ... मुशी से जाकर भी पूछ लो। "पता नहीं क्या सच था क्या झूठ। हम लोग तो चुप्पी साधकर बैठ गये। ... कोई हमारा साथ देने के लिए सेठ के खिलाफ नही बोल पाया।'

किराया अधिक चढ़ जाने पर एक दिन मकान मालिक ने हमारा सामान

सड़क पर उठाकर फिकवा दिया। तब हमारा कोई ठिकाना तो था नहीं। मा तीन तीन पेटो की भूख मिटाने के लिए गृहस्थी का एक-एक सामान धीरे-धीरे कबाड़ियो को बेचती रही आर हम सब खाते रहे। जस तसे आने पाने दामा म चीज बिक-बिक आज हमारी यह दुदशा हो गइ कि अब तन ढकने को कपड तक नहीं बचे इतना कहकर राधे चुप हो गया — ।

गौतम ने लम्बी सास लेकर पूछा राधे क्या तुम्हारे चाचा ताऊ नाना-नानी कोई भी नहीं ? राधे ने कहा - नाना-नानी नहीं ह एक मामा था जो बरसो पहले किसी के बहकावे म आकर कहीं भाग गया फिर उसकी कोई खबर नही मिली। हा ताऊ जरूर है पर ताई ने तीन तीन प्राणियो की जिम्मेदारी लेने से साफ इकार कर दिया। हम लोग उनके घर गये भी थे पर उन्हाने लड़-झगड़कर मा पर इल्जाम लगाकर हमको घर से निकाल दिया।

— सब जगह से आशा छूट जाने पर हम दो वषा से इसी पेड़ की छाया मे रहते आ रहे हे। फिर मा ने एक घर म नाकरी कर ली। बर्तन झाड़ू पाछा कपड़े धोने का काम था वहा। खाना भी मिल जाता था। पर इतना ज्यादा काम करने से मा बार-बार बीमार पड़ जाती थी। उसे दो दो चार-चार दिनो तक बुखार नहीं उतरता। तब उसकी मालकिन ने तग आकर दूसरी नौकरानी रख ली। पता नहीं फिर क्या हुआ उसी बुखार मे मा को दिखाई देना बद हो गया। मेरी उम्र इतनी छोटी है कि मुझे नाकर रखने म सब हिचकिचात ह एक न तो यहा तक कहा कि— "जा भाग जा हमे पुलिस से पकड़वायेगा क्या ? पहले अपने शरीर पर मास की परते चढ़ाकर, बड़ा तो हो ले।' फिर करना नाकरी— ।

गौतम ने देखा राधे की मा सिकुड़ी-सिमटी बठी है। मीरा मिट्टी का ढेर बनाकर उसमे ककड़ की छत सी बना रही ह, पत्तो को चुनकर बगीचे की बाउण्ड्री भी। गौतम को मीरा के अबोध बचपन पर हसी भी आई आर उनकी स्थिति पर तरस भी। बचपन नहीं जानता अच्छे-अच्छे रग बिरगे चाबी वाले खिलौने उसे तो बस खेलने से मतलब, चाहे जो कुछ भी उस समय उपलब्ध हो जाये। वह उसी से मन बहलाकर सतुष्ट हो लेता है।

गौतम ने देखा राधे अपने घुटनों के बीच सिर घुसाये बेबसी की मार से सुबक रहा है। गौतम की भी आखे भर आई। तभी उस अधी मा का कलेजा पिघल उठा—अरे राधे— तू रो क्यों रहा हे बेटा— तुझे क्या हो गया — आ मेरे पास — यह सब देख गौतम का दिल इतना भारी हो गया कि वह उस जगह और अधिक देर नही ठहर सका। बस राधे की पीठ पर अपना हाथ रख टिफिन उठाकर वहा से चुपचाप चल दिया।

पूरे घर म तहलका सा मचा हुआ था कि गौतम की रजाई आखिर कहा चली गई? डाक्टरनी ऊच स्वर म सबका डाट पिला रही थी। घर क सारे नौकर लाइन स खड़ थ और उनक सबस आखिरी म टॉमी महाराज भी। डाक्टरनी सुना सुनाकर कह रही थी कि आज ता छोटी सी चाज गई है कल से घर म ताले टूटने लग जाएग। आखिर तुम लाग क्या आखा पर पट्टी बाधकर रहते हो? तभी गौतम के पापा जीप स उतरकर घर क अदर दाखिल हुए उन्ह देखते ही सारे नौकर तितर बितर हा गये।

इजीनियर साहब ने अपनी पत्नी से पूछा— 'क्या बात है आज ता सबका लाइन हाजिर करके डाटा जा रहा ह। मैं भी तो सुनू आखिर ऐसा क्या हो गया। गातम की मम्मी ने भुनभुनाते हुए कहा कि गौतम की रजाई खो गई है उसे धूप मे सूखने डाली थी पता नही कौन निगल गया__। गौतम के पापा ने रजाई के खो जाने की बात को गम्भीरता स नहीं लिया व बोले - अर यार, खा गई तो खो जाने दो। नाहक ही परेशान होती हो दूसरी निकाल दो। वैसे भी तो तुम एक दो साल के बाद उठाकर किसी न किसी नाकर को द ही देती हो अभी चली गई तो कानसा गजब हा गया। भई जिसे जरूरत हागी वही तो उठाकर ले गया हागा, छोड़ो भी। हा मेमसाहब चाय वाय कुछ पिलाआगी कि नहा बड़ी जारो की ठड लग रही ह__ हाथ पैर जमकर कुल्फी हुए जा रहे है।

रात म गातम के लिए स्टोर से दूसरी रजाई आ चुकी थी। उस रात गातम बहुत दर तक पढ़ता रहा। जब मम्मी पापा के बेडरूम की लाइट बुझ गई ता उसने बस्ता समेटकर मेज पर रख दिया। आज उसे नींद नहीं आ रही थी। पता नहीं कानसी उलझन उसके दिमाग को परशान कर रही थी। वह उठा कमरे की खिड़की खोली जो बगीच की तरफ थी। खिड़की के खुलते ही तीखी सर्द हवा के झाका से कमरा भर उठा।

गातम का ध्यान उस जगलनुमा मदान पर चला गया जहा बरगद के नीचे इतनी ठड मे राधे मीरा आर उसकी मा रातें गुजारा करते ह। उसका जी चाहा कि आज ही अभी उठकर जाऊ आर उन सबको अपने घर ले आऊ। कितना बड़ा बरामदा आर गराज क पास वाली कोठरी यू भी तो खाली पड़ी है। लेकिन मम्मी__ मम्मी का ध्यान आते ही उसके पसीने छूट गये। लेकिन मन नहीं माना__ फिर उन तीनो के बारे मे सोचने लगा- चुपचाप लाकर उन लोगो को यहा सो जाने को कह दू आर सवेर उजाला होने से पहले ही व उठकर चले जायें__ पर टॉमी महाराज__ भाक भाक कर घर आसमान म उठा लेग। टॉमी को क्या पता कि ठड मे कैसी हालत हो जाती ह खुद ता गद्दी बिछे मुड्ढे पर सोता बैठता ह।

गौतम बेटे__ अभी सोये नही__ क्या बात है__ और यह खिड़की क्यो खोल रखी है, बीमार पड़ना है क्या ? मा की पीछे से आवाज सुन गौतम पलटा फट से खिड़की बद की और रजाई मे दुबक गया। डाक्टरनी उसके कमरे की बिजली बद कर अपने बैडरूम म चली गई कुछ बड़बड़ाती हुई।

इजीनियर साहब न अपनी पत्नी से पूछा- क्या बात ह दूर्वा आजकल बहुत गुमसुम सी रहती हो ? नहीं ऐसी कोई विशेष बात नहीं है। डाक्टरनी ने कहा। कुछ तो है। इजीनियर ने उसे वापस कुरेदा। वे बोली- गौतम आजकल बहुत गुमसुम सा रहने लगा ह कुछ पूछने पर जवाब नही देता। स्कूल से भी देर से लौटता है। डाक्टरनी ने धीरे से कहा। इस पर इजीनियर ने पूछा- खाना वाना अच्छी तरह से खाता है कि नही ?

खाना तो खा लेता ह पहले तो टिफिन में कुछ न कुछ बचाकर ले आता था पर अब साफ टिफिन लेकर आता ह कहता ह एक दो पराठे मम्मी ज्यादा ही रखा करो। मेरा एक दोस्त ह वह भी मेरे साथ ही खाना खाता है। इजीनियर ने कहा तब तो ठीक है चिन्ता की कोइ बात नही। बढ़ता बच्चा ह कुछ सोच विचार मे पड़ा रहता होगा। फिर उसके कोई भाई बहिन भी तो नहीं जिसक साथ वह नटखटपन करे। हा ऐसा भी हो सकता ह कि किसी दोस्त के साथ इन दिनो उसका मनमुटाव चल रहा हो। चलो सो जाओ बच्चो की समस्याए बच्च अपने आप हल कर लिया करते है। सुबह उठकर उसस बात करूगा।

रजाई को खोये हुए दस पन्द्रह दिन बीत चुक थे। उसकी बात अब आई गई हो चुकी थी। गौतम ने मम्मी-पापा का मूड़ दखकर किसी हम उम्र को अपने लिए नौकर रखने की बात कही थी पर मा बाप दोना ने ही उसकी बात मजाक में उड़ा दी। इस पर गौतम को मन ही मन बहुत गुस्सा आया था। अगर वह चिड़चिड़ा उठेगा तो मम्मी उसको इग्लिश मे और भी डाटेगी। अपने स्टाफ की नर्सो और कम्पाउडरो को भी वे इग्लिश मे ही झाड़ पिलाती है। वही आदत घर पर भी इस्तेमाल करती हे विशेषकर गौतम पर। घर पर जितनी देर रहती ह या तो मेडिकल साइस की किताब पढ़ती रहती या स्वेटर बुनती रहती। उन्ह तरह-तरह के डिजाइनो और रगों के स्वेटर बुनने का शौक जो ह।

आज डाक्टरनी साहिबा की नाइट ड्यूटी थी। इसलिए उन्होने अपनी बिखरी हुई आलमारियो को ढग से सहेजना चाहा। स्वेटरो को सहेज कर तह लगाकर रखा तो मोटी ऊन वाला स्वेटर नदारद पाया। उन्होने जहा जहा सभावना हो सकती वहा वहा उसे ढूढा। पर जब नही मिला तो लक्ष्मनिया (लक्ष्मी) को आवाज दी। लक्ष्मनिया अपना नाम सुनते ही आटा सने हाथो को

लिए दौड़ी चली आई जी मालकिन? "मालकिन की बच्ची मेरा नीले रंग का स्वेटर कहां गया? डाक्टरनी ने चीखकर रो जाने वाली आवाज से उसकी ओर देखा।

मालकिन आपके कमरे में तो कोई भी नहीं जाता। ढूढिये इधर ही कहां रखा होगा आपने। कहीं ड्राइक्लीन के लिए तो नहीं भिजवा दिया आपने? ड्राइक्लीन का नाम सुनते ही उन्हें रामू की याद आ गई जिससे उन्होंने परसों ही तो कहा था कि इसे आते जाते कभी दे आना लेकिन रामू तो एक महीने की छुट्टी लेकर अपने गांव गया है। खैर आने पर पूछूंगी। जा तू अपना काम सम्हाल। लक्षमनिया आश्वस्त हो रसोई में जाकर काम में जुट गई।

गौतम स्कूल से लौटकर आया तो मां घर पर नहीं थी। लक्षमनिया अपने घर जा चुकी थी। उसका खाना ढका हुआ मेज पर रखा था। उसने स्कूल के कपड़े उतारे घर के कपड़े पहिने और घर का स्वेटर निकालने के लिए आलमारी खोली तो उसमें एक-एक भाग स्वेटरों से भरा मिला। उसने उनमें से एक स्वेटर निकाल कर पहिन लिया। सभी स्वेटर एक से एक बढ़िया डिजाइनों और रंगों के थे। वह बहुत देर तक उदास आलमारी के समीप खड़ा कुछ सोचता रहा न जाने कौन कौन से विचार उसके छोटे से दिमाग को झकझोरते रहे।

टॉमी के भौंकने से उसे मालूम पड़ा कि कोई आया है। खिड़की से झांककर देखा तो उसकी मम्मी कार से उतर रही थीं और टॉमी खड़ा कू कू करके अपनी पूंछ तेजी से हिला रहा था जैसे भौंकने के लिए माफी मांग रहा हो। जल्दी से आलमारी बंद करके वह डायनिंग टेबुल की कुर्सी पर जा बैठा उसने अपने पेट की जेब में नाश्ता भर लिया ताकि मम्मी समझ ले कि उसने खा लिया है।

"कहीं जा रहे हो क्या बेटे?" डाक्टरनी ने गौतम को टोकते हुए पूछा इस पर गौतम ने कहा मम्मी मैं नकुल के घर पढ़ने जा रहा हूं। आप चिन्ता मत करना मैं जल्दी ही लौट आऊंगा। मम्मी ने कहा - ठीक है - रात हो रही है सर्दी बढ़ रही है जल्दी लौटकर आना। हां मम्मी इस ठंड का ही तो इंतजाम करने जा रहा हूं। डाक्टरनी की समझ में न आ पाया कि गौतम क्या कह कर भाग गया।

ठंड थी कि घटने का नाम ही न ले रही थी। गौतम ने अपने टीचरों से यह भी सुना था कि इस बार जैसी ठंड कभी नहीं देखी गौतम कार में बैठा था मां गाड़ी चला रही थी। तभी एक जगह भीड़ इकट्ठी देख वे अपनी कार बंद करके नीचे उतरकर देखने चली गई कि शायद कोई एक्सीडेंट हो गया हो।

गोतम भी धड़कते दिल स मा के पीछे-पीछे जाकर भीड़ मे शामिल हो गया। पास जाकर देखा तो पाया कि तीन लाश वहा अकडी हुई पडी थी। भीड के हर सदस्य के मुह से बस एक हा बात निकल रही थी बेचारे ठड बर्दाश्त नही कर पाये।__ इस खुली हवा म आखिर कितने दिन आर जीते? डाक्टरनी ने दखा कि उसी के घर की रजाई मे तीनो लिपटे पड़े ह आर उनके शरीरा पर उमक ही हाथा से बुने स्वेटर ह। उसने प्रश्न भरी निगाह से गोतम की ओर देखा। जो इतनी देर से हिच हिच कर कर भय के मारे नि शब्द रो रहा था। तभी भीड के एक व्यक्ति ने कहा भला हो डाक्टरनी साहिजा आपके बेटे का, इसने इन गरीबो को ये गर्म कपड़े देकर कुछ दिना तो जिंदा रख लिया वर्ना ये तो कभी के राम नाम सत्य हो जाते।

डाक्टरनी ने गौतम की ओर घूर कर देखा जो डरा सहमा सा आगामी आशकाओ से घिरा खड़ा था। पता नही अब उस पर क्या बीतेगी ? परन्तु यह क्या__ डाक्टरनी ने बहुत प्यार से गातम का स्पर्श उसकी आखो के आसू पोछ दिये आर प्यार से बोली- बेटा मुझस कहा होता म इन लोगो की जा कुछ बन पडती मदद कर देती। धीरे-धीरे भीड छट गई आर गातम भी कार म जा बैठा। डाक्टरनी ने कार स्टार्ट करते करते कहा बेटा चोरी करना तो बहुत बड़ा पाप ह अपराध ह। लेकिन तुमने किसी भले काम के लिए चोरी की ह__ गरीबो की मदद की इसलिए क्षमा किय देती हूँ। लकिन आइदा मुझसे कुछ भी न छुपाना।' गातम आशका के विपरीत अपनी मा के वचन सुनकर हक्का बक्का सा हो डाक्टरनी का मुंह देखता रह गया__ यह क्या मार की बजाय सहानुभूति__ ?____ उपदेश की बजाय आश्वासन!

गातम को स्कूल के गेट पर छोड़कर डाक्टरनी हॉस्पिटल जाने वाले रास्ते की ओर मुड़ गई। तीन माह तक साथ निभान वाली राधे की मुस्कुराती आखो ने गातम को प्रति क्षण व्यस्त रखा था। उसके मन का एकाकीपन न जाने कहा गायब हो गया था। लेकिन अब__। गोतम उस दिन न स्कूल जा सका न घर ही__ उसी वृक्ष के पास पत्थर पर बेठा वह उन तीना आकृतिया के बारे मे साचता रहा जो अचानक एक रात्रि म न जाने कहा ओझल हो गई थी।

■ ■ ■

बूंद ही सही

सविता की सास स्त्री शिक्षा की तरह वहू शिक्षा की भी घार विरोधी थी। यह बात सविता को तब पता चली जब व अपनी ननद मजू के साथ साथ मट्रिक का फॉर्म भरने की इच्छा को अपनी सास के सामने व्यक्त कर वठी। सुनते ही सास जी का पारा सातवे आसमान मे जा पहुचा। वे बुरी तरह से भभकी आर भड़की। जसे उन्हे किसी बिच्छू ने डक मार दिया हो। वे तपाक से वोल पडी - "चली है मेरी वटिया की होड़ करन। अरे पहले अपन खानदान को तो देख ले, तेरे वाप क घर पर भी किसी ने मट्रिक किया ह तव __ मेरी ब्रेटिया की नकल करना। अरे तू सात जनम भी ले लेगी न तव भी मेरी वेटियों के 'गू' की भी होड़ नहीं कर पाओगी। इस तरह स वे ना जाने कितनी देर भुनभुनाती चिढ़ती आर वड़वड़ाती रही।"

सविता ने कभी स्वप्न म भी न साचा था कि माताजी पढ़ाई लिखाई के इतनी खिलाफ ह। मन ही मन वह पछता रही थी कि उसने वकार ही वर्र क छत्ते को छेड़ दिया। _वठे विठाय उसकी सात पीढ़ियो को कोस डाला गया। उसे अपने अपमान पर रोना आ रहा था कि कसा है यह घर? आर यहा कसे निभेगी जिन्दगी ?

लेकिन उसके मन म पढ़ाई की लगन लग चुकी थी। उसके पतिदेव भी उन दिनो पढ़ ही रहे थे। इसलिये हाथ तग रहना स्वाभाविक था। फिर भी कैसे न कसे जुगाड़ कर कराक उसने चुपके से फॉर्म भर दिया फिर जितना सा भी समय मिल पाता वह पढाई का समर्पित कर देती। एक दिन सास जी ने पढ़ते हुए उसे रगे हाथा पकड लिया। वस फिर क्या था। तरह तरह से सबके द्वारा उस पर व्यवधान डालने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई ताकि उसके मन मस्तिष्क की एकाग्रता भग हो जाये।

कभी अकारण डाट फटकार कर बच्चो को उसके पास भेज दिया जाता तो कभी सिखा पढाकर। ता कभी कामो की पोटली सोप दी जाती तो कभी पेट दर्द का बहाना तो कभी सिरदर्द का बहाना बना कर सविता की सास इस तरह मे आराम फरमाती रहती। आर उसकी रसोई म क्वायद शुरू हो जाती। सास ननदो तक बात सीमित रहती तव भी चलता। यहा तो पति भी एक तो करेला

दूसरे नीम चढ़ा। ववकानी हरकते करने से वाज न आते। इसके अलावा पत्नी को पर की जूती समझने की ट्रेनिंग भी उन्हे कूट कूटकर दी गई थी। वह भी एक वहुत वड़ी परेशानी का कारण था।

ऐसे ही धीरे-धीरे समय खिसकता रहा। अध्ययन मे परेशानिया आती रहीं वैसे भी स्वयपाठी विद्यार्थी को पीड़ा एक हो तो लिखो या वताई जाए। वह वेटी तो थी नहीं वह वहू थी उस पर भी सवा गज का घूघट जव चहर पर पर्दा हो तो जीभ का भी पर्दा आवश्यक है। मर्दो से वोला थोड़े ही जाता था। ससुराल के सारे मर्द यदि ससुर की उम्र के वरावर है तो वे भी ससुर है। जेठ के उम्र के वरावर है तो वे भी जेठ। उसे ये वात लिखते लिखते एक वात और याद आ गई सविता के पति को एक वार टाइफाइड हो गया था। सविता के सास ससुर उन दिनों तीर्थ यात्रा पर गये हुए थे। अब ऐसी वीमारी मे पति के मित्र तो आया ही करते थे हाल चाल पूछने। एक दिन डाक्टर ने पर्ची लिख कर दी तो शर्माजी (पति का दोस्त) ने सविता से माग लिया कि लाइये भाभी जी मै लाये देता हू - और भी कुछ मगाना हो तो वह भी वता दे।

भोली सविता ने दवा के साथ साथ कुछ साग-सब्जी भी उनसे मगा ली। इसके लिये उसने एक तीतरी (कागज की चिट) मे सादा लिख दिया। शर्मा जी थला लेकर चले गये। उनका पीठ फेरना था कि वुखार मे लथपथ पति ने अपनी पत्नी के सिर पर पास रखी हुई जितनी भी चीज थी वही से उठा उठाकर फेककर मारनी शुरू कर दी। गाल वो तेरा भाई लगता था क्या जो चवड़-चवड़ वोले जा रही थी ? हराम___। कुलच्छनी___ आदि। ऐसा तेरे वाप के घर होता होगा यहाँ नहीं चलेगे ऐसे लच्छन।"

उस दिन का दिन- उसके वाद से सविता ने कभी अपने पति के मित्रा का आमना-सामना नहीं किया। उसकी समझ मे अन्त तक नहीं आया कि इसमे भला उसने क्या गुनाह कर डाला? उसका पति इतना कुठित क्या है? क्या उसको पर्दे मे रखना चाहता है? हर छोटी सी छोटी वाता मे उसने प्रारम्भ से जो जो रौद्र रूप दिखाये। उससे उसका मनोवल टूट कर एक खौफग्रस्त जसी हालत की शिकार हो गई। खर यह वात तो प्रसगवश लिख डाली गई। हा तो जव मुह पर पर्दा सारे मर्दो से पर्दा उस पर पढ़ाई छोड़े आठ वर्षो का गैप उस पर परिवारजनो का सख्त विरोध ऐसी प्रतिकूल परिस्थितिया देखकर उसने हताश होकर कॉपी किताबे उठाकर आलमारी मे वद कर दी। उसे आज भी याद है जव वह यह निर्णय ले रही थी तो कितना झार झार रोई थी और आखे पोछकर फिर काम मे लग गई थी।

मजू के वच्चो को सम्हालने, नहलाने सुलाने खिलाने पिलाने रखने आदि

म माता जी दिनभर व्यस्त रहती। (रसोई की पूरी जिम्मेदारी और उस पर इतना बड़ा कुनबा सविता पर ही सब आ पड़ा था) आखिर उनकी बेटी मजू कोई छोटी मोटी परीक्षा तो दे नही रही थी आखिरकार मैट्रिक कर रही थी मैट्रिक। ऊपर से मजू के भविष्य का सवाल था। पढ़ लिख जायेगी बेचारी तो कमा खायगी। हो जायगी आर्थिक रूप स स्वतत्र।

परीक्षा का एक माह भी शेष नही बचा था। चण्डीगढ से सविता के मामा जी दूर पर भोपाल आय थे। सर्किट हाउस म रुके थे। मामी न बहुत सारा सामान सविता क लिये बाध कर दिया था उस ही देने क लिय आय थ। बातो ही बातो म सविता न उन्हे बताया कि उसने भी फॉर्म भरा है लेकिन पढ़ने का समय ही नहीं मिल पाता इसलिए सारी किताब कापिया तह कर रख दी। सयोग स उस दिन सविता की सास किसी गमी म गई हुई थी। जल्दी आने का तो प्रश्न ही नही उठता था। अपनी सारी विवशताए दिल खोल कर उसन कह डाली अपने मामाजी स।

मामा जी जो इतनी दर स चुप थे__ बोले - सविता ऐसे काम नहा चलेगा बेटी तू तो इटलीजट ह ड्रॉप मत कर__। ला तरी किताब ल आ मै उसम ही कुछ कम्पल्सरी पॉइन्ट्स बता दता हू उन्ह ही तू अच्छी तरह स तैयार कर ले। सविता किताब उठाकर ले आई। मामाजी ने इम्पोरटट म निशान लगा दिय और कहा बस इन्ह ही तैयार कर ले। उन्ह वापसी क लिय गाड़ी (ट्रेन) पकड़नी थी इसलिय मामाजा पिताजा का इतजार करक चल गय। जात जात कह गय। सुनो बेटी परीक्षा जरूर दना चाहे तू फ्ल ही हो जाये। अखबार रोज पढ़ती रहना। उसे पढने को तो कोई मना नहीं करेगा न। और कहकर मामा जी हस दिये।

सविता के मामाजी की मुक्त हसी और आत्मीयता भर शब्दा ने आश्वासन दिया। निराशा क अधकार म उस आशा के कुछ जुगनू चमकते से नजर आये। फटाफट सारी किताब समेटी और उठाकर अपने कमर म रख आई। कमरे म जाते ही उसे अपने मम्मी पापा की याद आ गई- काश उन्होने मुझे कुछ दिनो के लिए बुला लिया होता तो कैसा रहता। दस दिन हो सही एक चित्त से कुछ तो पढ़ लेती। यहा तो जब भी पढने लिखने बैठो तो याद आती रहती ह- गृहस्थी की व्यस्तताए अब ये करना ह अब वो करना है। ऊपर से सासू जी का आतक और।

परीक्षाये शुरू हो गई। धडकते दिल से उसने पेपर भी दिये लकिन मजू के मुकाबले मे उसकी पढ़ाई का सौवा हिस्सा भी नही हुआ था। लेकिन मामा जी की बात का आत्मबल उसके साथ था फिर भी असतोष का काटा अपना सिर उठा-उठाकर उसे जब तब आहत करता ही रहता कि उसके फेल हो जान

पर सारी दुनिया हसेगी, सासू जी और भी ताने देगी पहले ही कहती रहती ह कि तुम्हारे पीहर मे किसी ने पढ़ा हे जो तुम पढ़ोगी।

अन्तिम सप्ताह था। गर्मियो की सुबह काफी सुखदायी होती ह। सविता के कमरे की खिड़की के नीचे ही वरामदा था। इसलिए सुबह सुबह आन वाला की आहटे सर्वप्रथम उसे ही सुनाई दिया करती थी। दूधवाला आकर साइकिल खड़ी करता तो वह चौक कर फटाफट नीचे की मजिल म आ दूध ल लेती। तपेली ले वह वरामदे मे आई तो अखवार भी पडा था रिजल्ट भरा हुआ। उसने धडकते दिल से पन्ने खोले। कॉलम देखने शुरू किये तो उसकी आखा के आगे अधेरा छा गया। एक भी सख्या पकड़ मे न आ पाई सभी काले काले धब्बे से नजर आये जैसे हर लाइन पर स्याही फेल गई हो। डर के मारे उसका इतनी जोर से जी मिचलाया कि उसे उल्टी सी आ गई। वह अखवार वहीं मूढे म रख कर चल दी।

धीरे धीरे सभी जग चुके थे। सुनीता ने भरी तपेली चाय की स्टोव स नीचे उतारी और भयभीत सी गिलासो क्पा मे सबके हिसाव से चुपके चुपके चाय भरती रही, पकड़ाती रही।

सविता का देवर जो दूध का गिलास हाथ मे लिये खड़ा था वड़ी जोर जोर से अपनी बहिन को आवाजे लगा रहा था दीदी नीचे आओ देखो आज तुम्हारा रिजल्ट निक्ला ह। रिजल्ट का नाम सुनते ही अजू आर मजू जगकर नीच आ धमकी।

सभी एकत्र हो चुके थे। फर्स्ट क्लास वाले कालम से रोल नम्बर देखना शुरु किया गया तो सप्लीमेंटरी तक खोज जारी रही। सविता दबे पर वहा से खिसक ली। उसका पेट वुरी तरह से खाल गया था इसलिए डरकर लेट्रिन मे जा वठी। उसे लगा कि उसका ही रोल नम्बर अखवार मे तलाशा जा रहा है पर यह क्या कही से भी कोई हगामे या खुशी की आवाजे नही आई। एक मातमी चुप्पी साधे सब वठे थे। उसने मालूम किया तो पता चला कि दादी इतनी सहूलियते दिये जाने के वाद भा असफल हो गई आर सविता थर्ड डिवीजन आई है। सविता भाचक्की सी रह गई कि यह क्या हुआ उसकी समझ म नहीं आ रहा था कि वह अपनी सफलता प्रसन्न पर हो या घरवालो के साथ वठकर उनके मातमी चेहरो मे अपना चेहरा भी शामिल कर दे।

कमरे म जा वह अन्तर्दशीय ढूढने लगी। उसे अपने मामाजी को पत्र जो लिखना था कि वह सफलता का पूर्ण कलश तो नहीं प्राप्त कर सकी परतु प्यासी तड़पने की वजाय एक बूद ही मिल गई उसी मे उसे सतोष ह। आगे पढने के लिए उसका मार्ग प्रशस्त ह।

■ ■ ■

दुविधा का बोझ

इसी बीच ध्वस्त ढाचे को लेकर पूरे शहर म एक विचित्र सा सन्नाटा फल चुका था। अखबारा म रोज जलाये आर मारे जाने वाला की सूचियाँ पढ-पढ कर लोग दहशत के शिकार बने बठे थे। लेकिन जनम-मरण आर हारी बीमारा आदि, शहर का खून-खराबा या कर्फ्यू आदि नहीं देखतीं सुनतीं।

राजीव को इन दिनो पढ़ने-लिखने म बहुत परेशानी होने लगी थी। पढने बठता तो पुस्तका का लाइन फली हुई सी-स्याही फिरी-फिरा सी नजर आता। उसने आखा को अस्पताल जाकर कइ बार टस्ट कराने के बारे मे साचा भी था। इसी विचार को लेकर वह आज शहर के अस्पताल म पहुच ही गया।

आउटडोर से निकलते ही उसकी आख असलम से टकरा गई जो एक बेच पर कुछ डरा-सहमा सा बठा था। राजाव के बचपन का साथी था असलम। स्कूल से लकर कॉलेज तक का शिक्षा की कुछ मजिल दानो ने एक साथ ही तय की थी।

अचानक असलम के पिता रहीम चाचा क गुजर जाने पर इन्ह गाव वाला घर कई कारणो स छाडना पडा था। इनके नाना उस अवसर पर आकर अपने नवासों और दोनों बेटियो को लेकर इस शहर म चले आये थ। तब से लेकर एक लम्बे अरसे तक एक दूसरे को एक दूसरे की कोइ खबर नहीं मिली।

लेकिन आज अचानक एक दूसरे को देखकर उनके हृदया म दाडकर एक दूसरे के गले मिलने का इच्छा जागृत हो गई थी। पर ताज विध्वस की घटना से जो दो वगा मे तनाव फेला हुआ था उसकी हिचक न दोना के परा को आगे बढ़ने से ठिठका दिया था। मन म एक ही प्रश्न दोना ओर सर उठाए बठा था कि पता नहीं वह बोलेगा या नहीं__? अपन अपने मस्तिष्क म दोनो हा दुविधा को बोझ लिये एक दूसरे को निहार रहे थे।

तभी राजीव के मन मे एक शक पदा हुआ। शायद यह असलम नहीं ह। अगर असलम होता तो दाड़कर जरूर आता। इसी भ्रम का दूर करने के लिए वह धीरे-धारे चलता हुआ उसी बेच के पास तक आ पहुचा आर बोला माफ करना भाई क्या तुम्हारा नाम असलम ह?

"क्यो। मजाक करता है यार— कहते हुए असलम ने राजीव को अपने सीने से चिपटा लिया। दोनो ने एक दूसरे को इतनी जोर से कसकर जकडा जसे कि वे अव एक दूसरे से अलग होना ही नहा चाहते हा। दास्ती की तरलता सजग हो उठी— दोनो ओर के शब्दो मे स्नह का सलाव उमड पड़ा। दोनो की आखे वर्षो बाद मिलन की खुशी मे नम हो उठी।

"यहा केसे?' राजीव ने आखो की नमी को रुमाल से पोछते हुए असलम से कहा।

कुछ नही भाई, मेरे भाई को खून चाहिये था उसके गोली लग गई ह— म अपना खून तो दे चुका लेकिन डॉक्टर और माग कर रहे है— रास्ते से ही इसे उठा कर इसे यहा ले आया था वर्ना— । लगता ह भाई से हाथ धोना पड़ेगा— ऐसा कहकर वह फफक कर रो पड़ा।

— चल उठ तेर भाई को कुछ नही हागा। म दूगा उसे खून कहता हुआ राजीव असलम का हाथ थाम 'ब्लड वक की आर बढ़ गया। असलम अवाक सा राजीव की ओर देखता रह गया उन दोना के मनो से दुविधा का बोझ हट चुका था।